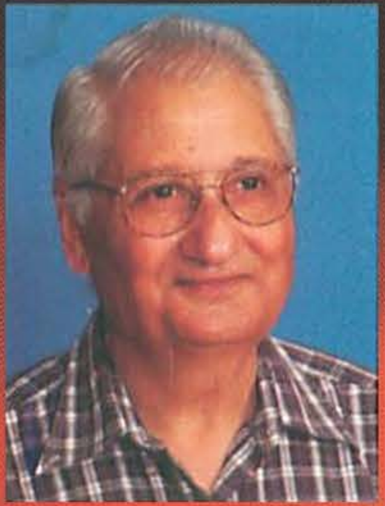

ये क़ैस न मोमिन है न सूफ़ी है, मगर देख
जो तू ने समझ रक्खा है, वैसा भी नहीं है

An imprint of professor toofaanii publishers

सह्रा सह्रा

राज कुमार क़ैस

सह्रा सह्रा

राज कुमार क़ैस

© राज कुमार क़ैस 2005-06

नाम पुस्तक	:	सहरा सहरा
लेखक	:	राज कुमार क़ैस
पता	:	**6695 एडमंटन एवेन्यू, सैन डीएगो, कैलेफ़ोरनिया 92122 यू.एस.ए.**

Sehraa Sehraa

By Raj Kumar Qais

Address: 6695 Edmonton Avenue
San Diego, California 92122
U.S.A.

Phone: (858) 638-1702

E-mail: rajkumarqais@hotmail.com

This reprint by professor toofaanii publishers

फ़हरिस्त

	बाग़बानिऐ-सहरा	वली आलम शाहीन	7
	कुछ अपने बारे में	राज कुमार क़ैस	9
	धन्यवाद ज्ञापन और समर्पण		11
1.	ग़ज़ल की प्रेरणा		13
2.	दुआ ने काम किया है, यक़ीं नहीं आता		15
3.	कोई उमीद न थी फिर भी पास आ ही गया		17
4.	नवाए-दिल ने करिश्मे दिखाए हैं क्या क्या		18
5.	कोई हमराज़ न निकला न शनासा निकला		20
6.	चोरी चुपके जी बहलाए एक ज़माना बीत गया		21
7.	सब लोग पूछते हैं, मोहब्बत में क्या मिला?		22
8.	न वो दिल-रुबा तकल्लुम, न वो दिल-नशीं इशारा		23
9.	मेरा यह हाल कि हूँ जान से जाने वाला		24
10.	काश कि हुस्न भी तनहा होता		26
11.	किसे सुनाएं कि है हर्फ़ ना-तमाम अपना		28
12.	बरसों की दोस्ती का सिला याद आ गया		29
13.	उनकी आँखों का इशारा तो वही है कि जो था		30
14.	कली उमीद की मुरझा गई तो क्या होगा?		31
15.	दिल किसी मह-जबीं पर फ़िदा हो गया		32
16.	इश्तियाक़े-ख़ुमो-सबू न गया		33
17.	तिरी आँख उठी तो मैं रुक गया, तिरे लब हिले तो मैं खो गया		34
18.	पहले तो मेरी जुर्अते-तदबीर देखना		35
19.	मेरी आँखों में समाया है तो बस एक ही शख़्स		36
20.	किस सलीक़े से शब-हिजराँ सजा लेते हैं हम		37
21.	घबरा गए हैं वुसअते-कौनो.मकाँ से हम		38
22.	हिसारे-ज़ात से निकलूं तो तुझ से बात करूं		40
23.	न तफ़क्कुर है न एहसास न तौफ़ीक़े-सुख़न		42
24.	अब वो पहले से माहो-साल नहीं		44
25.	न जुज़्वो-कुल का मुआमिला हूँ, न आफ़रीनिश का मुद्दआ हूँ		46
26.	जौरो-सितम के मारे हुओं की ज़बां हूँ मैं		47
27.	जब कभी तलख़िए-हालात से घबराता हूँ		48

28. ज़मीं पे सब्ज़ा-ओ-गुल आँख मल के देखते हैं 49
29. किस दर्जा दिल-आवेज़ थी, ऐ दोस्त, तिरी शान 50
30. गुलाव आँखें, शराव आँखें 52
31. उस शोख़ से ख़िताव करूँ तो ग़ज़ल कहूँ 53
32. वो जो नज़रें झुकाए हुए हैं 54
33. आए हो तो बैठो, न करो जाने की वातें 55
34. खुद अपना हाल कभी आप से कहा भी नहीं 56
35. क्या कहें, वो हमें किस वक़्त कहाँ मिलते हैं 57
36. इश्क़ में वे-हिजाव हो जाऐं 58
37. हमारे दिल में थी तो थी तिरी ही आरज़ू वरसों 60
38. ऐसा भी हुआ है रातों को जव उठ उठ कर हम रोए हैं 61
39. तेरी मानें तो पारसा हो जाऐं 62
40. जिस से ग़ज़ल मुराद है उसको वुलाओ तो 64
41. थाम लो दिल मिरा, सीने से लगा लो मुझको 65
42. दीदा-ओ-दिल को है इसरार, अभी रूक जाओ 66
43. संभले से इशारात, हों संभली सी नज़र हो 68
44. नज़र का दे के सहारा वचा लिया मुझ को 69
45. दिन भर तो महकता रहा फूलों की तरह तू 70
46. हटा लो ये दैरो-हरम, दोस्तो 71
47. तिरे हुस्न ने है वख़्शा ये मिज़ाजे-आशिक़ाना 72
48. गुज़रते जा रहे हैं माहो-साल आहिस्ता आहिस्ता 73
49. वात होंटों पे चली आई है 74
50. दिलो-नज़र में अगर रश्के.हूर है कोई 75
51. किसी को लूट गईं दिल-रूवाईयाँ[1] तेरी 76
52. पास आओ तो कोई वात वने 77
53. जफ़ा जो जी को जलाए तो उस को क्या कहिए 79
54. मुझ से रग़वत है तो फिर मुझसे छुपाता क्या है 81
55. तुम को सीने से लगा लूं गा, तुम आओ तो सही 82
56. न जाने, कव से चालें चल रही थी दिल.लगी तेरी 83
57. मेरे जज़्वात को सहलाओ कि कुछ रात कटे 84
58. देने लगे हैं लोरियाँ दीवारो-दर मुझे 85
59. अव तुझ से किसी वात का शिकवा भी नहीं है 87
60. ज़िन्दगी भर की मुदारात का सामां हो जाए 88
61. अव दिल भी अपने भेद हमीं से छुपाए है 89

62.	इज़हारे-तमन्ना न किया है न करेंगे	90
63.	तवा हर हाल में मज़मूं की रवानी मांगे	91
64.	वज़ाहिर फूलता फलता शजर है	93
65.	सितम-ईजाद को मानूसे-सोज़ो-साज़ क्या करते?	95
66.	किस ने ये जलवा-नुमाई की है?	96
67.	फिर किसी वुत से लौ लगाएंगे	97
68.	फिर मुझे वज़्म में ले आए हैं, देखे कोई	99
69.	सज़ा हो या जज़ा हो, कौन जाने	100
70.	फूलों ने, सितारों ने, शफ़क ने न तुझी ने	102
71.	तुझ से रूठे तो कई रोज़ न खुद से वोले	104
72.	सुनते हैं कि सहरा में फिर वादे-वहार आई	106
73.	ये क्या हुआ कि महकने लगी है तनहाई?	107
74.	वन वन के विगड़ती रही तक़दीर हमारी	108
75.	वो शव जो तेरे ख़्यालो-खुमार में गुज़री	109
76.	देख, तिरे दीवानों की अव जान पे क्या वन आई है?	111
77.	फ़िक्र की तौफ़ीक़ है ना ताक़ते.गुफ़्तार है	113
78.	एक मुद्दत से तुझे दिल में विठा रक्खा है	115
79.	दिल में अजव सा कैफ़, अजव सा सुरूर है	116
80.	मिरा कलाम जिसे आइना दिखाता है	117
81.	खुद को रोका वहुत फिर भी हम आ गए	119
82.	उनके अन्दाज़ दिल को सुहाने लगे	120
83.	आँखों में वस गए, मिरे दिल में समा गए	122
84.	ज़िन्दगी राहे-उलफ़त पे चलती रही	123
85.	मेरे लव पर तिरी वात आई	124
86.	कभी रूख़ से कभी रूख़सारों से	125
87.	झिझकते क्यों हो वताओ कि फैसला क्या है?	126
88.	उनको ज़ेवाई भी फवती है, खुद-आराई भी	127
89.	आज की रात फिर कहां होगी?	128
90.	क़त'आत	129

बाग़बानिऐ-सहूरा

डाक्टर राज कुमार क़ैस शे'र न भी कहते तो भी शायरी इन्हें मार रखती। नसीमे-सुब्ह लौंग के वाग़ों से ख़ुशबू उड़ा कर लाए या न लाए, क़ैस अपने अन्दर के रजनी-गन्धा की बहार में किसी उम्मे-रवाब के क़दमों की चाप सुन लेते हैं। शे'र-गोई इन की ज़रूरत नहीं, इन का मिज़ाज है।

क़ैस अपनी ज़ात के सहूराए-आज़म के सहूरा-नवर्द हैं। वो अपने लख़्ते-जिगर से रगे-हर-ख़ार को शाख़े-गुल की शक्ल देते हुए वाग़वानिऐ-सहूरा में मसरूफ़े-कार रहने का ढंग जानते हैं। क़ैस का जिस ख़ानवादे से तअल्लुक़ है वाग़वानिऐ-सहूरा से उसका रिश्ता मोहकम है। इन के दो भाई पुरूषोत्तम लाल ज़िया और प्रकाश नाथ परवेज़ उर्दू के मारूफ़ शायरों में थे। घर में अदवो-शे'र का चर्चा रहता था। उर्दू फ़ारसी की रवायात के ज़ेरे-असर शायरों और अदीवों के साथ उठना बैठना और तहज़ीवे-सुख़न की परवरिश करना पढ़े-लिक्खे घरानों का शो'आरे-ख़ास होता था। क़ैस उसी तहज़ीव के परवरदा और दिलदादा हैं।

क़ैस (डाक्टर राज कुमार पथरिया के नाम से और एक माहिरे-तवीयात की हैसियत से) साइन्स की दुनिया में एक अहम मक़ाम के मलिक हैं। ऐल्वर्ट आइन्सटाइन के नज़रियाए-इज़ाफ़त जैसे मुश्किल मौज़ू पर इनकी एक किताव वहुत अर्सा पहले छपी थी जिसे एक मशहूर वैनुल-अक़वामी नाशिर ने हाल ही में दोवारा इजरा किया है। इन के नामवर शागिर्दों और जानने मानने वालों की कमी नहीं। साइन्स और अदव का क्या रिश्ता है, यह मौज़ू एक अलग मज़मून का मुतक़ाज़ी है लेकिन एक ताइराना नज़र भी डालिए तो उमर ख़य्याम, शान्ति सरूप भटनागर, ए॰पी॰जे॰अव्दुल कलाम और एम॰जी॰वस्सन जी से ले कर राज कुमार क़ैस तक शाहराह के दोनों किनारों पर चिराग़ाँ ही चिराग़ाँ है। ''सहूरा सहूरा'' के औराक़ में एक साइन्सदान शायर के दिल की धड़कनों का वालिहाना-पन है।

क़ैस खुले दिल से एतिराफ़ करते हैं कि वह फ़िराक़ गोरखपुरी से वतौरे-ख़ास मुतासिर हुए हैं। फ़िराक़ ने वीसवीं सदी में उर्दू ग़ज़ल को एक नया मोड़ देकर नए इमकानात की निशान-देही की जिसके सवव उर्दू अदव की तारीख़ में उनकी शिनाख़्त वाज़ह और मुकम्मल है, लेकिन मैं ने क़ैस की ग़ज़लों का जिस हद तक मुताला किया है उसकी रौशनी में इन की शायरी मुझे दाग़ देहलवी, अख़्तर शीरानी, अव्दुल हमीद अदम और नरेश कुमार शाद के सिलसिले की तौसी'अ नज़र आती है। राज़ो-नियाज़ के मुआमलात, अश्वा-ओ-अदा की हिकायतें, वस्ले-महवूव की सरशारी, हिजरो-फ़िराक़ का दर्द और कहीं कहीं मजाज़ से हक़ीक़त की तरफ़ गुरेज़ .... क़ैस की शायरी में यह तमाम रंग

विखरे पड़े हैं। उर्दू ग़ज़ल के हवाले से यह एक जाना पहचाना मन्ज़र-नामा है। चंद मिसालों से इस वात की वज़ाहत में सहूलत रहेगीः

फिर मिरे सामने इक चाँद सा चहरा चमके
फिर मिरी आँख उसे देख के हैराँ हो जाए

चाँद चमकेगा रात भर, लेकिन
चाँदनी रात फिर कहाँ होगी

कभी मैकदे के दर पर, कभी तेरी रह-गुज़र में
मिरी रात कट गई है जहाँ मिल गया ठिकाना

रवय्ये पुराने, वहाने नए
खुला दोस्ती का भरम, दोस्तो

तुम चले जाओगे, हो जाएंगी सांसें वोझल
कौन झेलेगा ये आज़ार, अभी रूक जाओ

शाम हो जाएगी वे-हाल ग़मे-फ़ुरक़त में
रात पड़ जाएगी वीमार, अभी रूक जाओ

मैं एक अश्क था लेकिन किसी की पलकों ने
जहान भर की नज़र से छुपा लिया मुझ को

किसी ख़ुशी ने मुझे आज तक न पहचाना
तुम्हारे ग़म ने गले से लगा लिया मुझ को

न पूछिए कि ख़ज़ाने लुटाए हैं क्या क्या
ये देखिए कि मिरे पास अव वचा क्या है

ताकना झांकना हर किसी को
क़ैस में थी यही इक वुराई

मौजूद है मगर वही आलम गुरेज़ का
मस्तूर है मगर वही शाने-ज़ुहूर है

क़ैस ने ख़ासी तादाद में क़त'आत भी लिक्खे हैं। अपनी ग़ज़ल में उन्हों ने तश्कील और असलुब में किसी क़िस्म के इनहिराफ़ को रवा नहीं रक्खा। लेकिन क़त'आत में उन्होंने एक क़ाविले-ज़िक्र तजरवा किया है। मसलन चार मिसरों वाले छे क़त'आत में हर एक के तीसरे मिसरे में एक ही मिसरे ('तू पराई सही मगर फिर भी') की तकरार है। वरीं-विना, इन क़त'आत में एक मौज़ूआती हम-आ-हंगी और रिश्ता क़ायम हो गया है।

क़ैस की शायरी जज़्वात की सरशारी का मुरक़्क़ा है जिसके हुदूदे-अरवा में रह कर ही उस के असरारो-रूमूज़ खुलते हैं।

वली आलम शाहीन

औटवा, कैनेडा

14 नवम्बर 2005

कुछ अपने बारे में

वो दिन भी थे कि ज़माने में धूम थी अपनी
ये दिन भी हैं कि कोई हम को कोस्ता भी नहीं

मैं, 1933 में, पंजाब के मशहूरो-मारुफ़ शहर अमृतसर के गिर्दो-नवाह में पैदा हुआ और अपनी इब्तिदाई तालीम वहीं हासिल की। मेरा ज़हन तो रोज़े-अव्वल ही से इल्मे-रियाज़ी की जानिब माइल था मगर घर का माहौल उर्दू अदब में इस क़दर रचा हुआ था कि उसके असरात से बच निकलना आसान नहीं था। मेरे बड़े भाई पुरुषोत्तम लाल ज़िया लाहौर के एक कालेज में उर्दू फ़ारसी के प्रोफ़ेसर थे और उनकी बदौलत उर्दू के कई आलिम फ़ाज़िल हमारे घर आया जाया करते थे। ज़िया साहब शायर भी थे और नक़्क़ाद भी, इस लिए उनकी और उनके दोस्तों की बातें सुनते सुनते और घर में मौजूद किताबों और रिसालों की वर्क़-गरदानी करते करते मुझे बचपन ही में उर्दू ज़बानो-अदब से अच्छी ख़ासी आगही हो गई थी, गो कि शे'र-गोई अभी कोसों दूर थी। अगर कभी कभार शे'र कहने का ख़याल आता भी तो ज़हन में ज़िया साहब का यह शे'र घूमने लगताः

अस्ल में वो शिद्दते-दर्दे-दरूँ थी,. ऐ ज़िया
लोग कहने को जिसे ज़ोरे-क़लम कहते रहे

अलबत्ता, उस अवाइल-उमरी में न तो मुझे दर्दे-दरूं की शिद्दत महसूस हुई और न ही मेरे क़लम ने ज़ोर पकड़ा।

ज़िया साहब के बाद मेरे एक और भाई प्रकाश नाथ परवेज़ भी उर्दू शायरी के गर्वीदा हो कर रह गए थे और शे'र-गोई में ख़ासा कमाल रखते थे। उनका तफ़क्कुर और उनका तर्ज़े-बयान दोनों ही लाइक़े-सद-तहसीन थे। फ़रमाते हैं कि

हो अगर इजाज़त तो साथ हो चलें हम भी
ज़िन्दगी के सहरा में जाओगे कहां तनहा?

अब ऐसे माहौल में रहते हुए यह एक फ़ितरी बात थी कि मैं भी किसी हद तक ऐसी ही राह इख़्तियार करता, मगर ऐसा न हो सका क्योंकि मेरे मुस्तक़बिल को मद्दे-नज़र रखते हुए मेरे बड़े-बूढ़ो ने यही मुनासिब समझा कि मैं शे'र-शायरी से बाज़ रहूँ और साइन्स की तरफ़ रुजू करूँ।

बड़ों के हुक्म की तामिल करते हुए मैं साइन्स की राह पर चल दिया और चन्द बरसों की मेहनत के बाद, 1957 में, दिल्ली यूनिवरसिटी से इल्मे-तबीयात में पी॰ एच॰ डी॰ की डिग्री हासिल की और वहीं पहले लेक्चरर हुआ और बाद में रीडर हो गया। अपने चुनीदा मज़मून की तालीमो-तदरीस और तहक़ीक़ो-तजस्सुस के जो तक़ाज़े मेरे सर आ पड़े थे उन्हें तो पूरा करना ही था मगर उनके साथ साथ जो लगन मुझे उर्दू अदब के साथ बचपन ही से हो गई थी उसे निभाना भी मेरे लिए लाज़िम था। इस लिए

1954-64 के दौरान जव कि मैं दिल्ली यूनिवरसिटी से वावस्ता था तो मैं वाक़ायदा उर्दू ज़बानो-अदव का मुताला करता रहा और उर्दू के मुशायरे जहाँ कहीं भी होते उनमें शरीक होता रहा। बाद में जव मैं कैनेडा चला आया तो वह मुशायरे तो मेरी ज़द में न रहे, अलवत्ता उर्दू अदव का मुताला जारी-ओ-सारी रहा। कभी कभार शे'र-गोई की ख़लिश होती तो एक आध ग़ज़ल कह लेता वरना ज़्यादा तर अपने काम ही से काम रहा। वहर-हाल, 1976-79 के मुख़्तसर से अरसे में, मुझ से कोई 15-20 ग़ज़लें हुई जिनमें से सात आठ दिल्ली के मुमताज़ माहनामा 'वीसवीं सदी' में छपीं। इनमें से वेशतर ग़ज़लें अरवावे-इल्मो-फ़न को कुवूले-ख़ातिर हुईं ओर मेरी हौसला-अफ़ज़ाई का वाईस वनीं। मेरी पहली ग़ज़ल का एक शे'र थाः

कभी तमन्ना जहान भर की, कभी हर इक शै से वे-नियाज़ी
कभी तवज्जो की जुस्तजू है, कभी तग़ाफ़ुल को ढूंढता हूँ

उस मख़्तसर से ज़माने के वाद मुद्दतें गुज़र गईं मगर मैं अपने काम काज में जुटा रहा और शे'रो-शायरी की तरफ़ मज़ीद तवज्जो न दे पाया। अलवत्ता जव यूनिवरसिटी ऑफ वाटरलू, कैनेडा की प्रोफ़ेसरशिप से रिटायर होने का वक़्त आ पहुंचा तो सोचा कि ख़ैर से अव तो अच्छी ख़ासी फ़ुरसत होने को है तो फिर क्यों न गेसूए-ग़ज़ल के साथ जी खोल कर खेला जाए; इस तरह वक़्त भी ख़ुश-तवई से कट जाएगा और लगे हाथों दर्दे-दरूं को भी आहो-ज़ारी का मौक़ा मिल सकेगा। नतीजा यह हुआ कि, 1993 में, मैं ने अज़-सरे-नौ तवा-आज़माई शुरू की और देखते देखते यह तवा-आज़माई मेरी ज़िन्दगी का हासिलो-हुसूल वन गई, यहाँ तक कि आज मेरी शायरी का पहला मजमूआ व-उनवान 'सहरा सहरा' आपके हाथ में है और आपकी गिरां-क़द्र राये का मुन्तज़िर है।

उर्दू शायरी, और ख़ास कर उर्दू ग़ज़ल, कोई महदूद ज़रीयए-वयान तो है नहीं वल्कि यूँ कहिए कि इस में वे-पनाह वुस'अतें हैं ओर वे-इन्तिहा तजरवों के इमकानात हैं। गोया शायर की तवा जिस भी तर्ज़े-फ़िक्र की हामिल हो और जिस भी अन्दाज़े-वयान की शाइक़ हो उसे अपना सकती है। मैं चूँकि फ़िराक़ गोरखपुरी के तर्ज़े-तफ़क्कुर और दाग़ देहल्वी के तर्ज़े-वयान से वतौरे-ख़ास मुतास्सिर हुआ हूँ इस लिए मेरा रूजू ज़ियादातर रूमानी शायरी की जानिव रहा है, जैसा कि मेरे इस मक़्ते से वाज़ह हैः

ख़ूने-जिगर से वनती नहीं क़ैस की ग़ज़ल
थोड़ा सा इस में रंगे-हिना भी मिलाओ तो

मैंने नज़्में कम कहीं हैं और ग़ज़ले ज़्यादा। हां, कभी कभार क़त'आत भी हो गए हैं और मजवूरन वो भी रूमानी अन्दाज़ के हैं; उन क़त'आत में से कुछ इस मजमूए में भी शामिल हैं। अव मेरे इन मारूज़ात की अदवी हैसियत क्या है यह तो आप क़ार'ईन ही समझ सकते हैं।

नियाज़-मन्द

राज कुमार क़ैस

सैन डीएगो, कैलेफ़ोरनिया

धन्यवाद ज्ञापन और समर्पण

सच पूछीए तो इस किताब की इशायत मेरे बस की बात नहीं थी, अलबत्ता कुछ दोस्तों ने मेरी इस क़दर हौसला अफ़ज़ाई की और मुझे इस क़दर तरग़ीब दी कि इस किताब को छपना ही पड़ा। इस ज़िम्न में सब से पहले तो मैं अपने अज़ीज उमंग वाली और अज़ीज़ा सना सय्यद का ममनून हूँ कि उन्होंने इस किताब की इशायत के लिए मुझे आए दिन उक्साया और इस क़दर उक्साया कि बिल-आख़िर मैं ने यही मुनासिब समझा कि किसी सूरत यह कारे-ख़ैर कर ही डालूं। अब मसला यह था कि मैं अपने कलाम को बग़रज़े-इशायत कमप्यूटर पर चढ़ाऊँ और वो भी उर्दू और हिन्दी दोनों में। इस काम को सर-अंजाम देने में अज़ीज़ा अनमोल पेश पेश रहीं। उन्होंने मेरे कलाम को उर्दू का जामा पहनाया और अज़ीज़ शुएब तनवीर ने उसे ऐडिट किया। कलाम को हिन्दी में ढालने का काम जनाब पी॰ के॰ स्वामी ने अपने सर लिया और एम॰ आर॰ पबलीकेशनज़ की वसातत से इसे बख़ूबी सर-अंजाम दिया। इलावा-अज़ीं उन्होंने इस किताब की तरतीबो-तशकील के सभी मराहल में मेरी रहनुमाई की और इसे पायाए-तकमील तक पहुंचाने में नुमायां हिस्सा लिया। मैं इन सभी दोस्तों के एहसानात का मक़रूज़ हूँ और तहे-दिल से इनका शुक्रिया अदा करता हूँ।

यहां मुझे यह बताते हुए बेहद ख़ुशी हो रही है कि जनाब वली आलम शाहीन सहिब, जो उर्दू अदब में एक मुसल्लिमा मक़ाम रखते हैं और कई किताबों के मुसन्निफ़ हैं, मेरी इस किताब पर अपने अदबी तास्सुरात रक़म करने पर बख़ुशी अमादा हुए और "सहूरा सहूरा" को आपने पेश-लफ़्ज़ "बाग़बानिए-सहूरा" से नवाज़ा। एक शायर के लिए इस से बड़ा एज़ाज़ और क्या हो सकता है कि आप जैसी मुमताज़ हस्ती उस के कलाम पर अपनी नाक़िदाना राए का इज़हार करे। मैं शाहीन साहब की इस नवाज़िश के लिए अपने दिल की गहराईयों से ममनून हूँ।

इस काम के सिलसिले में मुझे एक महीने के लिए दिल्ली रूकना पड़ा और मैं ने हस्बे-मा'मूल अपने मोहतरम भाई संतोश कुमार साहब और उनकी बेगम पुष्प साहेबा के यहां क़याम किया। उन्होंने मुझे अपनी बे-पनाह ख़ातिर-तवाज़ो से नवाज़ा और अपने मुफ़ीद मश्वरों से भी सरफ़राज़ किया, जिसके लिए मैं उनका बेहद शुक्रगुज़ार हूँ। आख़िर में, मुझे ख़ुद अपनी बेगम राजकुमारी साहेबा का शुक्रिया अदा करना है जिन्होंने हमा-वक़्त मेरी शायराना काविशों में दिलचस्पी ली और उन्हें सराहा भी। अब जब कि मेरी बरसों की मेहनत एक किताब की शक्ल में रू-नुमा हो रही है मैं उनके सब्रो-तहम्मुल की दाद देता हुआ इस किताब को, मन्दरजा-ज़ैल शे'र के हवाले से, उन्हीं के नाम मनसूब करता हूँः

तू सब से जुदा, सब से अलग, सब से अनोखा
लगता है मुझे 'मीर' के शे'रों की तरह तू!

राज कुमार क़ैस

ग़ज़ल की प्रेरणा

दीदा-ओ-दिल[1] का तक़ाज़ा[2] है, ग़ज़ल हो जाए
कोई आया है, ग़ज़ल हो जाए !

गो कि आया है बड़ी देर के बाद
गो कि इस अर्सए-बे-पायाँ[3] में
चश्मे-पुर-आब[4] छलकती ही रही
दिले-बेताब[5] तड़पता ही रहा
फ़िक्रो-एहसास[6] तरसते ही रहे
एक साअत[7] के लिए

ऐसी साअत कि कोई आए मसीहा[8] बन कर
और मेरी रूह की गिरहें खोले
कोई आए कि रगे-जाँ[9] में नई लहर चले
और महक उट्ठे तख़य्युल[10] का दिमाग़
कोई आए कि मिरे दिल के सियह-ख़ाने[11] में
आस के दीप जलें
और घटा टोप अंधेरा छट जाए
कोई आए कि मिरे घर पे हो जन्नत का गुमां
कोई आए जो मुझे जीने पर मजबूर करे

आज शायद वही साअत
कि मिरे कुफ़्र का ईमान रही है बरसों
बन के महमान चली आई है
और इस अंजुमने-ख़लवत[12] में
मेरा हर तारे-नफ़स[13] झूम उठा है फिर से
और मिरे कान में कहता है कि अब
अहदे-माज़ी[14] का फ़साना छोड़ो
हाल की बात करो

यह जो साअत है, इसे पास बिठालो अपने
इस की कुरबत को ग़नीमत जानो
इस की हर साँस को इक उम्र का हासिल[15] समझो
इस के एज़ाज़[16] में कुछ और करो या ना करो
एक छोटी सी ग़ज़ल
एक प्यारी सी ग़ज़ल कह डालो !

❖❖❖❖

---

1. आँखें और मन 2. चाहना 3. दीर्घ-काल 4. भीगी आँखें 5. व्याकुल मन 6. सोच और भावना 7. घड़ी 8. प्राण दाता 9. जीवन नाड़ी 10. सोच-विचार 11. अंधेरा 12. सूनापन 13. सांसों के तार 14. भूतकाल 15. जीवन भर का पुरस्कार 16. सम्मान

2

दुआ ने काम किया है, यक़ीं नहीं आता
वो मेरे पास खड़ा है, यक़ीं नहीं आता

मैं जिस मक़ाम पे आ कर रूका हूँ शाम ढले
वहीं पे वो भी रूका है, यक़ीं नहीं आता

वो जिस की एक झलक को तरस गई थी हयात[1]
वो आज जलवा-नुमा[2] है, यक़ीं नहीं आता

वो जिस की आँख में दोनों जहां दिखाई पड़ें
वो मुझको देख रहा है, यक़ीं नहीं आता

जिसे सनम कभी समझा, कभी ख़ुदा जाना
वो ऐसा होश-रूबा[3] है, यक़ीं नहीं आता

जो सोज़ बन के समाया था मेरे शेरों में
वो साज़ बन के उठा है, यक़ीं नहीं आता

ज़मीं से ता-ब-फ़लक[4] गूंजने लगी है फ़ज़ा[5]
कुछ ऐसा राग छिड़ा है, यक़ीं नहीं आता

शिगुफ़्ता[6] चेहरा और उस पर तपां तपां आरिज़[7]
कोई अनार छुटा है, यक़ीं नहीं आता

ज़हे नसीब कि लौ दे उठी है तारीकी[8]
सुकूत[9] बोल पड़ा है, यक़ीं नहीं आता

हरीमे-नाज़[10] को देखो कि आज पहली बार
दरे-नियाज़[11] खुला है, यक़ीं नहीं आता

यह क़ैस पिछले दिनों चुप सी लग गई थी जिसे
फिर आज नग़मा-सरा[12] है, यक़ीं नहीं आता

❖❖❖❖

1. जीवन 2. प्रदर्शित 3. होश उड़ाने वाला 4. धरती से आकाश तक 5. वातावरण 6. खिला हुआ 7. तपते गाल 8. अंधेरा 9. ख़ामोशी 10. गौरव का स्थान 11. दर्शन द्वार 12. गीत-वद्ध

3

कोई उमीद न थी फिर भी पास आ ही गया
अगरचे झूठा था वादा मगर निभा ही गया

वह इलतिफ़ात[1] पे आया पर एहतियात के साथ
नज़र मिलाई मगर हाले दिल छुपा ही गया

दिले-तबाह को ज़ख़्मों से माला-माल किया
ख़िज़ां[2] का दौर था लेकिन वह गुल खिला ही गया

मिरे क़रीब से गुज़रा ख़याल की सूरत
सुकूते-नाज़[3] मगर कुछ न कुछ सुना ही गया

नज़र की काट कुछ ऐसी कि जान ले ही गई
बदन का लोच कुछ ऐसा कि दिल हिला ही गया

फिर आज एक तबस्सुम[4] पे होश खो बैठा
फिर आज इश्क़ को देखा, फ़रेब खा ही गया

मिरा सुकून[5] उसे नागवार[6] था इतना
मिरे मज़ार[7] पे आया, मुझे जगा ही गया

कभी घटा, कभी बिजली, कभी शफ़क़[8] बन कर
ज़मीं का शख़्स था पर आसमां पे छा ही गया

हो ज़िक्र उसका तो पढ़ते हैं लोग शेर मिरे
मिरा कलाम[9] ज़माने के काम आ ही गया

यह क़ैस जैसा भी है, इस क़दर बुरा तो नहीं
तुम्हारी बज़्म[10] में आया, ग़ज़ल सुना ही गया!

❖❖❖❖

---

1. कृपा 2. पतझड़ 3. मौन गीत 4. मुस्कान 5. चैन 6. असहनीय 7. समाधी 8. आकाश की लालिमा 9. कथन 10. महफ़िल

4

नवाए-दिल[1] ने करिश्मे दिखाए हैं क्या क्या
मिरी अज़ां[2] ने नमाज़ी जगाए हैं क्या क्या

जमाले-यार[3], तिरी आबो-ताब[4] क्या कहिए?
नज़र नज़र के क़दम डगमगाए हैं क्या क्या

आदाए-नाज़[5] को अन्दाज़े-दिलबरी[6] समझे
फ़रेब एहले-मोहब्बत[7] ने खाए हैं क्या क्या

ज़मीं ज़मीं न रही और फ़लक[8] फ़लक न रहा
मक़ामो-वक़्त[9] भी गर्दिश में आए हैं क्या क्या

ख़िज़ां[10] के जौरो-सितम[11] की तो कोई बात नहीं
मगर बहार ने भी गुल खिलाए हैं क्या क्या

किसे बताऊँ कि तेरा ख़्याल आते ही
हिजाब[12] मेरे तसव्वुर[13] को आए हैं क्या क्या

वो तेरी शोख़ निगाही, वो तेरी ख़न्दा-लबी[14]
दिले-ग़रीब पे चरके लगाए हैं क्या क्या

कभी खुलूसो-मोहब्बत[15], कभी गुरेज़ो-फ़रार[16]
बना बना के मुक़द्दर मिटाए हैं क्या क्या

कभी तो देख कि मेरी तबाह हाली पर
हयातो-मौत[17] ने आँसू बहाए हैं क्या क्या

है आज ख़ूने-तमन्ना[18] तो कल उमीद की मौत
दिले-हज़ीं[19] ने जनाज़े उठाए हैं क्या क्या

निगाहे-कैस, तिरी दस्तरस[20] को मान गए
कहां कहां से मज़ामीं[21] चुराए हैं क्या क्या!

❖❖❖❖

---

1. हृदय-गीत 2. बांग 3. प्रेमिका का सौंदर्य 4. चमक दमक 5. नाज़ नख़रे 6. प्रेम रीति 7. प्रेमी जन 8. आसमान 9. स्थान और समय 10. पतझड़ 11. अत्याचार 12. शर्म, लज्जा 13. सोच 14. हंसी 15. सौजन्य और प्यार 16. कतराना 17. जीवन और मृत्यु 18. आशाओं का ख़ून 19. ग़मगीन दिल 20. पहुंच 21. विषय, प्रसंग

5

कोई हमराज़[1] न निकला न शनासा[2] निकला
मैं भरी बज़्म[3] में आ कर भी अकेला निकला

वही तपता हुआ माहौल, वही गरदोगुबार
अब के ए दोस्त तिरा शहर भी सहरा[4] निकला

तुझ से भी दूर, ज़माने के तक़ाज़ो से भी दूर
तेरा दीवाना, ज़रा देख, कहाँ जा निकला?

मुद्दतों बाद कहीं जाए-अमां[5] पाई थी
मैं जहां पहुँचा तिरा इश्क़ वहीं आ निकला

आज कुछ और ही अन्दाज़ से तू याद आया
दिल में तूफ़ान उठा, आँख से दरिया निकला

आसमानों में भी इक हूक उठेगी जिस से
मेरे सीने से वह नाला[6] अभी निकला, निकला!

थी जहां शमा' वहां ख़ाक है परवाने की
क्या भला इश्क़ जताने का नतीजा निकला?

हाथ में जाम भी था, सामने महबूब भी था
जब खुली आँख तो यह ख़्वाब भी झूठा निकला

उम्र भर जिस की खुदाई मिरा ईमान रही
ग़ौर से देखा तो इक ख़ाक का पुतला निकला

क़ैस से पहले भी इस खेल के माहिर थे कई
कोई ग़ालिब, कोई मोमिन, कोई इन्शा निकला

❖❖❖❖

1. भेद जानने वाला 2. वाक़िफ 3. महफ़िल 4. बयाबान 5. सलामती का स्थान 6. चीख़

6

चोरी चुपके जी बहलाए एक ज़माना बीत गया
उसको अपने पास बिठाए एक ज़माना बीत गया

हिज्र[1] की रातों की तारीकी[2] अब तो मिरी हम-जोली है
आशाओं के दीप जलाए एक ज़माना बीत गया

राज़े-मशीयत[3] कैसे जानें?, भेद जहां के क्या समझें?
उस काफ़िर से आँख मिलाए एक ज़माना बीत गया

वो कैसा है? कैसी फबन है? कैसी अदा है? मत पूछो
उस कूचे में आए जाए एक ज़माना बीत गया

उस का इक इक अंग था मेरा, वह भी एक ज़माना था
अब तो उसको हाथ लगाए एक ज़माना बीत गया

बृन्दाबन की बातें छोड़ो, सहराओं का ज़िक्र करो
अब तो हम को रास रचाए एक ज़माना बीत गया

मेरे ज़ख़्मी कंधों से इमदाद न मांगो, रहम करो
इन पर अपनी लाश उठाए एक ज़माना बीत गया

क़ैस की बातें सुनते जाओ, इन में मानी मत ढूंडों
इस पागल को होश गंवाए एक ज़माना बीत गया

❖❖❖❖

---

1. विरह, जुदाई 2. अंधेरा 3. प्रभु इच्छा

7

सब लोग पूछते हैं, मोहब्बत में क्या मिला?
मैं क्या कहूँ कि यार मिला या ख़ुदा मिला?

रातों की नींद उड़ गई, दिन का सुकूं[1] गया
कुछ ऐसे बांकपन से वह काफ़िर-अदा[2] मिला

कल तक सजी हुई थी जहाँ दिल की कायनात[3]
वां आज एक टूटा हुआ आइना[4] मिला

इक शौके-वस्ल[5] था कि रहा महवे-जुस्तजू[6]
इक दर्दे-हिज्र[7] था कि मुझे बार-हा[8] मिला

फूलों की अंजुमन[9] से कि तारों की बज़्म[10] से
क्या जाने, किस मक़ाम[11] से उसका पता मिला

देखा उसे तो रूह पर मस्ती सी छा गई
महसूस यूँ हुआ कि कोई मैकदा[12] मिला

मेरी दुआ यही है कि उस बुत की ख़ैर हो
जिसके तुफ़ैल[13] से मुझे मेरा ख़ुदा मिला

देखा जो उस ने क़ैस की रीशे-दराज़[14] को
बोला ख़ुदा का शुक्र है इक पारसा[15] मिला!

❖❖❖❖

---

1. चैन 2. माशूक़ 3. दुनिया 4. शीशा 5. मिलन की लगन 6. किसी की तलाश में मस्त 7. विरह का दुख 8. बार बार, 9. महफ़िल 10. महफ़िल 11. स्थान 12. शराब ख़ाना 13. जिस की बदौलत 14. लम्बी दाढ़ी 15. धर्मात्मा

8

न वो दिल-रुबा तकल्लुम[1], न वो दिल-नशीं इशारा[2]
कभी कुछ सुनें किसी की, कभी कुछ कहें खुदारा[3]

शबे-हिज्र[4] क्या बताएं कि जो हाल था हमारा
कभी ज़िन्दगी को रोए, कभी मौत को पुकारा

तिरी बे-तवज्जोही[5] ने वह जला जला के मारा
तिरे इन्तेज़ार का भी ना रहा किसी को यारा[6]

तिरे हुस्न का करिश्मा, मिरे शौक़ को उभारा
मिरे इश्क़ की करामत, तिरे रूप को निखारा

तिरी बेरूखी मुसलसल[7], मिरा इज़तिराब[8] पैहम[9]
तुझे हर जफ़ा मुबारक, मुझे हर सितम गवारा

मिरी ख़ामुशी ने उस से कई बार बात छेड़ी
"वह नज़र भी क्या नज़र है जो समझ न ले इशारा"

वही आँख जामे-शीरीं[10], वही ज़हर का पियाला
कभी ढा गई क़यामत, कभी दे गई सहारा

राहे-इश्क़[11] में है हाइल[12] यह नदी पहाड़ जैसी
मैं इधर का हूँ किनारा, वो उधर का है किनारा

यह ग़ज़ल बड़ी कठिन थी, मियाँ क़ैस फिर भी तू ने
जो लिया था बोझ सर पर, दिलो-जान से उतारा

❖❖❖❖

1. बात करने का मन-मोही ढंग 2. वो इशारा जो दिल में जगह ले ले 3.भगवान के लिए 4. विरह की रात 5. ध्यान ना देना 6. ताब, मजाल, ताक़त 7. लगातार 8. बेचैनी 9. हर वक़्त की 10. मीठी शराब का जाम 11. प्रेम डगर 12. रूकावट, बाधा

9

मेरा यह हाल कि हूँ जान से जाने वाला
फिर भी यह वहम कि वो आता है आने वाला

दिल के होते हुए हंगामे[1] ही हंगामे थे
अब इधर काई नहीं शोर मचाने वाला

कब से फिरते हैं यहां कासए-उम्मीद[2] लिए
कोई अब तक न मिला आँख मिलाने वाला

राह कोई भी हो हर मोड़ पे हम बैठे हैं
देखें जाता है किधर रूठ के जाने वाला

बज़्म-अग़यार[3] पे छाया है तबस्सुम[4] उसका
कितना खुश-खुल्क़[5] है अपनों को रूलाने वाला

मुझ गिरफ़्तार-अज़ल[6] के लिए इतनी ज़हमत[7]?
कितना मासूम है यह जाल बिछाने वाला

दिल के मातम का मज़ा और ज़रा बढ़ जाता
कोई आ जाता अगर सोग मनाने वाला

ज़ब्ह[8] करता है, तसल्ली भी दिए जाता है
''वही अन्दाज़ है ज़ालिम का ज़माने वाला''

दश्ते-वहशत[9] में न आंधी न बगूला[10] कोई
टूट कर बैठ गया ख़ाक उड़ाने वाला

ज़ाइक़ा[11] मय का बहुत तल्ख़ हुआ जाता है
काश आ जाए कोई ज़हर पिलाने वाला

मौत प्यारी है तो मर जा मगर ए कै़से-हज़ीं[12]
कौन आएगा तिरी लाश उठाने वाला?

❖❖❖❖

1. शोर-शराबे 2. आशा-पात्र 3. ग़ैरों की महफ़िल 4. मुस्कान 5. सुहृदय 6. अनादिकाल 7. तकलीफ़ 8. धीरे धीरे क़त्ल करना 9. ऐसा वीराना जहां वहशी रहते हों 10. बवन्डर 11. स्वाद 12. शोक-ग्रस्त

10

काश कि हुस्न भी तनहा[1] होता
क्या होता गर ऐसा होता?

गेसू बिखरे बिखरे होते
चेहरा उतरा उतरा होता

आँखें भीगी भीगी होतीं
काजल फैला फैला होता

बातें मुब्हम[2] मुब्हम होतीं
लहजा[3] उखड़ा उखड़ा होता

यादों की बोछाड़ें होतीं
दिल मुतवातर[4] धड़का होता

आँख में आँसू ठहर न पाते
क़तरा क़तरा दरिया होता

क़ल्बो-जिगर[5] सहमे से होते
मायूसी ने घेरा होता

आस की खेती सूखी होती
बाग़े-तमन्ना[6] उजड़ा होता

सांसें बोझल बोझल होतीं
हर पल एक ज़माना होता

आँखों आँखों रात गुज़रती
सोए बिना सवेरा होता

आईने में देख के ख़ुद को
और किसी का धोका होता

सीने में अरमान मचलते
दिल रह रह कर उछला होता

हर आवाज़ पे जान सुकड़ती
हर आहट पर खटका होता

हाल[7] से दिल-आज़ारी[8] होती
मुस्तक़बिल[9] का ख़तरा होता

उल्टे सीधे वहम गुज़रते
अनहोनी का ख़दशा होता

कुछ अग़यार[10] से रंजिश होती
कुछ अपनों से शिकवा होता

बस्ती बस्ती बातें होतीं
आलम आलम[11] चर्चा होता

ऐसे में उस सोख़्ता-जां[12] से
काश, किसी ने पूछा होता

हम से बिछड़ना क्या लाज़िम[13] था?
इसका नतीजा समझा होता

हम तो, ख़ैर, पराए ठहरे
अपना ही कुछ सोचा होता

हम से तअल्लुक क़ायम रखते
हर-दो-जानिब[14] अच्छा होता

क़ैस का हाथ अगर थामा था
उस को थामे रक्खा होता

❖❖❖❖

---

1. अकेला 2. अस्पष्ट 3. बात करने का अन्दाज़ 4. लगातार 5. मन और हृदय 6. आशाओं का बाग़ 7. वर्तमान 8. दिल का दुखना 9. भविष्य 10. पराए लोग 11. दुनिया भर में 12. पीड़ित 13. ज़रूरी 14. दोनों तरफ़

11

किसे सुनाएं कि है हर्फ़ ना-तमाम[1] अपना
जो तू नहीं तो मुकम्मल नहीं कलाम[2] अपना

सुराही तेरी, सबू[3] तेरे, मैकदा[4] तेरा
निगाहे-नर्गिसे-रा'ना[5], कहाँ है जाम[6] अपना?

कुछ और देर चले रक़्से-साग़रे-मीना[7]
कुछ और देर ज़माने से इन्तक़ाम[8] अपना

दयारे-ग़ैर[9] में उठती थीं उंगलियाँ हम पर
खुद अपने शहर में भी तज़किरा[10] है आम अपना

यह क्या कि बादे-सबा[11] सर झुकाए आई है?
जबीने-नाज़[12] ने भेजा न हो सलाम अपना

मुझे ज़मीं से फ़लक[13] तक रही तलाश उसकी
वह ढूंढता रहा मेरी ग़ज़ल में नाम अपना

किया है जब से मुझे क़ैस उस सितमगर[14] ने
बना है बज़्मे-सुख़न[15] में नया मक़ाम[16] अपना

❖❖❖❖

1. अधूरी बात 2. कथन 3. वह प्याला जो मस्त करदे 4. शराब ख़ाना 5. नर्गिस के फूल जैसी खिली मस्त आंख 6. शराब का प्याला 7. प्याले और सुराही का नृत्य 8. बदला 9. पराया शहर 10. ज़िक्र, वर्णन 11. सुबह की ठंडी हवा 12. माशूक़ के नाज़-नख़रों ने 13. आसमान 14. ज़ालिम 15. साहित्य सभा 16. प्रतिष्ठा क स्थान

12

बरसों की दोस्ती का सिला[1] याद आ गया
बैठे बिठाये आज ये क्या याद आ गया

वो ज़ौक़े-आरज़ू[2] मिरा, वो तेरी बेरूख़ी
उस बेरूख़ी पे अपना गिला याद आ गया

देखा तूझे तो आँख मिरी भीग सी गई
क्या जाने तूझ को देख के क्या याद आ गया

जब भी किसी ने छेड़ी किसी बेवफ़ा की बात
कुछ बात है जो नाम तिरा याद आ गया

जब पास आ के मौत भी रस्ता बदल गयी
''इक बेवफ़ा[3] का अहदे-वफ़ा[4] याद आ गाया''

परवानों का जो हाल हुआ, उस को देख कर
हम को भी अपना अच्छा बुरा याद आ गया

जौरे-बुतां[5] की ख़ैर हो, जिस के तुफ़ैल[6] से
मुन्किर[7] थे जो उन्हें भी ख़ुदा याद आ गया

दैरो-हरम[8] की भीड़ जो देखी तो यूं लगा
दस्ते-हवस[9] को दस्ते-दुआ[10] याद आ गया

कौनो-मकां[11] की सैर को निकले थे क़ैस जी
अच्छा हुआ कि घर का पता याद आ गया

❖❖❖❖

1. इनाम 2. तुझे पाने की इच्छा 3. जो वादे का पक्का न हो 4. वादा 5. हसीनों का जुल्म 6. जिसकी वदौलत 7. जो ख़ुदा को नहीं मानते 8. मन्दिर-मस्जिद 9. लोभ वाला हाथ 10. भक्ति 11. ब्रह्मांड

13

उनकी आँखों का इशारा तो वही है कि जो था
मेरे जीने का बहाना तो वही है कि जो था

दिल जले, जान जले, रूह जले, कुछ भी जले
आँख को ज़ौक़े-नज़ारा[1] तो वही है कि जो था

शमां जिस हाल में जलती है, उसे जलने दो
हम पतंगों का इरादा तो वही है कि जो था

कोई माइल-ब-करम[2] हो कि न हो, क्या मालूम?
अहले-उम्मीद[3] का तकिया[4] तो वही है कि जो था

हुस्न वालों ने कई बार वतीरे[5] बदले
इश्क़ वालों का सलीक़ा[6] तो वही है कि जो था

अपने रस्ते भी जुदा, अपनी मनाज़िल[7] भी जुदा
फिर भी तेरा मेरा रिश्ता तो वही है कि जो था

हमको जो कुछ भी मिला, अपनी ही मेहनत से मिला
फिर भी क़िस्मत पे भरोसा तो वही है कि जो था

आसमानों पे कई बार लगाए डेरे
फिर भी इस ख़ाक से नाता तो वही है कि जो था

लोग कहतें हैं के यह शख़्स बड़ा कामिल[8] है
अस्ल में क़ैस दिवाना तो वही है कि जो था

❖❖❖❖

1. देखने का शौक़ 2. कृपा के लिए तैयार 3. आशावादी 4. सहारा 5. तौर-तरीक़े 6. अच्छे ढंग से काम करना 7. मंज़िलें 8. सिद्ध

14

कली उमीद की मुरझा गई तो क्या होगा?
चमन में फिर से ख़िज़ाँ[1] आ गई तो क्या होगा?

वो बात जिस ने मचाई हैं हलचलें दिल में
अगर लबों पे कभी आ गई तो क्या होगा?

सुना है आज वो महफ़िल में आने वाले हैं
नज़र नज़र से जो टकरा गई तो क्या होगा?

हम अपने दिल का फ़साना सुना तो दें, लेकिन
किसी की आँख जो शर्मा गई तो क्या होगा?

ये मंज़िलों के इरादे तो ठीक हैं, लेकिन
जो रास्ते ही में नींद आ गई तो क्या होगा?

मरीज़-ग़म[2] को अभी मौत पर भरोसा है
मगर जो मौत भी कतरा गई तो क्या होगा?

शबे-फ़िराक़[3] तो आँखों में काटनी है हमें
तुम्हारी याद ही थपका गई तो क्या होगा?

चले हैं हज़रते-वाइज़[4] की गुफ़्तगू सुनने
जो सुनते सुनते हंसी आ गई तो क्या होगा?

यह क़ैस महफ़िले-रिन्दां[5] की जान है, यारो!
जो पारसाई[6] इसे भा गई तो क्या होगा?

❖❖❖❖

1. पतझड़ 2. प्रेम रोगी 3. विरह की रात 4. प्रवचनकर्ता 5. रसिकों की सभा 6. पवित्रता

15

दिल किसी मह-जबीं[1] पर फ़िदा हो गया
बैठे बैठे यह क्या माजरा हो गया?

उनकी नज़रें उठीं, जाम थर्रा गये
मैकदे में अजब हादिसा[2] हो गया

कुछ हमारी नज़र ही का ऐजाज़[3] था
हम ने जिस बुत को देखा, ख़ुदा हो गया

दोस्ती के लिए हम ने आवाज़ दी
बस इसी पर ज़माना ख़फ़ा[4] हो गया

हम किसी को भी अपना बना न सके
आप जिस से मिले, आप का हो गया

तर्के-उलफ़त[5] का जब भी इरादा किया
बस वहीं आप का सामना हो गया

हाल बीमारे-उल्फ़त[6] का अच्छा न था
आप आए तो कुछ हौसला हो गया

हूक उट्ठी तो कुछ बेक़रारी घटी
दर्द हद से बढ़ा तो दवा हो गया

जो भी मिलता है, कहता है "क्या बात है?
तू तो हर बात में क़ैस सा हो गया"!

❖❖❖❖

---

1. चन्द्रमुखी 2. घटना 3. चमत्कार 4. नाराज़ 5. प्रेम का त्याग 6. प्रेम रोगी

16

इश्तियाक़े-ख़ुमो-सबू[1] न गया
हम में जो ऐब था, कभू न गया

मुद्दतों गुलसितां[2] से दूर रहे
फिर भी एहसासे-रंगो-बू[3] न गया

हम ने पाई न एक भी मंज़िल
फिर भी अरमाने-जुस्तजू[4] न गया

अश्क-बारी[5] का फ़ैज़ तो देखो
मैं इबादत को बे-वुज़ू[6] न गया

मुंह से निकली थी एक बात कभी
आज तक शोरे-हा-ओ-हू[7] न गया

कोई सुनता नहीं मिरी, फिर भी
सर से सौदाए-गुफ़्तगू[8] न गया

मेरी गर्दन तो कट गई, लेकिन
आसतीं से तिरी लहू न गया

मैं तो कब का सुधर चुका, लेकिन
तेरा अंदाज़े-दु-ब-दू[9] न गया

बा-वुजूदे-इनायते-याराँ[10]
दिल से अन्देश-ऐ-उदू[11] न गया

कूए-जानाँ[12] को सारी ख़ल्क़ गई
कैसे मनहूस, एक तू न गया

❖❖❖❖

---

1. पीने पिलाने का शौक़ 2. बाग़ 3. रंग और सुगंध की भावना 4. खोज की इच्छा 5. आँसूओं की बोछाड़ 6. हाथ मुह धोए बिना 7. बे-पनाह शोर 8. प्रमिका से लगातार बात करने का शौक़ 9. तकरार 10. दोस्तों की कृपा के बावुजूद 11. दुश्मनों का डर 12. प्रेमिका की गली

17

तिरी आँख उठी तो मैं रूक गया, तिरे लब हिले तो मैं खो गया
न तिरी ख़ता, न मिरी ख़ता, यह तो हादिसा था कि हो गया

तिरी आँख का जो खुमार था, मिरे रोम रोम में बस गया
तिरे रूप का जो निखार था, मिरे अंग अंग को धो गया

कहीं तेरी जलवा-नुमाईयाँ[1], कही मेरी नग़मा-सराईयाँ[2]
तू हज़ार मोती लुटा गया, मैं हज़ार मोती पिरो गया

मिरी ज़िंदगी का सवाल तू , मिरी शाइरी का कमाल तू
तू समा गया मिरी रूह में, मै ग़ज़ल में तुझको समो गया

वही बज़्म[3] थी, वही जाम थे, वही उल्टे सीधे पयाम[4] थे
यह तो ज़र्फ ज़र्फ[5] की बात थी, कोई हंस गया, कोई रो गया

सुब्ह शाम मरते-सफ़र है जो, उसे सुब्ह क्या उसे शाम क्या?
जहाँ जाग उठा वहीं चल पड़ा, जहाँ थक गया वहीं सो गया

ये तिरा ख़याल मिरे लिए, कभी आस है कभी यास[6] है
कभी दिल में फूल खिला गया, कभी आँख मेरी भिगो गया

तिरे बाद तेरे मरीज़ का, तुझे क्या बतायें कि क्या हुआ
तिरी याद आ के थपक गई, तिरा दर्द आ के डुबो गया

वो जो हर किसी का रक़ीब[7] था, शबो-रोज़ तेरे क़रीब था
वही क़ैस तेरी तलाश में वो फिरा कि आप ही खो गया

❖❖❖❖

1. जलवे दिखाना, 2. गीत गाना 3. महफ़िल 4. सन्देश 5. सहनशीलता 6. निराशा 7. दुशमन

18

पहले तो मेरी जुर्अते-तदबीर[1] देखना
फिर एहतमामे-शूमिये-तक़दीर[2] देखना

जब आँख मूंदना, तिरे बारे में सोचना
जब आँख खोलना, तिरी तस्वीर देखना

आँसू बिखर बिखर गए, आहें हवा हुई
लुटती है कैसे इश्क़ की जागीर, देखना

अब वो भी पूछते हैं मिरी बेकसी[3] का हाल
लिल्लाह, मेरी आह की तासीर देखना

मुजरिम तो जान देने को तय्यार है मगर
क्यूं कांपती है आप की शमशीर, देखना

कहते हैं लोग, कोई मुक़र्रिर[4] नहीं हूँ मैं
बात उस की हो तो फिर मिरी तक़रीर देखना

मेरा तो क्या है, आज गया कल गया मगर
इक दिन कलामे-हज़रते-तनवीर[5] देखना

क्या हुस्ने-इलतिफ़ात[6] था, क्या हुस्ने-एहतियात[7]
हल्क़ा-ब-हल्क़ा[8] कैस की ज़न्जीर देखना

❖❖❖❖

1. तरकीब की चेष्ठा 2. निर्बल भाग्य 3. बे-सहारा 4. भाषण देने वाला 5. मेरे अज़ीज़ दोस्त शुएब तनवीर साहब जो इन दिनों कैनेडा में रहते हैं 6. कृपा-सौंदर्य 7. पूर्ण सावधानी 8. ज़ंजीर की एक एक कड़ी

19

मेरी आँखों में समाया है तो बस एक ही शख़्स
मेरे अफ़कार[1] पे छाया है तो बस एक ही शख़्स

अपनी पलकों पे बिठाया है तो बस एक ही शख़्स
ख़ान-ए-दिल[2] में बसाया है तो बस एक ही शख़्स

जागते में कोई भाया है तो बस एक ही शख़्स
ख्व़ाब में सामने आया है तो बस एक ही शख़्स

मैं कि अफ़लाक[3] पे बैठा था बसद-इज़्ज़ो-जलाल[4]
मुझको इस ख़ाक पे लाया है तो बस एक ही शख़्स

चाँदनी यूँ तो मुयस्सर[5] थी सभी को, लेकिन
इस में जी भर के नहाया है तो बस एक ही शख़्स

बज़्मे-हस्ती[6] में मिले यूँ तो कई ज़ोहरा-जबीं[7]
हमने सीने से लगाया है ता यस एक ही शख़्स

दैरो-काबा[8] में बहुत कुछ था मगर क्या कीजे
हमने माबूद[9] बनाया है तो बस एक ही शख़्स

हमने दुनिया से छुपाई न कोई चीज़, मगर
हमने दुनिया से छुपाया है तो वस एक ही शख़्स

हमसे रूठे जो ज़माना तो हंसी आती है
हमने रो रो के मनाया है ता बस एक ही शख़्स

कुन्जे-ख़लवत[10] के दरो-बाम[11] सजाने के लिये
आज भी हम ने बुलाया है तो बस एक ही शख़्स

जब भी झाँका है दिले-क़ैस की पहनाई[12] में
वां पे कोई नज़र आया है तो बस एक ही शख़्स

❖❖❖❖

1. चिन्तन 2. दिल का घर 3. आकाश 4. प्रतिष्ठा के साथ 5. प्राप्त 6. जीवन 7. हसीना 8. मन्दिर-मस्जिद 9. पूजनीय 10. सूनापन 11. घर-बार 12. गहराई

20

किस सलीक़े[1] से शबे-हिजराँ[2] सजा लेते हैं हम
तू नहीं तो तेरी यादों को बुला लेते हैं हम

दर्दे-दिल[3], सोज़े-जिगर[4], उफ़्तादगीये-जिस्मो-जां[5]?
बोझ भारी है मगर फिर भी उठा लेते है हम

शामे-ग़म को और भी रंगीं बनाने के लिये
मय में कुछ ख़ूने-तमन्ना[6]. भी मिला लेते हैं हम

हाले-दिल अपना किसी पर क्या खुले, कैसे खुले?
इक हंसी की आड़ में सौ ग़म छुपा लेते है हम

साज़ के तारों से हम ने कुछ तो सीखा है सबक़
चोट जब पड़ती है दिल पर, गुनगुना लेते हैं हम

तेरे दर से जो भी मिल जाए, मुबारक है हमें
फूल हो या ख़ार[7], सीने से लगा लेते हैं हम

इक ज़माने से निराली है हमारी बंदगी
नाम जब सुनते हैं तेरा, सर झुका लेते हैं हम

हम फ़क़ीरों से तुझे इतनी कदूरत[8] है तो क्यों?
नाम ही लेते हैं तेरा, और क्या लेते हैं हम?

तेरी सूरत देख ली, जल्वे भी तेरे चुन लिए
अब इजाज़त हो तो अपना रास्ता लेते हैं हम

ज़िन्दगी भर क़ैस तेरी राह में हाइल[9] रहा
आज तेरी राह से इस को हटा लेते हैं हम

❖❖❖❖

1. अच्छे ढ़ंग से 2. विरह-रात्रि 3. मन की पीड़ा 4. मन की जलन 5. तनमन की दुर्बलता 6. अतृप्त इच्छाओं का ख़ून 7. कांटा 8. घृणा 9. रुकावट

21

घबरा गए हैं वुसअते-कौनो-मकाँ[1] से हम
जाते नहीं हैं दूर कहीं अशियाँ[2] से हम

जितना डरा दिया है हमें इस ज़मीन ने
इतना भला डरे थे कभी आसमाँ से हम?

अब कैफ़ो-इनबिसात[3] की परवा नहीं रहीं
मानूस[4] यूं हुए हैं ग़मे-जाविदाँ[5] से हम

अपना जो हाल है वो अयाँ[6] हैं, निहाँ[7] नहीं
फिर क्या बताऐं आप को अपनी ज़बाँ से हम?

मश्क़े-फ़ुग़ाँ[8] करें तो हिला दें दिले-वुजूद[9]
गो देखने को लगते हैं कुछ नातवाँ[10] से हम

कुछ उल्फ़तों के रंज हैं, कुछ आफ़तों के ग़म
''कुछ दिल से हैं डरे हुए, कुछ आसमाँ से हम

ऐ जज़्बे-शौक़[11], कोई नया रास्ता निकाल
अब तक वहीं खड़े हैं चले थे जहाँ से हम

''यां ज़ौक़े-दीद[12] भी है इबादत[13] के साथ साथ''
उड्डेंगे एक रोज़ इसी आसताँ[14] से हम

अपने इक इक मसाम[15] से छनता है नूर सा
कुछ यूँ निखर के आए हैं कूए-बुताँ[16] से हम

जचती नहीं निगाह में अब अंजुमन[17] कोई
जलवे जहां हज़ार थे, लौटे हैं वाँ से हम

हर रोज़ रोज़े ईद है, हर शब शबे-बरात
हैं बे-नियाज़[18] इन दिनों सूदो-ज़ियाँ[19] से हम

वो क़ैसे-ना-मुराद, न जाने किधर गया
उस ला-मकाँ[20] को ढूंढ के लाएं कहाँ से हम?

❖❖❖❖

---

1. ब्रम्हाण्ड का फैलाव 2. घर 3. ख़ुशी और मस्ती 4. लगाव 5. शाश्वत दुख 6. ज़ाहिर 7. छिपा हुआ 8. रुदन 9. अस्तित्व की आत्मा 10. कमज़ोर 11. लगन 12. दर्शन-अभिलाषा 13. पूजा 14. दहलीज़ 15. रोम-रोम 16. प्रेमिका का स्थान 17. महफ़िल 18. बे-परवा 19. लाभ-हानि 20 बे-घर

22

हिसारे-ज़ात[1] से निकलूं तो तुझ से बात करूं
तिरी सिफ़ात[2] को समझूं तो तुझ से बात करूं

तू कोहसार[3] में, वादी[4] में, दश्तो-सह्रा[5] में
में तुझ को ढूंढ निकालूं तो तुझ से बात करूं

तू शाख़ शाख़ पे बैठा है फूल की सूरत
मैं ख़ार ख़ार से उलझूं तो तुझ से बात करूं

तिरे इशारों से बढ़ कर तिरा बयां मुबहम[6]
मैं तेरी बात को समझूं तो तुझ से बात करूँ

तू इतना दूर के पहचानना भी मुश्किल है
तुझे क़रीब से देखूं तो तुझ से बात करूं

झिझक झिझक के अगर हो तो बात बात नहीं
मैं तेरी आंख मे झांकूं तो तुझ से बात करूँ

तू मेरा दोस्त है, दुश्मन है या कि कुछ भी नहीं
मैं तेरे दिल को टटोलूं तो तुझ से बांत करूँ

मिरी ख़मोश-लबी पर शिकायतें कैसी?
मैं अपने आप से बोलूं तो तुझ से बात करूँ

ये वो मक़ाम है, या मैं हूँ या मिरी ख़लवत[7]
मैं इस मक़ाम से गुज़रूं तो तुझ से बात करूँ

ये मौज मौज तलातुम[8], ये डूबना मेरा
मैं इत्तिफ़ाक से उभरूं तो तुझ से बात करूँ

ज़बाने-क़ैस पे हर वक़्त तेरी बातें हैं
ज़बाने-क़ैस जो सीखूं तो तुझ से बात करूँ

❖❖❖❖

1. अपने आप से 2. गुण 3. पहाड़ों की श्रृंखला 4. घाटी 5. जंगल बयाबान 6. अस्पष्ट 7. अकेलापन 8. तूफ़ान

23

न तफ़क्कुर[1] है न एहसास[2] न तौफ़ीक़े-सुख़न[3]
फिर मुझे सूंघ गई कोई नशीली नागन

ताईरे-अर्श[4] था, परवाज़[5] थी मंज़िल मेरी
आहू-ए-दश्त[6] हूँ, आवारगी मेरा मसकन[7]

मैं हूँ वो फूल कि जो ज़ीनते-सह्रा[8] ठहरा
लोग क्यूं ढूंढ रहे हैं मुझे गुलशन गुलशन

चाँद तारों पे तो चलता है हमारा सिक्का
ये अलग बात कि धरती है हमीं से बद-ज़न[9]

तेरे तेवर तो ब-हर-गाम[10] बदल जाते हैं
यां वही जान की उलझन, वही दिल की धड़कन

तेरे चहरे पे शिगुफ़्ता[11] हैं तरो-ताज़ा गुलाब
मेरे चेहरे से नुमायाँ[12] कई सदियों की थकन

देखना मेरी तरफ़ और धड़क सा जाना
जैसे पानी पे पड़े और फिसल जाए किरन

बात करने का वो अन्दाज़, वो लहजा तेरा
जैसे खुल जाए किसी मदभरी बोतल का दहन[13]

रूह-फ़रसा[14] है महकती हुई हर मौजे-नफ़स[15]
जान लेवा है चहकता हुआ हर उज़्वे-बदन[16]

आ कुछ ऐसे के तुझे देख के उड़ जाएं हवास
जा कुछ ऐसे के तिरी याद में रह जाऊँ मगन

मेरे अश'आर[17] ने क्या क्या ना जगाए जादू
कोई देखे मिरी सन'अत[18], मिरी जौदत[19], मिरा फन[20]

औजे-तख़ईल[21] कुछ ऐसा कि हिमाला कांपे
तबा[22] कुछ ऐसी रवां, पानी भरें गंगो-जमन

वो सितमगर[23] तो किसी का भी नहीं है, यारो
कैसे-नादां से कहो, होश का थामे दामन

❖❖❖❖

---

1. सोच 2. भावना 3. बात करने की शक्ति 4. पक्षी 5. उड़ान 6. हिरन 7. घर 8. जंगल की शान 9. सन्देहजनक 10. प्रति-क्षण 11. खिले हुए 12. ज़हिर 13. मुख 14. आत्मा को झुंझलाने वाली 15. सांसों की हर लहर 16. शरीर का हर अंग 17. शे'र का बहुवचन 18. कारीगरी 19. श्रेष्टता 20. कला 21. विचारों का उंचापन 22. तबीयत 23. निर्दयी

24

अब वो पहले से माहो-साल[1] नहीं
वह बला-ख़ोज़ी-ए-जमाल[2] नहीं

अब कहां हुस्न में वो रानाई[3]?
वो दिल-आवेज़[4] ख़द्दो-ख़ाल[5] नहीं

हम भी अब मुज़तरिब[6] नहीं इतने
दिल परेशां तो है, निढाल नहीं

जिस की सोहबत में रोज़ो-शब[7] गुज़रे
आज वो भी शरीके-हाल[8] नहीं

सैंकड़ों हिरनियां थीं बस्ती में
दश्त[9] में एक भी ग़ज़ाल[10] नहीं

आज शादी है और कल मातम
वक़्त पाबन्दे-एतदाल[11] नहीं

सब से दिल-जोई[12], हर किसी से लगाव
''तुम को मेरा ज़रा ख़याल नहीं?''

थी कभी आस तुम से मिलने की
अब तो इतना भी एहतेमाल[13] नहीं

तुम को कुरबत[14] से आर[15] है तो रहे
हम को भी फुरसते-विसाल[16] नहीं

ग़म-परस्तों[17] का काल है, जानां
ग़म-ज़दों[18] का तो कोई काल नहीं

उखड़ी-उखड़ी सी है मगर फिर भी
ज़िन्दगी इस क़दर मुहाल[19] नहीं

क़ैस जब तक जिया, ख़ुदा सदक़े!
मर गया है तो कुछ मलाल[20] नहीं

❖❖❖❖

---

1. जवानी का समय 2. जान लेवा नख़रे 3. चमक 4. मोहने वाले 5. नैन-नक़्श 6. बेचैन 7. रात-दिन 8. साथी 9. जंगल 10. हिरन 11. न बदलने वाला 12. छेड़छाड़ 13. सन्देह 14. निकटता 15. झिझक 16. मिलन 17. दुख के इच्छुक 18. शोक-ग्रस्त 19. कठिन 20. अफ़सोस

25

न जुज़्वो-कुल का मुआमिला[1] हूँ, न आफ़रीनिश[2] का मुद्आ हूँ
किताबे-हस्ती का इक वरक़ हूँ, हवाए-इमकां[3] में उड़ रहा हूँ

कभी तमन्ना[4] जहान भर की, कभी हर इक शै से बेनियाज़ी[5]
कभी तवज्जो[6] की जुस्तजू[7] है, कभी तग़ाफुल[8] को ढूंढता हूँ

सफ़र की ये कौन सी है मंज़िल, न पाए-रफ़तन न जाए मांदन[9]
नसीम-आसा[10] चला था घर से, गुबार बन कर बिखर गया हूँ

तुझे गुमां[11] पर यक़ीं का दावा, मुझे यक़ीं पर गुमां का धोखा
न तू ही मेरी तरह बना है, न मैं ही तेरी तरह बना हूँ

हुदूदे-सूदो-ज़ियां[12] से आगे निकल गया है शुऊर[13] मेरा
करम किसी का, जफ़ा किसी की, न नापता हूँ न तोलता हूँ

खुदा से दो टोक कह दिया है, तू मेरा ख़ालिक़ मैं तेरा ख़ालिक़
तू मेरी तख़ईल[14] का करिश्मा, मैं तेरी सन'अत का मोजिज़ा[15] हूँ

न कुंजे-ख़लवत[16] में चैन पाया, न अंजुमन[17] मुझ को रास आई
बिरूने-महफ़िल[18] ग़रीब सा था, दरुने-महफ़िल[19] अजीब सा हूँ

❖❖❖❖

1. अपूर्ण और पूर्ण का विषय 2. सृष्टि की उत्पत्ति 3. प्रभवायु 4. इच्छा 5. बे-परवाई 6. ध्यान 7. खोज 8. उपेक्षा 9. न चलने को पांव न रुकने को स्थान 10. हवा जैसा 11. शक 12. लाभ-हानि की सीमा 13. ज्ञान 14. चिन्तन का चमत्कार 15. क्रतत्व का जादू 16 एकान्त 17. महफ़िल 18. महफ़िल के बाहर 19. महफिल के अन्दर

26

जौरो-सितम[1] के मारे हुओं की ज़बां हूँ में
वे मेहरिए-जहां[2], तिरा अफ़साना-ख़्वां[3] हूँ मैं

ज़ाहिर है मेरे हाल से हर दिल का इज़्तिराब[4]
ग़म-खाना-ए-हयात[5], तिरा तरजुमां[6] हूँ मैं

यां एक दूसरे से कोई आशना[7] नहीं
हर इक से पूछता हूँ कि आख़िर कहाँ हूँ मैं?

दामन में मेरे फूल भी हैं और ख़ार भी
तस्वीरे-इम्तिज़ाजे-बहारो-ख़िज़ां[8] हूँ मैं

मेरे ही दम से साग़रो-मीना[9] में रब्त[10] है
साक़ी[11] हूँ, बादा-ख़्वार[12] हूँ, पीरे-मुग़ां[13] हूँ मैं

कुछ डर नहीं है तंगीए हालात का मुझे
परवरद-ए-नशाते-ग़मे-दो-जहां[14] हूँ मैं

ऐ जज़्बे-शौक़[15], काई नया रास्ता निकाल!
मुद्त गुज़र गई है पसे-कारवाँ[16] हूँ मैं

मसहूर[17] कर लिया है मुझे इसके लोच ने
दिल-दाद-ए-निगारिशे-उर्दू ज़बां[18] हूँ मैं

मुझ से जदीदियत[19] की उमीदें, ख़ुदा पनाह!
मैं क़ैस हूँ, जहाने-कुहन[20] का निशां हूँ मैं

❖❖❖❖

1. अत्याचार 2. संसारिक निदंयता 3. कहानी सुनाने वाला 4. बेचैनी 5. दुखी जीवन 6. व्याख्या करने वाला 7. परिचित 8. वसंत और पतझड़ का समय 9. सुराही ओर प्याला 10. जोड़ 11. पिलाने वाला 12. पीने वाला 13. प्रवंधक 14. सुख दुख का अनुभवी 15. लगन 16. कारवां से पिछड़ा हुआ 17. जादू से प्रभावित 18. उर्दू ज़बान का अतिशये प्रेमी 19. नया पन 20. पुराने ज़माने का

27

जब कभी तलख़िए-हालात[1] से घबराता हूँ
तेरे पुर-कैफ़ तसव्वुर[2] से लिपट जाता हूँ

जब भी छिड़ता है तिरा ज़िक्र किसी महफ़िल में
बे-ईरादा तिरी यादों में उलझ जाता हूँ

इक ज़माने से निराली है इबादत[3] मेरी
नाम लेता हूँ तिरा, गीत तिरे गाता हूँ

चश्मे-साक़ी[4], मुझे मैख़ाने[5] से कुछ काम नहीं
मैं जो आता हूँ तो बस तेरे लिए आता हूँ

मेरी आँखों से तो अब नींद भी कतराती है
रात भर दिल को तिरी याद से बहलाता हूँ

तर्के-उल्फ़त[6] का इरादा तो किया है, लेकिन
जब भी सुनता हूँ तिरा नाम, मचल जाता हूँ

इश्क़ की राह कुछ इस तरह कटी जाती है
चोट खाता हूँ, तड़पता हूँ, संभल जाता हूं

❖❖❖❖

---

1. समय के कडुवे घूंट 2. मस्ती से भरी सोच 3. पूजा 4. साक़ी की आंख 5. मदिरालय 6. प्रेम का त्याग

28

ज़मीं पे सब्ज़ा-ओ-गुल[1] आँख मल के देखते हैं
फ़लक[2] से चाँद उसे रूख़ बदल के देखते हैं

यह रक़्से-मौज[3] नहीं है, ये बेक़रारी है
वो सामने हो तो पानी मचल के देखते हैं

सुना है उसको कवि लोग अच्छे लगते हैं
ये बात है तो चलो हम भी चल के देखते हैं

सुना है उसके सभी ज़ाविये[4] हैं क़ाबिले-दीद[5]
तभी तो हम उसे पहलू बदल के देखते हैं

हर एक आँख सरे-बज़्म[6] हम से लिपटी है
इसी लिए तो उसे हम संभल के देखते हैं

हुई है जब से तिरी दिलबरी[7] नसीब हमें
मिज़ाज और ही अपनी ग़ज़ल के देखते हैं

इसी उमीद पे शायद कि तेरी बास आए
कली कली को चमन में मसल के देखते हैं

बने हैं हम जो तिरी शो'लगी[8] के परवाने
चिराग़े-बज़्म[9] भी अब तुझ को जल के देखते हैं

मिला तो हमने तुझे अपनी ममलुकत[10] समझा
बिछड़ गया है तो अब हाथ मल के देखते हैं

लगाव क्या है? जुनूं[11] क्या है? वहशतें क्या हैं?
हिसारे-अक़्ल[12] से बाहर निकल के देखते हैं

ये क़ैस क्या है? कभी एहले-दीं[13], कभी काफ़िर
हसीन फिर भी इसे राह चल के देखते हैं

❖❖❖❖

1. हरियाली 2. आकाश 3. लहरों का नृत्य 4. पहलू 5. दर्शनीय 6. पूरी सभा में 7. प्यार 8. चमक दमक 9. सभा के दीपक 10. जायदाद 11. उन्माद 12. बुद्धि का घेरा 13, धार्मिक

29

किस दर्जा दिल-आवेज़[1] थी, ऐ दोस्त, तिरी शान
ईमान भी अब कुफ़्र है, अब कुफ़्र भी ईमान

साग़र[2] हो कि पैमाना[3], सबू हो कि सुराही[4]
सब कैफ़[5] के आलात[6] हैं, तू कैफ़ का उनवान[7]

तू रौनक़े-मैख़ाना भी, तज़ईने-हरम[8] भी
तू मुझ से शनासा[9] न सही, खुद को तो पहचान

तू मुझ को फ़रिश्ता न समझ, जाने-तमन्ना[10]
इन्सान हूँ, इन्सान हूँ, इन्सान हूँ, इन्सान

दिल शाइक़े-दीदार[11] है, जां माइले-ईसार[12]
ऐ काश, वो दिन आए कि हो तू मिरा मेहमान

तू मुझसे परे रह मगर इतना ना परे रह
कुछ अक़्ल की सुन बात तो कुछ दिल का कहा मान

तूफ़ाने-हवादिस[13] को ये मालूम नहीं है
मैं तेरा निगहबान[14] हूँ, तू मेरा निगहबान

तेरा ये तबस्सुम[15] तिरे वहशी की नज़र में
इन'आम का इन'आम है, एहसान का एहसान

तफ़रीक़े-मनो-तू[16] है बुरी चीज़ कि इस में
कुछ मेरा भी नुक़सान है, कुछ तेरा भी नुक़सान

लगता है कि इक रोज़ तू आएगा यक़ीनन
हंगामा[17] बपा होगा अगर मुझ में रही जान

इक मैं हूँ कि हर वक़्त वही हाल वही चाल
इक तू है कि हर लहज़ा[18] नई आन नई शान

गर क़ैस से मिलियो तो ज़रा सोच के मिलियो
इन्सान का इन्सान है, शैतान का शैतान!

❖❖❖❖

---

1. मन मोहक 2. प्याला 3. मापक 4. मस्ती भरा प्याला 5. मस्ती 6. साधन 7. शीर्षक 8. पूजा स्थान की शोभा 9. परिचित 10. प्रिये 11. दर्शनार्थी 12. प्राण समर्पित 13. दुर्घटनाओं का तूफ़ान 14. रक्षक 15. मुसकान 16. द्वैत-अद्वैत का फ़र्क़ 17. उपद्रव 18. पल

30

गुलाब आँखें, शराब आँखें
यही तो हैं लाजवाब आँखें

इन्हीं में उल्फ़त, इन्हीं में नफ़रत
सवाब[1] आँखें, अज़ाब[2] आँखें

कभी नज़र में बला की शोख़ी
कभी सरापा हिजाब[3] आँखें

कभी छुपाती हैं राज़ दिल के
कभी हैं दिल की किताब आँखें

किसी ने देखीं तो झील जैसी
किसी ने पाईं सराब[4] आँखें

मैं सर ब-सिजदा[5] था मैकदे[6] में
थीं ज़हनो-दिल[7] में शराब आँखें

वो आए तो लोग मुझ से बोले
हुज़ूर, आँखें! जनाब, आँखें!

अजीब था गुफ़्तगू का आलम[8]
सवाल कोई, जवाब आँखें

उधर खड़ा था वो माह-पैकर[9]
घनेरे गेसू, सहाब[10] आँखें

इधर निशस्ता[11] थे क़ैस साहब
ख़राब नीयत, ख़राब आँखें

❖❖❖❖

---

1. पुन्य 2. पाप-कष्ट 3. पर्दा 4. मृग-तृष्णा 5. सर झुकाये हुए 6. मधुशाला 7. चित्त 8. दशा 9. चन्द्रमुखी 10. घटा 11. बैठे हुए

31

उस शोख़ से ख़िताब[1] करूँ तो ग़ज़ल कहूँ
थोड़ा बहुत हिसाब करूँ तो ग़ज़ल कहूँ

कुछ उस को बेनिक़ाब[2] करूँ तो ग़ज़ल कहूँ
कुछ ख़ुद को बेहिजाब[3] करूँ तो ग़ज़ल कहूँ

कुछ शिकव-ए-इताब[4] करूं तो ग़ज़ल कहूं
ये कारे-ला-सवाब[5] करूं तो ग़ज़ल कहूं

हर फूल को गुलाब करूँ तो ग़ज़ल कहूँ
जुगनू को माहताब[6] करूँ तो ग़ज़ल कहूँ

क़तरे को मौज, मौज को दरिया का रूप दूँ
ज़र्रे[7] को आफ़ताब[8] करूँ तो ग़ज़ल कहूँ

सोज़े-जिगर[9] से आती नहीं शे'र में तपिश
दिल को अगर कबाब करूँ तो ग़ज़ल कहूँ

फिर आज उस निगाह ने पूछे हैं सौ सवाल
अब जुर'अते-जवाब करूँ तो ग़ज़ल कहूँ

सहरा को रश्के-बाग़[10] करूँ तो क़लम उठे
पानी को गर शराब करूँ तो ग़ज़ल कहूँ

फ़िक्रो-नज़र[11] तो ज़ह्न[12] के अदना से खेल हैं
लफ़्ज़ों का इन्तिख़ाब[13] करूँ तो ग़ज़ल कहूँ

मेरी चले तो क़ैस को, पीरी[14] के बावुजूद,
दिल-बस्त-ए-शबाब[15] करूँ तो ग़ज़ल कहूँ

❖❖❖❖

---

1. बात चीत 2. बे-पर्दा 3. बे-झिझक 4. क्रोध की शिकायत 5. व्यर्थ कार्य 6. चांद 7. कण 8. सूर्य 9. दिल की व्यथा 10. बाग़ से भी सुन्दर 11. सोच विचार 12. दिमाग़ 13. चयन 14. बुढ़ापा 15. जवानी का बन्दी

32

वो जो नज़रें झुकाए हुए हैं
मेरी दुनिया पे छाए हुऐ हैं

यूँ तो पर्दा हटाऐ हुए हैं
फिर भी खुद को छुपाए हुए हैं

कल तलक मेरा दिल, मेरी जां थे
आज आँखें चुराए हुए हैं

मुझ को देखा, मगर बेरूख़ी से
जाने किस के सिखाए हुए हैं

मेरे छूते ही घबरा के बोले
हम तो गंगा नहाए हुए हैं

आज़माते है जो हर किसी को
वो मिरे आज़माए हुए हैं

हर कोई मेहरबां है हमीं पर
हम सभी के सताए हुए हैं

जिस को देखो, वो पहुँचा हुआ है
इक हमीं हैं कि आए हुए हैं

कौन आता है अपनी रज़ा[1] से?
हम किसी के बुलाए हुए हैं

आज महफ़िल में जाना ही होगा
आज तो कैस आए हुए हैं

❖❖❖❖

1. मर्ज़ी

33

आए हो तो बैठो, न करो जाने की बातें
अच्छी नहीं अपनों पे सितम[1] ढाने की बातें

तुम आँख उठा कर ज़रा देखो तो, मिरी जां
है कोई जो छेड़े यहाँ मैख़ाने[2] की बातें?

हम वो हैं कि जब से तुम्हें पूजा है, तभी से
का'बे[3] में भी होती हैं सनम-ख़ाने[4] की बातें

तुम शो'ला-ब-दामां[5] हो, जिगर-सोख़्ता[6] हम हैं
वो शमा की बातें हैं ये परवाने की बातें

मत पूछो कि क्या हाल हुआ तुम से बिछड़ कर
अब याद नहीं तुम से बिछड़ जाने की बातें

कलियों से सुने थे तिरे शर्माने के क़िस्से
भंवरों से सुनी हैं तिरे खुल जाने को बातें

तारों में नज़र आई तिरी आँख-मिचोली
मौजों ने सुनाई तिरे बल खाने की बातें

रह जाओ अगर पास हमारे किसी सूरत
मर जाएं जो छेड़ें कभी मर जाने की बातें

अग़यार[7] की महफ़िल में न जाया करो, जानां!
वां पर तो हुआ करती हैं बहकाने की बातें

सुननी हैं तो फिर क़ैस के अल्फ़ाज़[8] में सुनिये
फ़रज़ाने[9] के बातें हों कि दीवाने की बातें

❖❖❖❖

1. ज़ुल्म 2. मधुशाला 3. ख़ुदा का घर 4. मन्दिर 5. अग्नि ज्वाला लिए हुए 6. व्यथित हृदय 7. पराये लोग 8. शब्दों में 9. बुद्धिमान

34

खुद अपना हाल कभी आप से कहा भी नहीं
अगर कहा है तो फिर आप ने सुना भी नहीं

हमारे दर्द की, या रब, कोई दवा भी नहीं
किसी के लब पे हमारे लिए दुआ[1] भी नहीं

ये किस मक़ाम पे फेंका है ला के क़िस्मत ने
अंधेरी रात है और पास एक दिया भी नहीं

वो दिन भी थे कि ज़माने में धूम थी अपनी
यह दिन भी हैं कि कोई हम को कोसता भी नहीं

हम उस की आँख पे सब कुछ लुटाए बैठे हैं
जो आँख उठा के कभी हम को देखता भी नहीं

अभी से बज़्मे-दिलो-जां[2] में इन्तशार[3] सा है
अभी तो उसकी गली में क़दम धरा भी नहीं

हम उस की याद में घुलते रहें, ये ताब कहाँ ?
हम उसे को दिल से भुला दें, ये हौसला भी नहीं

वो शख़्स जिस से कि बरसों की आशनाई थी
कुछ आज ऐसे मिला जैसे जानता भी नहीं

ये क़ैसे-शीरीं-सुख़न[4] अब तो एक मुद्दत से
बहुत उदास सा रहता है, बोलता भी नहीं

❖❖❖❖

1. प्रार्थना 2. मन की महफ़िल 3. उथल पुथल 4. मधुर-भाषी

35

क्या कहें, वो हमें किस वक़्त कहाँ मिलते हैं
होश उड़ जाते हैं जिस वक़्त जहाँ मिलते हैं

कोई बस्ती हो कि जंगल हो कि वीराना हो
हर जगह अपने ही क़दमों के निशां मिलते हैं

हम तो बस एक तबस्सुम[1] ही पे बिक सकते हैं
लेकिन अब ऐसे ख़रीदार कहाँ मिलते हैं?

दरे-मैख़ाना[2] खुला है, चलो देखें तो सही
उन में क्या ऐब है जो लोग यहाँ मिलते हैं

ज़ुल्फ़े-जानां[3] से कहो, और ज़रा लहराऐ
इस के साये में हमें दोनो जहाँ मिलते हैं

हाले-दिल अपना सुनाऐं तो सुनाऐं कैसे?
आप रहते हैं कहाँ, आप कहाँ मिलते हैं?

दिले-आशिक़ में जो रहते हो तो रहते जाओ
क़िस्मतें हों तो कहीं ऐसे मकां मिलते हैं

बात करते हैं मिरी, शे'र मिरे पढ़ते हैं
जब भी इस शहर में कुछ अहले-ज़बां[4] मिलते हैं

क़ैस और उन से मुलाक़ात का दावा? तौबा!
वो तो ऐसे हैं कि ऐसों से कहाँ मिलते हैं!

❖❖❖❖

1. मुसकान 2. मधुशाला का द्वार 3. माशूक़ की ज़ुल्फ़ 4. विद्वान

36

इश्क़ में बे-हिजाब[1] हो जाऐं
उस की रा'नाइयों[2] में खो जाऐं

ज़िन्दगी भर जो दूर दूर रहा
आज उस के क़रीब हो जाऐं

वो जो हर सांस में समाया है
उस को हर शें'र में समो जाऐं

उस की वरसों पुरानी माला में
चंद मोती नये पिरो जाऐं

चश्मे-गिरियां[3], तिरे निसार[4], अगर
अश्के-ग़म दाग़[5] दिल के धो जाऐं

कहीं ऐसा न हो कि ये आँसू
ग़ैरते-इश्क़[6] को डुबो जाऐं

वो अजब हैं के दिल को शाद[7] करें
और फिर आँख भी भिगो जाऐं

यूँ तो हर ज़ख़्म पर धरें मरहम
साथ निश्तर भी कुछ चुभो जाऐं

बादलों से कहो कि आज की रात
आऐं और आ के मुझ को रो जाऐं

कोई अपना अगर नहीं होता
क्यूं न हम ही किसी के हो जाएं?

दैरो-का'बा[8] बहुत हुआ, अब तो
कोई काफ़िर[9] बुलाए तो जाएं

ज़िन्दगी भर तो सो नहीं पाए
मौत आई है, अब तो सो जाएं

कैस उट्ठे हैं शे'र-ख़्वानी[10] को
अहले-महफ़िल[11] ख़मोश हो जाएं

❖❖❖❖

---

1. वे-पर्दा 2. सौंदर्य की प्रतिभा 3. आंसू बहाते हुए नेत्र 4. नयोछावर 5. दुख के आंसू 6. प्रेम गौरव 7. प्रसन्न 8. मन्दिर-मस्जिद 9. अनीश्वरवादी 10. शे'र पढ़ने को 11. सभा सद

37

हमारे दिल में थी तो थी तिरी ही आरज़ू[1] बरसों
ज़मीं से ता फ़लक की है तिरी ही जुस्तजू[2] बरसों

न ख़लवत[3] में तुझे देखा, न जलवत[4] में तुझे पाया
रहा पोशीदा पोशीदा[5], न आया रू-ब-रू[6] बरसों

गुलो-गुन्चा[7] कभी माइल[8] न देखे लब-कुशाई[9] पर
ख़सो-ख़ाशाक[10] से तो, ख़ैर, की है गुफ़्तगू[11] बरसों

अजब अंदाज़ है, साक़ी, तिरे पीने पिलाने का
न हमने जाम[12] देखा है न देखा है सबू[13] बरसों

उसे मिलने के हम मुश्ताक़[14] थे हर हाल में, लेकिन
हमें मिलने से कतराता रहा वो हीला-जू[15] बरसों

मिरे जैसा कहाँ होगा जो आशिक़ भी हो, शायर भी
''दुखा कर दिल मिरा पछताऐ गा वो तुन्द-ख़ू[16] बरसों

गुलो-गुलज़ार पर यह रंग क्यूं है, ताज़गी क्यूं है?
कली से पूछिये जिस ने बहाया है लहू बरसों

हमीं ने ख़ूने-दिल दे कर सजाया बेल-बूटों को
हमीं ने लुटते देखी है चमन की आबरू[17] बरसों

दुआएं दो मिरे अल्फ़ाज़[18] को, मेरे तख़य्युल[19] को
बिखेरे हैं तुम्हारे गुलसितां में रंगो-बू बरसों

जिसे, ऐ क़ैस, तू समझा था हासिल लाख सिजदों का
फिराया है उसी काफ़िर ने तुझ को कू-ब-कू[20] बरसों

❖❖❖❖

---

1. उत्कंठा 2. तलाश 3. अकेलापन 4. प्रत्यक्ष 5. छुपा छुपा 6. सामने 7. फूल और कलियाँ 8. तैयार 9. वार्तालाप 10. घास फूस 11. बात चीत 12. शराब का प्याला 13. मस्ती भरा प्याला 14. इच्छुक 15. बहानू-बाज़ 16. अहंकारी 17. इज़्ज़त 18. शब्दों को 19. चेतना 20. गली गली

38

ऐसा भी हुआ है रातों को जब उठ उठ कर हम रोए हैं
ज़ख़्मों के फूल खिलाए हैं, अश्कों के हार पिरोए हैं

तेरी तसवीर को देखा है, तेरी तसवीर को चूमा है
यूँ आँखों को बहलाया है, यूँ सूखे होंठ भिगोए हैं

इस जोशे-जुनूं[1] की क्या कहये, बे-होशी भी बे-चैनी भी
मुद्दत से तुम्हारे दीवाने न जागे हैं न सोये हैं

इस दर्दे-मुहब्बत ने आख़िर एहसान किया है दोनो पर
कुछ हम भी परेशां-हाल से हैं, कुछ आप भी खोए खोए हैं

सौ बार तुम्हारी महफ़िल में इस दिल को सदमा पहुँचा है
सौ बार तुम्हारी महफ़िल में हम आँख बचा कर रोए हैं

❖❖❖❖

---

1. उन्माद

39

तेरी मानें तो पारसा[1] हो जाएँ
एक ग़मनाक हादिसा हो जाएं

एक सहमी हुई सदा[2] हो जाएं?
एक टूटा हुआ दिया हो जाए?

उम्रे-रफ़्ता[3] का मरसिया[4] हो जाएं?
आप अपना ही फ़ातिहा[5] हो जाए?

जिन की पहचान ऐब ही से हो
वो भला कैसे बा-सफ़ा[6] हो जाएं?

आदमी ख़ाक भी, बगूला भी
हम जो चाहें तो क्या से क्या हो जाएं

ऐन मुम्किन है, तुझ में गुम हो कर
जुज़्वो-कुल का मुआमिला[7] हो जाएं

हम पे पड़ जाए गर नज़र तेरी
अपनी नज़रों में हम ख़ुदा हो जाएँ

सर-फ़राज़ी[8] सी सर-फ़राज़ी हो
हम अगर तेरा नक़्शे-पा[9] हों जाएँ

मेरे नग़्मो को आरज़ू है यही
बन-संवर कर तिरी क़बा[10] हो जाएँ

मेरे अश'आर पर ये लाज़िम है
हम्द[11] तेरी, तिरी सना[12] हो जाएं

मेरी नज़्में हों या मिरी ग़ज़लें
तेरे हक़ में सभी दुआ हो जाएं

सामने आ कि रू-ब-रू[13] देखें
हो न हो, तेरा आइना हो जाएं

क्या अजब है कि एक दिन हम भी
तेरी हस्ती का मुद्'आ[14] हो जाएं

क़ैस साहिब को रोज़ रोज़ न टाल
कहीं ऐसा न हो, ख़फ़ा हो जाएं!

❖❖❖❖

---

1. पवित्र 2. आवाज़ 3. वीता जीवन 4. मृत्युगान 5. मृतक के लिये प्रार्थना 6. गुणवान 7. पूर्ण और अपूर्ण का विषय 8 प्रतिष्ठा 9 पद-चिन्ह 10. पोशाक 11. स्तुति 12. प्रशंसा 13. आमने समाने 14. लक्ष्य

40

जिस से ग़ज़ल मुराद[1] है उसको बुलाओ तो
जैसे भी हो सके उसे महफ़िल में लाओ तो

वो पैकरे-जमाल[2] भी है, जाने-हुस्न[3] भी
इस अंजुमन[4] को आज उसी से सजाओ तो

वो नग़्मगी[5] भी, नूर[6] भी, नकहत[7] भी, रंग भी
क्या कुछ नहीं है उसमें, अगर देख पाओ तो

फिर आरती उतारो उसी मस्ते-नाज़ की
साग़र खनक उठें जो उसे गुनगुनाओ तो

शम्में तो जल रही हैं मगर रौशनी नहीं
उन आरिज़ों[8] की लौ ज़रा इन को दिखाओ तो

जामो-सबू[9] की ख़ैर हो, ऐ पीरे-मैकदा[10]
रिन्दों को आज उसकी नज़र से पिलाओ तो

दुनिया के तज़किरों[11] से तो उक्ता चला है जी
छेड़ो उसी की बात, उसी की सुनाओ तो

रंगे-फ़िराक़-ओ-मीर जो मंज़ूर हो तुम्हें
उस मह-जबीं[12] को सामने मेरे बिठाओ तो

इस बहरे-बेकरीं[13] से निकलना मुहाल[14] है
लेकर खुदा का नाम यहीं डूब जाओ तो

ख़ूने-जिगर[15] से बनती नहीं क़ैस की ग़ज़ल
थोड़ा सा इस में रंगे-हिना[16] भी मिलाओ तो

❖❖❖❖

---

1. उपमा 2. सौंदर्य की मूर्ति 3. सौंदर्य की जान 3. महफ़िल 5. गीत 6. उजाला 7. खुशबू 8. गाल 9. प्याले 10. मदिरालय का प्रबंधक 11. बातें 12. चंद्रमुखी 13. अथाह समुद्र 14. मुश्किल 15. दिल का ख़ून 16. मेंहदी का रंग

41

थाम लो दिल मिरा, सीने से लगा लो मुझको
मैं बिखर जाने को हूँ , आओ संभालो मुझको

बाद मुद्त के बड़े शौक़ से रूठा हूँ मैं
मान भी जाओ, किसी तरह मना लो मुझको

यह तो सच है के मैं अपना नहीं, बेगाना हूँ
बन के अनजान, कभी अपना बना लो मुझको

मैं ज़रा आँख से ओझल हूँ मगर हूँ तो सही
देके आवाज़ किसी वक़्त बुला लो मुझको

मैं कभी अश्के-नदामत[1], कभी सोज़े-उलफ़त[2]
कभी पलको में, कभी दिल में छुपा लो मुझको

मैकदे वालो[3], वड़ी देर का प्यासा हूँ मैं
चश्मे-साक़ी[4] की क़सम, और ना टालो मुझको

चाँद तारों से भी कुछ दूर है बस्ती मेरी
दोस्तो! और ज़रा और उछालो मुझको

क़ैस हूँ, दश्त-नवर्दी[5] से अभी लौटा हूँ
इतनी जल्दी तो न बस्ती से निकालो मुझको

❖❖❖❖

1. शर्म के आंसू 2. प्रेम-अग्नि 3. मदिरालय वालो 4. साक़ी की आंख 5. बयाबानों में घूमते फिरना

42

दीदा-ओ-दिल[1] को है इसरार, अभी रूक जाओ
हर रगे-जां[2] है तलबगार, अभी रूक जाओ

आँख कहती है कि दीदार की हसरत है अभी
फिर ज़रा देख ले इक बार, अभी रूक जाओ

होंट कहते हैं कि हर बात अधूरी ही रही
और इक लमह-ए-गुफ़्तार[3], अभी रूक जाओ

हाथ बांधे दरो-दीवार खड़े हैं कब के
बात करने से हैं लाचार, अभी रूक जाओ

तुम चले जाओगे हो जाएंगी सांसें बोझल
कौन झेलेगा ये आज़ार, अभी रूक जाओ

शाम हो जाएगी बे-हाल ग़मे-फुर्क़त[4] में
रात पड़ जाएगी बीमार, अभी रूक जाओ

रू-ए-अफ़लाक[5] पे छाए हैं घनेरे बादल
अभी छिड़ने को है मलहार, अभी रूक जाओ

ज़र्रे ज़र्रे की ज़बां पर हैं नए पैग़ामात
खुल चला आलमे-असरार[6] अभी रूक जाओ

तुम और आसूदगीए-कौनो-मकाँ[7] क़ब्ज़े में
मैं और आलाम की यलग़ार[8], अभी रूक जाओ

यह घटा टोप अँधेरा, यह सियाही हर सू
और इधर ताबिशे-रूख़सार[9], अभी रूक जाओ

भीगा भीगा सा ये माहौल कुछ ऐसा है कि अब
गर्मीए-हुस्न है दरकार, अभी रूक जाओ

फिर मिरे दिल में तमन्नाओं ने करवट बदली
इश्क़ होने लगा बेदार, अभी रूक जाओ

क़सरे-उम्मीद[10] कि बरसों में हुआ है तामीर
हो ना जाए कहीं मिसमार[11], अभी रूक जाओ

आज कुछ प्यार भरे गीत सुनाने हैं तुम्हें
और कुछ क़ैस के अशआर, अभी रूक जाओ

❖❖❖❖

---

1. मन और आंखें 2. जीवन नाड़ी 3. वार्तालाप का क्षण 4. विरह दुख 5. आकाश 6. भेदों का संसार 7. जहान भर का सुख 8. दुखों का हमला 9. गालों की चमक 10 आशाओं का महल 11. बरबाद

43

संभले से इशारात[1], हों संभली सी नज़र हो
पहली सी मोहब्बत ना सही, कुछ तो मगर हो

साग़र[2] हो, सुराही हो, मैए-ज़ूद-असर[3] हो
जीना कोई मुश्किल नहीं, सामान अगर हो

चौखट हो कि दहलीज़, दरीचा हो कि दर हो
जैसा भी हो, कहने के लिए कोई तो घर हो

हम जिसकी तजल्ली[4] के हैं मुश्ताक़ अज़ल[5] से
वो काफ़िरे-आफ़ाक़[6], खुदा जाने किधर हो?

हम जान भी दे दें तो कोई देखे न देखे
वो होंट हिला दे तो ज़माने को ख़बर हो

तनहाई में रहकर भी मैं तनहा नहीं रहता
रहता है कोई साथ, सफ़र हो कि हज़र[7] हो

सब की यह दुआ है कि मैं इस रोग से छूटूं
मेरी यह दुआ है कि दुआ में न असर हो

अब जाने दे, जाने दे मुझे, ए शबे-हिजरां[8]!
शब भर तो रूके वो जिसे उम्मीदे-सहर[9] हो

इस बज़्मे-अदीबाँ[10] में भला क़ैस का क्या काम?
उस रिंदे-ख़राबात[11] में कोई तो हुनर हो!

❖❖❖❖

1. इशारे 2. प्याला 3. जल्द असर करने वाली शराब 4. चमक दमक 5. आदिकाल से 6. पक्का काफ़िर 7. स्थायी 8. विरह रात्रि 9. सुबह होने की आस 10. विद्वानों की सभा 11. बिगड़ा हुआ शराबी

44

नज़र का दे के सहारा बचा लिया मुझ को
मैं गिर रहा था, किसी ने उठा लिया मुझ को

मैं रूठने ही लगा था कि उन निगाहों ने
गले में डाल के बाहें मना लिया मुझ को

मैं एक अश्क[1] था लेकिन किसी की पलकों ने
जहान भर की नज़र से छुपा लिया मुझ को

ये दोस्ती थी कि जादू-गरी कि राह-ज़नी[2]?
नज़र बचा के मुझी से चुरा लिया मुझ को

मैं आसमां पे बड़ी आफ़ियत[3] से बैठा था
ग़मे-जहां[4] ने ज़मीं पर बुला लिया मुझ को

किसी खुशी ने मुझे आज तक न पहचाना
तुम्हारे ग़म ने गले से लगा लिया मुझ को

ये ज़िन्दगी तो मुझे क़त्ल करने वाली थी
भला हो मौत का जिसने बचा लिया मुझ को

❖❖❖❖

---

1. आंसू 2. रास्ते में लूट लेना 3. आराम 4. दुनिया के दुख

45

दिन भर तो महकता रहा फूलों की तरह तू
रात आई, चमकने लगा तारों की तरह तू

यादों में उभरता रहा बन बन के फ़रिश्ता
ख़्वाबों में नज़र आया तो परियों की तरह तू

तू फूल भी, तितली भी, शफ़क़[1] और धनक भी
छाया है मिरी फ़िक्र[2] पे रंगों की तरह तू

तू सब से जुदा, सब से अलग, सब से अनोखा
लगता है मुझे मीर[3] के शे'रों की तरह तू

तुझ से कभी मिलते हैं तो अपनो की तरह हम
हम से कभी मिलता है तो ग़ैरों की तरह तू

जब चाहते, सीने से लगा लेते तुझे हम
ऐ काश कि होता तिरी यादों की तरह तू

ये साथ किसी तौर छुटा है न छुटेगा
काँटों की तरह हम है तो फूलों की तरह तू

औरों की रविश[4] और हैं, अपनी है रविश और
औरों की तरह हम हैं न औरों की तरह तू

ये इश्क़ है, बाज़ीच-ए-अतफ़ाल[5] नहीं है
आ, खेल! मगर खेल ना बच्चों की तरह तू

ये क़ैस दिवाना नहीं, मख़मूरे-अज़ल[6] है
इस से न झिझक और हसीनों की तरह तू

❖❖❖❖

1. आकाश की लालिमा 2. सोच 3. उर्दू के प्रसिद्ध कवि 4. चलन 5. बच्चों का खेल 6. आदिकाल से मस्त

46

हटा लो ये दैरो-हरम,[1] दोस्तो
मुझे मिल गया जामे-जम[2], दोस्तो

मिलीं हुस्न की रूह-फ़रसाईयां[3]
मिले इश्क़ के पेचो-ख़म[4], दोस्तो

कहां की हक़ीक़त[5], कहां का मजाज़[6]?
कहां के वुजूदो-अदम[7], दोस्तो

ज़माने की गर्दिश का चारा नहीं
हुई है न होगी ये कम दोस्तो

रवय्ये पुराने, बहाने नए
खुला दोस्ती का भरम, दोस्तो

चलो, मैकदे की ज़ियारत[8] करें
डुबो आएं दो चार ग़म, दोस्तो

ये अल्फ़ाज़ का रक़्से-जादू-असर[9]
ये आवाज़ के ज़ेरो-बम[10], दोस्तो

कहीं दिल-सतानी[11] की अर्ज़े-जमील[12]
कहीं फ़िक्रो-फ़न का इरम[13], दोस्तो

कहीं गंगा-जमुना की सरगोशियां
कहीं रमज़े-मिसरो-अजम[14], दोस्तो

इन्हीं से इबारत मिरी शायरी
इन्हीं से है ज़ोरे-क़लम, दोस्तो

''फ़ज़ाए-बयाबां[15] ने दी है ख़बर''
लिया क़ैस ने फिर जनम, दोस्तो

❖❖❖❖

1. मन्दिर-मस्जिद 2. ईरान के बादशाह जमशेद का प्याला जिसमें हर चीज़ नज़र आती थी 3. आत्मा को झुंझलाने वाली 4. पेचीदा 5. असलीयत 6. बनावट 7. होना न होना 8. यात्रा 9. शब्दों का जादुई असर 10. उतार-चढ़ाव 11. प्यार 12. सुन्दर धरती 13. सोच और कला का स्वर्ग 14. फ़ारसी-अरबी साहित्य के इशारे 15. बयाबान का वातावरण

47

तिरे हुस्न ने है बख़्शा ये मिज़ाजे-आशिक़ाना[1]
तिरी दिलकशी[2] ने सौंपी ये नवाए-शायराना[3]

मिरा दिल हुआ है जब से तिरी आँख का निशाना
ये फ़ज़ा[4] है बहकी-बहकी, ये जहां शराब-ख़ाना

मैं ज़मीं का एक ज़र्रा, तू फ़लक[5] का इक सितारा
मिरे हाथ में लकीरें तिरे हाथ में ज़माना

न ख़ुदा की सोचता हूँ न बुतों की सूझती है
मिरे दिल को भा गई है तिरी शाने-काफ़िराना[6]

कभी मैकदे[7] के दर पर, कभी तेरी रहगुज़र[8] में
मिरी रात कट गई है जहां मिल गया ठिकाना

कई बार सुन चुका था तिरे हुस्न की कहानी
कई बार कह चुका हूँ तिरे इश्क़ का फ़साना

कोई क़ैस जी से पूछे, यह कलाम[9] है तो किस से?
सभी लोग जानते हैं कि ग़ज़ल तो है बहाना

❖❖❖❖

---

1. आशिक़ाना मिज़ाज 2. आकर्षण 3. शायराना आवाज़ 4. वातावरण 5. आकाश 6. काफ़िराना शान 7. मधुशाला 8. रास्ता 9. वार्तालाप

48

गुज़रते जा रहे हैं माहो-साल[1] आहिस्ता आहिस्ता
बदलते जा रहे हैं ख़द्‌ो-ख़ाल[2] आहिस्ता आहिस्ता

अभी तक तमतमाते हैं जो माज़ी की शुआओं[3] में
अयां[4] होगा इन्हीं चहरों से हाल आहिस्ता आहिस्ता

कोई इतना तो समझा दे मिरे तीमारदारों[5] को
खुदा के वास्ते पूछें सवाल आहिस्ता आहिस्ता

मक़ामो-वक़्त[6] की पगडंडियों पर एक मुद्दत से
लिए फिरतें है कुछ ख़्वाबो-ख़याल आहिस्ता आहिस्ता

अजब था वार उसका जिसने यक-दम ख़ाक कर डाला
मज़ा जब था कि हम होते निढाल आहिस्ता आहिस्ता

ग़ज़ल-गोई[7] कोई मुश्किल नहीं पर वाक़या ये है
ग़ज़ल-गोई में आता है कमाल आहिस्ता आहिस्ता

यह तेरा क़ैसे-बेकस[8], ऐन मुमकिन है, संभल जाता
अगर होता तमाशाए-जमाल[9] आहिस्ता आहिस्ता

❖❖❖❖

1. वक्त 2. नैन-नक़्श 3. बीते समय की किरनों में 4. ज़ाहिर 5. रोगी का हाल पूछने वाले 6. स्थान और समय
7. ग़ज़ल कहना 8. बे-सहारा 9. सौंदर्य प्रदर्शन

49

बात होंटों पे चली आई है
अब तो रूसवाई ही रूसवाई है

दिल धड़कने की भी आवाज़ नहीं
कोई तनहाई सी तनहाई है?

इक फ़क़त आप नहीं हैं, वरना
रात है, चाँद है, पुरवाई है

ख़ूने-बुलबुल ने निखारा है चमन[1]
लोग कहते हैं, बहार आई है

यूं तो हर चीज़ है प्यारी उसकी
फिर भी हरजाई तो हरजाई है

फिर वो नज़रें, वही नज़रें उट्ठीं
हो न हो, मेरी क़ज़ा[2] आई है

हर अदा उसकी है क़ातिल क़ातिल
फिर भी इक शाने-मसीहाई[3] है

मौत को चाहिए, आराम करे
हम ने जीने की क़सम खाई है

❖❖❖❖

1. बाग़ 2. मौत 3. जीवन देने वाला ईश्वरत्व

50

दिलो-नज़र में अगर रश्के-हूर[1] है कोई
कोई बताए कि मेरा कुसूर है कोई?

अगरचे मेरी रसाई[2] से दूर है हर शै
मिरी निगाह की ज़द[3] में ज़रूर है कोई

वुफूरे-ग़म[4] मैं भी कैफ़ो-नशात[5] का आलम
निज़ामे-दहर[6] में वजहे-सुरूर[7] है कोई

कभी कभी तो जुदाई में यूँ हुआ महसूस
कि खलवतों[8] में भी मेरे हुज़ूर है कोई

इधर गुदाज़े-मोहब्बत[9] में दिल की सरशारी[10]
उधर ख़ुमारे-जवानी[11] में चूर है कोई

वही चमक, वही ताबिश[12], वही फुसूं-कारी[13]
तिरा जमाल[14] है या बर्क़े-तूर[15] है कोई

तिरे ख़्याल की सोहबत में यूं लगा जैसे
न आस पास है कोई न दूर है कोई

सुनीं जो क़ैस की बातें तो बरमला[16] बोले
तिरी समझ में यक़ीनन फुतूर है कोई

❖❖❖❖

---

1. परी से भी अधिक सुन्दर 2. पहुंच 3. मार 4. दुखों की ज्यादती 5. मस्ती और खुशी 6. दुनिया के कारोबार 7. मस्ती का कारण 8 अकेले पन में 9. प्रेम लगन 10. अति मस्त होना 11. जवानी का नशा 12. चमक दमक 13. जादूगरी 14. सौंदर्य 15 वो बिजली जो तूर के पहाड़ पर गिरी थी 16. साफ़ साफ़

51

किसी को लूट गईं दिल-रूबाईयाँ[1] तेरी
किसी को मार गईं कज-अदाईयाँ[2] तेरी

निज़ामे-दहर[3] को कैसा पलट दिया तू ने?
कि ख़ल्क़ देने लगी है दुहाईयाँ तेरी

अजब नहीं कि शफ़क़[4] का भी रंग उड़ जाए
कहीं जो देख ले जलवा-नुमाईयाँ[5] तेरी

दुआ को हाथ उठाना तिरा ब-वक़्ते-सहर[6]
वो गोरे हाथ, वो गोरी कलाईयाँ तेरी

ज़माना किस लिए कहता है बे-वफ़ा तुझ को?
हमें, तो याद नहीं बे-वफ़ाईयाँ तेरी

तुझे मिले भी तो आँखें तुझे न देख न सकीं
नज़र में झूम रही थीं जुदाईयाँ तेरी

दिलो-दिमाग़ में रक़्सां[7] हैं तेरी तहरीरें[8]
अज़ीज़-तर[9] हैं मगर ख़ुश-नवाईयाँ[10] तेरी

मिरी ग़ज़ल पे अनादिल[11] भी रश्क[12] फ़रमाएं
अगर नसीब हों नग़्मा-सराईयाँ[13] तेरी

ज़माना भूल न पाएगा रोज़े-महशर[14] तक
जबीने-क़ैस के सिजदे[15], ख़ुदाईयाँ तेरी

❖❖❖❖

1. मन लुभावनी अदाएं 2. बांकी चितवन 3. संसारिक खेल 4. आकाश की लालिमा 5. जलवा दिखाना 6. सुबह के वक्त 7. नाचती हुई 8. चिट्ठी-पत्री 9. ज़्यादा प्यारी 10. मनमोहनी बातें 11. बुलबुलें 12. ग़ज़ल जैसा बनने की इच्छा 13. गायकी 14. क़्यामत का दिन 15. सर झुकाना

52

पास आओ तो कोई बात बने
मुस्कुराओ तो कोई बात बने

रूठने से तो बात बढ़ती है
मान जाओ तो कोई बात बने

बीती बातों में कुछ नहीं रक्खा
भूल जाओ तो कोई बात बने

मैं तुम्हारा नही तो किस का हूँ?
यह बताओ तो कोई बात बने

रोज़े-महशर[1] तो रोज़े-महशर है
आज आओ तो कोई बात बने

मैं कड़े कोस का मुसाफ़िर हूँ
साथ आओ तो कोई बात बने

मेरी बाहें संभाल लें गी तुम्हें
डगमगाओ तो कोई बात बने

हाथ तो हर कोई मिलाता है
दिल मिलाओ तो कोई बात बने

हर तरफ़ छा रही है तारीक़ी[2]
जगमगाओ तो कोई बात बने

जामो-मीना[3] बुझे बुझे से हैं
आँख उठाओ तो कोई बात बने

मेरी दुनिया है गोश-बर-आवाज़[4]
लब हिलाओ तो कोई बात बने

हर ज़बां पर है दास्ताँ मेरी
तुम सुनाओ तो कोई बात बने

दिल में रखते हो क़ैस की गज़लें?
गुनगुनाओ तो कोई बात बने!

❖❖❖❖

1. कयामत का दिन 2. अंधेरा 3. प्याला और सुराही 4. आवाज़ पर कान लगाए हुए

53

जफ़ा[1] जो जी को जलाए तो उस को क्या कहिए
वफ़ा[2] भी रास न आए तो उस को क्या कहिए

किसी के ख़्वाब सताऐं तो उनका क्या कीजे
किसी की याद रूलाए तो उस को क्या कहिए

जो सामने ही न आए तो उसको क्या देखें
जो आँख ही न मिलाए तो उसको क्या कहिए

जो मिल भी जाए तो ऐसे के जानता ही नहीं
न कुछ सुने न सुनाए तो उस को क्या कहिए

ख़ुदा-तरस[3] है मगर फिर भी वो बुते-काफ़िर[4]
सितम[5] से बाज़ न आए तो उसको क्या कहिए

नसीमे-सुब्ह[6] जो उसकी गली से गुज़री है
मिरी गली में न आए तो उसको क्या कहिए

वो एक झोंका जो उसके बदन से खेला है
इधर से हो के न जाए तो उसको क्या कहिए

वो बिजलियों की लपक हो कि जुगनुओं की चमक
जिगर में आग लगाए तो उसको क्या कहिए

गुलों के सोग में बुलबुल की मरसिया-ख़्वानी[7]
दिलों को चीर सी जाए तो उसको क्या कहिए

कोई हसीन कली ओस में नहाती हुई
जो अंग अंग छुपाए तो उसको क्या कहिए

ज़बाने-क़ैस पे लुत्फ़े-विसाल[8] की बातें
वो सुन के झेंप सा जाए तो उसको क्या कहिए

❖❖❖❖

1. बुराई 2. भलाई 3. भगवान से डरने वाला 4. प्रेमिका 5. अत्याचार 6. सुब्ह की मंद पवन 7. मृत्यु-गान 8. मिलन का आनंद

54

मुझ से रग़बत है तो फिर मुझसे छुपाता क्या है
आँख से आँख मिला, झेंप सा जाता क्या है?

मैं ने देखी है तिरी मस्त-निगाही की अदा
रक़्से-पैमाना[1] मिरे दिल को लुभाता क्या है

ये तो माना कि तिरी शाम सुहानी गुज़री
बात अग़यार[2] की है, मुझ को सुनाता क्या है?

रंजो-ग़म, जौरो-सितम[3], दिल-शिकनी[4], दिल-सोज़ी[5]
अपने एहसान भला मुझ पे जताता क्या है?

मैं जो रूठा हूँ तो रूठा ही मुझे रहने दे
झूठे वादों से, मिरी जान, मनाता क्या है

तू हर इक बज़्म[6] की रौनक़, मैं कहीं का भी नहीं
किस को मालूम कि तेरा मेरा नाता क्या है

अब वो पहले से तअल्लुक़ तो नहीं हैं, फिर भी
''देख कर मुझ को तिरे ज़ेहन[7] में आता क्या है?''

मेरे घर के दरो-दीवार[8] भी कहते हैं यही
भूला भटका कभी आ जा, तिरा जाता क्या है?

क़ैस बेज़ार है तुझ से तो कोई बात नहीं
बात तो यह है कि इस शख़्स को भाता क्या है?

❖❖❖❖

---

1. प्याले का नृत्य 2. पराये लोग 3. अत्याचार 4. दिल का टूटना 5. दिल का जलना 6. महफ़िल 7. मन 8. दरवाज़े और दीवारें

55

तुम को सीने से लगा लूं गा, तुम आओ तो सही
अपनी पलकों पे बिठा लूं गा, तुम आओ तो सही

अपनी बाहों में सुला लूं गा, तुम आओ तो सही
कुछ लगी दिल की बुझा लूं गा, तुम आओ तो सही

कहीं जज़्बात[1] की कलियाँ, कहीं नग़मात[2] के फूल
घर का हर ताक़ सजा लूं गा, तुम आओ तो सही

ग़म के आसार[3] जो ज़ीनत है मिरे चहरे की
इन को चहरे से हटा लूं गा, तुम आओ तो सही

चश्मे-नम[4] पोंछ के रक्खूंगा तुम्हारी ख़ातिर
दिल का हर ज़ख़्म छुपा लूं गा, तुम आओ तो सही

सर तो क्या चीज़ है? इन पांव के सदक़े, ऐ दोस्त!
आसमां को भी झुका लूं गा, तुम आओ तो सही

तुम अगर रूठ भी जाओ तो कोई बात नहीं
इक ग़ज़ल कह के मना लूं गा, तुम आओ तो सही

तश्नाकामी[5] की क़सम, शाम के आते ही तुम्हें
सूरते-जाम[6] उठा लूं गा, तुम आओ तो सही

साअते-वस्ल[7] की मैयाद[8] बढ़ाने के लिए
दिन को भी रात बना लूं गा, तुम आओ तो सही

तुम को कुछ प्यार भरे गीत सुनाने के लिए
क़ैस साहब को बुला लूं गा, तुम आओ तो सही!

❖❖❖❖

1. मनोभाव 2. गीत 3. चिन्ह 4. भीगी आंखें 5. प्यास 6. प्याले की तरह 7. मिलन की घड़ी 8. अवधि

56

न जाने, कब से चालें चल रही थी दिल-लगी तेरी
कि अब तो रात दिन होने लगी है बंदगी तेरी

वफ़ाऐं हों, जफ़ाऐं हों, शिकायत क्या? तक़ाज़ा[1] क्या?
तिरी महफ़िल, तिरे जलवे, रज़ा तेरी, ख़ुशी तेरी

ये क्या था जिस ने ख़्वाबे-मस्त से चौंका दिया मुझ को?
कोई आवाज़ थी या भूली-बिसरी याद थी तेरी?

तिरी फुरक़त[2] में भी एहसास होता है रफ़ाक़त[3] का
"तिरी मौजूदगी में भी खटकती है कमी तेरी"

कभी फ़रहादो-शीरीं[4] के फ़साने थे मगर अब तो
ज़माना बात करता है कभी मेरी, कभी तेरी

तिरी महफ़िल में यूँ तो सैकड़ों बातें सुनीं हम ने
मगर कानों में अब तक गूंजती है अनकही तेरी

यह सच हैं, ख़ू-ए-इन्सानी[5] न बदली है न बदलेगी
वही मसलक[6] रहा मेरा, वही आदत रही तेरी

यही तर्ज़े-तअल्लुक़[7] है तो क्या तर्ज़े-तअल्लुक़ है?
तग़ाफुल[8] मुस्तक़िल[9] तेरा, तवज्जो[10] आरिज़ी[11] तेरी

उधर वो कै़से-नम-दीदा[12], इधर हंसती हुई आँखें
यही इख़लास[13] है तेरा, यही है दोस्ती तेरी?

❖❖❖❖

1. बहस 2. बिरह 3. संगत 4. ईरान का प्रसिद्ध प्रेमी जोड़ा 5. मनुष्य का स्वभाव 6. चलन 7. व्यवहार 8. उपेक्षा 9. स्थायी 10. ध्यान देना 11. अस्थायी 12. भीगी आंखों वाला से 13. निष्कपटता

57

मेरे जज़्बात को सहलाओ कि कुछ रात कटे
मेरे एहसास को समझाओ कि कुछ रात कटे

मेरी भूली हुई यादो, मुझे अपना समझो
आओ, आ कर मुझे थपकाओ कि कुछ रात कटे

वो कहानी जो मुझे गोद में ले लेती थी
उस कहानी ही को दोहराओ कि कुछ रात कटे

जुगनुओ, इतना न चमको कि कोई सो न सके
मेरी सुन पाओ तो सो जाओ कि कुछ रात कटे

जाने-मन, आज बहुत देर के बा'द आई हो
आज आँखों में समा जाओ कि कुछ रात कटे

दिन भी भारी था मगर कट ही गया रो धो कर
रात फिर रात है, रूक जाओ कि कुछ रात कटे

तुम चली जाओगी, उड़ जाएेंगी नीदें मेरी
कुछ ज़रा और ठहर जाओ कि कुछ रात कटे

दिले-मुज़्तर[1] का तड़पना नहीं देखा जाता
किसी सूरत इसे बहलाओ कि कुछ रात कटे

तश्नाकामी[2] की क़सम, आज तकल्लुफ़ न करो
जिस क़दर हो सके, छलकाओ कि कुछ रात कटे

यह तसल्ली, यह तशफ़्फ़ी[3], यह दिलासे छोड़ो
इक ग़ज़ल क़ैस की सुनवाओ कि कुछ रात कटे

❖❖❖❖

---

1. व्याकुल मन 2. प्यास 3. सांत्वना, सहारा

58

देने लगे हैं लोरियाँ दीवारो-दर मुझे
यह कौन याद आ गया पिछले पहर मुझे

लेनी पड़ी है बाद-ए-गुलफ़ाम[1] की पनाह
बहका रही थी शाम से तेरी नज़र मुझे

बादे-बहार[2] आई बयाबाँ में भी, मगर
वा-हसरता[3] कि लौट गई देख कर मुझे

मिल ही गया बगूलों से मेरा पता तुझे
पुरवाईयों से मिल गई तेरी ख़बर मुझे

तेरी गली तो तेरी गली है, ख़ुदा पनाह!
यां काटने को दौड़ता है मेरा घर मुझे

सौ मशवरों से भी न कोई बात बन सकी
शिकवे उधर उन्हें रहे, शिकवे इधर मुझे

इक मैं कि तुम का याद न आया तमाम उम्र
इक तुम कि याद आए हो आठों पहर मुझे

साक़ी की चशमे-मस्त[1] भी क्या बे-लिहाज़ थी
इक इक को टाल टाल गई, ख़ास कर मुझे

हर लमहा तेरी याद से रहता हूँ हम-कलाम[5]
क्यों टोकती है गरदिशे-शामो-सहर[6] मुझे?

मंज़िल मिली तो पास से हो कर गुज़र गया
उठ उठ के देखती रही गरदे-सफ़र[7] मुझे

यह कौन सा मक़ाम है राहे-वफ़ा[8] में, क़ैस?
मैं हम-सफ़र को ढूंढता हूँ, हम-सफ़र मुझे!

❖❖❖❖

1. लाल रंग की शराब 2. वसंत ऋतु की पवन 3. अफ़सोस 4. नशीली आंख 5. वार्तालाप करना 6. दिन रात का चक्र 7. सफ़र की धूल 8. प्यार की डगर

59

अब तुझ से किसी बात का शिकवा भी नहीं है
हालाँकि वतीरा[1] तिरा अच्छा भी नहीं है

आँखों में वो मुबहम[2] से इशारे भी नहीं हैं
होटों पे कोई झूटा सा वा'दा भी नहीं है

उम्मीदे-वफ़ा[3] तूम से अगर थी तो कभी थी
अब तो दिले-नादां[4] को यह धोका भी नहीं है

तू चाहे तो हाल अपना सुना दें तुझे खुल कर
तुझ से तो किसी बात का पर्दा भी नहीं है

बस एक झलक पाई कि चुंधिया गईं आँखें
हम ने तो तुझे ग़ौर से देखा भी नहीं है

अब और सितम[5] सहने की ताक़त नहीं, लेकिन
दिल है कि तिरी बज़्म[6] से उठता भी नहीं है

तू रूह का मालिक भी, दिलो-जां का अमीं[7] भी
कहने को तो तुझ से कोई रिशता भी नहीं है

यह क़ैस न मोमिन है न सूफ़ी है मगर देख!
जो तू ने समझ रक्खा है, वैसा भी नहीं है

❖❖❖❖

1. व्यवहार 2. अस्पष्ट 3. भलाई की आशा 4. मूढ़-मन 5. अत्याचार 6. महफ़िल 7. अमानती

60

ज़िन्दगी भर की मुदारात[1] का सामां हो जाए
रात की रात अगर वो मिरा मेहमां हो जाए

फिर मिरे सामने इक चाँद सा चेहरा चमके
फिर मिरी आँख उसे देख के हैरां हो जाए

मेरी तख़ईल[2] ब-सद-नाज़[3] क़सीदे[4] लिक्खे
मेरा एहसास[5] ब-सद-शौक़[6] ग़ज़ल-ख्वाँ[7] हो जाए

मेरे जज़्बात की कलियाँ, मेरे नग़मात के फूल
ऐसे महकें कि ये घर रश्के-गुलिस्तां[8] हो जाए

कहीं जुगनू, कहीं तारे, कहीं फ़ानूसे-ख़याल[9]
ऐसे चमकें कि जहां भर में चिराग़ां[10] हो जाय

डाल जा फिर वही निगहे-ग़लत-अन्दाज़,[11] ऐ दोस्त!
क्या बुरा है जो किसी पर कोई एहसां हो जाए?

इश्क़ हर हाल में परदे पे यक़ीं रखता है
हुस्न जब चाहे, जहाँ चाहे, नुमायां[12] हो जाए

दिले-वहशी[13], तुझे सह्‌रा की ज़रूरत क्या है?
ख़ाक उड़ा ऐसी कि बस्ती ही बयाबां[14] हो जाए

उम्र भर क़ैस ने पूजा उसी काफ़िर बुत को
हम ने तो लाख कहा था कि मुसलमां हो जाए

❖❖❖❖

---

1. आव-भगत 2. सोच 3. अति गौरव के साथ 4. गुण-गान 5. अनुभूति 6. अति लगन के साथ 7. गायक 8. बाग़ से भी सुन्दर 9. ख़यालों की जगमगाहट 10. दीप्तिमान, आलोक्ति 11. ग़लती से पड़ने वाली नज़र 12. प्रगट 13. पागल मन 14. उजाड़

61

अब दिल भी अपने भेद हमीं से छुपाए है
पूछे कोई के क्यों उसी काफ़िर[1] पे आये है

जब भी तिरी तलाश को निकले, भटक गए
है कोई रास्ता जो तिरे घर को जाए है?

दीवानगीए-शौक़[2] ने क्या हाल कर दिया?
अब तो निगाहे-नाज़[3] भी दामन[4] बचाए है

अब ख़लवतों[5] में लुत्फ़े-तसव्वुर[6] नहीं रहा
अब तो ख़याले-यार भी डर डर के आए है

अब हम तो इन्तज़ार की शम्में बुझा चुके
दिल फिर भी तेरी आस के दीपक जलाए है

है जान इज़्तराब[7] में, नब्ज़ें निढाल हैं
वो कौन है जो दूर खड़ा मुस्कुराए है?

यह ज़िन्दगी तो हम को कभी की भुला चुकी
अब क्या करें कि मौत भी आँखें चुराए है

क्या बात है कि कोई किसी का नहीं रहा?
सहरा[8] भी अब तो क़ैस से पीछा छुड़ाए है

❖❖❖❖

1. महबूबा 2. प्रेम का दीवानापन 3. प्रेमिका की नज़र 4. पल्लू 5. अकेलापन 6. कल्पना का आंनद 7. बेचैनी 8. बयाबान

62

इज़हारे-तमन्ना[1] न किया है न करेंगे
यूँ इश्क़ को रूसवा न किया है न करेंगे

साक़ी से तक़ाज़ा[2] न किया है न करेंगे
हम ने कभी ऐसा न किया है न करेंगे

जिस बात के सुनने को है बेताब ज़माना
उस बात का चर्चा न किया है न करेंगे

जो दिल पे सितम ढाते हैं ढाते ही रहेंगे
हमने कभी शिकवा न किया है न करेंगे

जल जाएंगे पर एक भी शो'ला न उठेगा
हमने यह दिखावा न किया है न करेंगे

इन्सान हैं हम कोई फ़रिश्ते तो नहीं हैं
ऐसा कभी दावा न किया है न करेंगे

हम पहनेंगे खुद अपना कफ़न अपने ही हाथों
औरों पे भरोसा न किया है न करेंगे

वो रश्के-मसीहा[3] हैं मगर एक कमी है
मुझ क़ैस को अच्छा न किया है न करेंगे

❖❖❖❖

---

1. अभिलाषा का वर्णन 2. मांग 3. मसीहा से भी बेढ़ कर

63

तबा[1] हर हाल में मज़मूं की रवानी मांगे
फ़िक्र[2] अलफ़ाज़[3] के पर्दों में म'आनी[4] मांगे

शौक़ बेगाना-ए-तशरीहो-इबारत[5] ठहरा
अक़्ल गंजीना-ए-असरारे-निहानी[6] मांगें

दिल को आयात[7] से, कलमात[8] से कुछ काम नहीं
जब भी मांगें कोई दिलचस्प कहानी मांगें

हुस्न वो आग कि हर एहले-परस्तिश[9] के लिए
मुस्तक़िल[10] सिलसिला-ए-शोला-फ़िशानी[11] मांगें

इश्क़ वो साँप कि जिसका नहीं मन्तर कोई
इसका काटा हुआ मुश्किल है कि पानी मांगे

मैं वो फ़रज़ाना[12] कि हर बात सलीक़े से कहूँ
''ग़म वो अफ़साना कि आशुफ़्ता-बयानी[13] मांगे''

वो जो इक शख़्स थका हारा सा घर लौटा है
क्या तअज्जुब[14] है अगर शाम सुहानी मांगें?

ऐसे दीवाने को कुछ दे भी तो क्या दे कोई?
जो कड़ी धूप में भी रात की रानी मांगे

वक़्ते-रूख़सत[15] मुझे हसरत थी कि आगे बढ़ कर
कोई सीने से लगे और निशानी मांगे!

मुझ को तो ऐसे समन्दर पे तरस आता है
जो लगे प्यास तो सहराओं से पानी मांगे

दिल को माज़ी[16] से वो रग़बत[17] है कि बहरे-तफ़रीह[18]
नई दुक्कान से भी चीज़ पुरानी मांगे!

क़ैस वैसे तो मये-ज़ोहद[19] का शैदाई[20] है
फिर भी कमबख़्त बुढ़ापे में जवानी मांगे!

❖❖❖❖

---

1. तबीयत 2. सोच 3. शब्द 4. अर्थ 5. व्याख्या से बे-पखा 6. गुप्त भेदों का ख़ज़ाना 7. श्लोक 8. वाणी 9. पुजारी 10. स्थायी 11. शोले बरसाने का सिलसिला 12. बुद्धिमान 13. दुखित वर्णन 14. आश्चर्य 15. विदाई के समय 16. बीता वक़्त 17. लगाव 18. मनोरंजन के लिये 19. संयम की हाला 20. चाहने वाला

64

बज़ाहिर[1] फूलता फलता शजर[2] है
नशेमन[3] को मगर दिन रात डर है

उधर बर्क़े-तपाँ[4] पर तोलती है
इधर ताइर[5] को फ़िक्रे-बालो-पर[6] है

नज़र के ज़ाविये[7] चाहे नए हों
ज़माना तो पुरानी राह पर है

वही अर्ज़ो-समा[8] की गरदिशें हैं
वही हंगामा-ए-शामो-सहर[9] है

सितारों की वही है झिलमिलाहट
वही ताबानी-ए-शम्सो-क़मर[10] है

पतंगों की वही जाँ-सोज़ियां[11] हैं
वही दिलदारिये-रक़्से-शरर[12] है

बहारें अब भी हमर्ददे-चमन[13] हैं
ख़िज़ां की चाल अब भी पुर-ख़तर है

मुसाफ़िर तो जहाँ पर थे, वहीं हैं
बज़ाहिर क़ाफ़िला गर्मे-सफ़र है

कहाँ जाए कोई बहरे-ज़ियारत[14]
हुजूमे-आसतां[15] है, एक सर है

नज़र फिर भी ज़रूरी है, अगर्चे
''तमाशा-ए-जहां मुफ़्ते-नज़र है''

ये उक़दा[16] ख़ूब है पर इसका मतलब
किसे मालूम है, किस को ख़बर है?

बशर[17] का ज़ेहन[18] तो इक कोठड़ी है
न रौज़न[19] है न खिड़की है न दर[20] है

ये किस ने बे-निक़ाबी[21] की ख़ता की
निज़ामे-ज़िंदगी[22] ज़ेरो-ज़बर[23] है

दवा भी दी, दुआ भी कर रहे हैं
मगर बीमार की हालत दिगर[24] है

तिरा आना मिरा दम तोड़ देना
यह क़िस्सा तो बहुत ही मुख़्तसर[25] है

वो बस्ती हो कि जंगल हो कि सहरा[26]
जनाबे-क़ैस का कोई तो घर है

❖❖❖❖

---

1. देखने में 2. पेड़ 3. आशियाना 4. तपती हुई बिजली 5. पक्षी 6. पंख 7. दृष्टिकोण 8. धरती और आकाश 9. सुबह शाम का चक्र 10. सूर्य चांद की चमक दमक 11. दिल का जलना 12. शो'लो का नृत्य 13. बाग़ की हितैषी 14. यात्रा के लिए 15. पूजनीय स्थानों की अधिकता 16 पहेली 17 आदमी 18 मन 19 रौशन-दान 20. दरवाज़ा 21. निकाब उतारना 22. जीवन-लीला 23. उथल-पुथल 24. अजब 25. संक्षिप्त 26. बयावान

65

सितम-ईजाद[1] को मानूसे-सोज़ो-साज़[2] क्या करते?
जो खुद ही राज़ था, उसको शरीके-राज़[3] क्या करते?

खुदा जाने, कहां था वो मगर फिर भी शबे-हिजराँ[4]
उसे देते रहे आवाज़ पर आवाज़, क्या करते?

जहां वो था वहीं मरकूज़[5] थी दुनिया भी, जन्नत[6] भी
अब ऐसे में हम उस से शिकवा-ए-एजाज़[7] क्या करते?

बहुत सोचा, उसे नज़्माएं[8] लेकिन दिल नहीं माना
हम इस तस्वीर को आलूदा-ए-अलफ़ाज़[9] क्या करते?

हमें ख़्वाहिश तो थी ही, आस भी थी फ़ैज़[10] पाने की
मगर वो नाज़नीं निकला सरापा-नाज़[11], क्या करते?

हमारे हाल पर दुनिया बहुत रोई, बहुत रोई
मगर हम उसका हंस देना नज़र-अन्दाज़[12] क्या करते?

गए थे उसके घर हम तो वफ़ाओं का सिला पाने
''जफ़ाकारी[13] से पेश आया वो हीला-साज़[14], क्या करते?''

हम उसकी बज़्म में बैठे, उठे और अलविदा चाही
निगाहे-नाज़[15] के ऐसे ही थे अन्दाज़, क्या करते?

जनाबे-क़ैस उट्ठे थे तरन्नुम[16] में ग़ज़ल पढ़ने
उसे देखा तो कुछ दब सी गई आवाज़, क्या करते?

❖❖❖❖

---

1. ज़ुल्म ढाने वाला 2. प्रेम प्रसंगी 3. विश्वासी 4. विरह-रात्रि 5. केन्द्रित 6. स्वर्ग 7. चमत्कार न दिखाने की शिकायत 8. कविता में ढालना 9. शब्दों से मैला करना 10 कृपा 11. अहंकार से भरा हुआ 12. उपेक्षित 13. अभद्रतता 14. बहाने बाज़ 15. माशूक़ा की नज़र 16. सुर में गाना

66

किस ने ये जलवा-नुमाई[1] की है?
बिजलियों ने भी दुहाई दी है

हर तरफ़ गूंज उठे हैं नग़मे[2]
किस की आवाज़ सुनाई दी है?

कैफ़[3] में डूब चली हैं नज़रें
कौन सी शक्ल दिखाई दी है?

यूँ तो कहने को सनम[4] है, लेकिन
उसकी हर बात ख़ुदाई की है

एक काफ़िर[5] को खुदा कह बैठे
और क्या हम ने बुराई की है?

दीनो-दिल[6] दे के तिरा ग़म पाया
आशिक़ों ने भी कमाई की है

क्या कहें तुझ से कि तेरी ख़ातिर
हम ने किस किस से लड़ाई ली है।

रंग लाया मिरा अन्दाज़े-सुख़न[7]
उन निगाहों ने बधाई दी है

क़ैस को चाहिए, अब खुल खेले
सामने रात जुदाई की है

❖❖❖❖

1. जल्वा दिखाना 2. गीत 3. मस्ती 4. मूर्ति 5. अनीश्वरवादी 6. धर्म-ईमान 7. बात कहने का ढंग

67

फिर किसी बुत से लौ लगाऐंगे
एक मन्दिर नया बनाएंगे

उस की सूरत पे दिल करें गे निसार[1]
उस की आँखों में डूब जाएंगे

इश्क़ में मो'तबर[2] वही होंगे
जीत कर भी जो हार जाऐंगे

जिन से वाबस्तगी[3] रही बरसों
''क्या ख़बर थी, वो भूल जाएंगे''

कोई आए न आए, क्या कीजे
हम तो शब भर दिए जलाऐंगे

हम जहां हैं वहां फ़क़त हम हैं
तेरी बातें किसे सुनाएंगे?

शामे-हिजरां[4], तुझे ख़ुदा रक्खे
अब तुझी को गले लगाऐंगे

एक ऐसा भी वक़्त आएगा
हम उन्हें, वो हमें मनाएंगें

जो फ़ज़ाओं[5] में उड़े रहे हैं, उड़ें
हम क़फ़स[6] ही में फड़फड़ाएंगे

दश्तो-सहरा[7] बनें गे बज़्मे-सुख़न[8]
हम किसी के तो काम आएंगे

सफ़े-मातम[9] बिछे क़रीने[9] से
आज के दिन तो वो भी आऐंगे

ज़िन्दगी से तो हम निभा न सके
मौत से किस तरह निभाऐंगे?

आज महफ़िल में चल के देखें तो
आज, सुनते हैं, क़ैस आएंगे

❖❖❖❖

---

1. न्योछावर 2. भरोसे योग्य 3. मेल-जोल 4. जुदाई की शाम 5. खुला आसमान 6. पिंजरा 7. जंगल, वयावान 8. कवि-सभा 9. मृत्यु-शोक के लिए बिछाने वाली दरी 10. ठीक ढंग से

68

फिर मुझे बज़्म[1] में ले आए हैं, देखे कोई
बात मेरी न सुने कोई न समझे कोई

सुब्ह हो, शाम हो, दोपहर हो या नीम-शबी[2]
घर का दरवाज़ा खुला रक्खो कि आए कोई

बे-यक़ीनी से कोई मेरा सरापा[3] देखो
हो के हैरान मिरी आंख में झाँके कोई

मेरी नज़रों से मिरे दिल का धड़कना जांचे
अपनी नज़रों से मिरी नब्ज़ टटोले कोई

बन के तस्वीर मिरे सामने कुछ यूं बैठे
मेरे काबे[4] को सनम-ख़ाना[5] बना दे कोई

बन के मरहम मिरे हर ज़ख़्म को सेहत बख़्शे
बन के दारू मिरा हर दर्द समेटे कोई

रौशनी बन के मिरे दिल को मुनव्वर[6] कर दे
बन के ख़ुशबू मिरे अनफ़ास[7] में महके कोई

बन के शो'ला मिरे एहसास[8] को बेदार[9] करे
बन के नग़मा[10] मिरे अफ़कार[11] में गूंजे कोई

आँख मूंदूं तो मुझे देख के क्या कुछ सोचे
आँख खोलूं तो मुझे देख के झेंपे कोई

क़ैस शायर है, कोई शैख़ो-बरहमन तो नहीं
इसके अशआर में वो बात ना ढूंढे कोई

❖❖❖❖

---

1. महफ़िल 2. आधी रात 3. सर से पांव तक 4. ख़ुदा का घर 5. मन्दिर 6. आलोकित 7. सांसों में 8. अनुभव 9. जगाना 10. गीत 11. सोच-विचार

69

सज़ा हो या जज़ा[1] हो, कौन जाने
मिरा मक़सूम[2] क्या हो, कौन जाने

फ़ना[3] हो या बक़ा[4] हो, कौन जाने
मिरी हस्ती का क्या हो, कौन जाने

दवा हो या दुआ हो, कौन जाने
मुदावा[5] ग़म का क्या हो, कौन जाने

करम[6] हो या जफ़ा[7] हो, कौन जाने
किसी के दिल में क्या हो, कौन जाने

बुरा हो या भला हो, कौन जाने
इरादा उनका क्या हो, कौन जाने

लबे-नाजुक पे हल्का सा तबस्सुम[8]
इशारा हो अदा हो, कौन जाने

अजब अन्दाज़ से शरमा रहे हैं
मुक़ाबिल[9] आइना हो कौन जाने

मुझे जिसकी तलब है, वो सितमगर
मुझी को ढूंढता हो, कौन जाने

मुझे मिलते ही आँखें फेर लेना
मोहब्बत का सिला हो, कौन जाने

वफ़ाओं पर जफ़ाऐं हो रही हैं
यहीं शायद रवा[10] हो, कौन जाने

ज़माना जिस को कहता है क़यामत
वही ज़ालिम बला हो, कौन जाने

जिसे दुनिया सनम[11] कहती रही है
वही काफ़िर ख़ुदा हो, कौन जाने

फ़ज़ाएं[12] महवे-हैरत[13] हो चली हैं
कोई पर्दा उठा हो, कौन जाने

सुनाई दे रही है जो अज़ल[14] से
खुद अपनी ही सदा[15] हो, कौन जाने

करो ताज़ीम[16] इस दिल की कि यह भी
किसी का नक़शे-पा[17] हो, कौन जाने

हमें सर पर बिठाता है ज़माना
अब इसका राज़ क्या हो, कौन जाने

पड़े है मौत की आग़ोश[18] में हम
अब इसके बाद क्या हो, कौन जाने

सफ़ीने[19] को डुबो डाला है जिसने
खुदा हो, ना-खुदा[20] हो, कौन जाने

यह ज़न्जीरों की ख़ामोशी सुनो तो
कोई क़ैदी छुटा हो, कौन जाने

न झांको क़ैस के दिल में, न झांको
वहां कोई छुपा हो, कौन जाने

❖❖❖❖

---

1. इनाम 2. भाग्य 3. नष्ट होना 4. बचे रहना 5. इलाज 6. कृपा 7. ज़ुल्म 8. मुसकान 9. सामने 10. उचित 11. मूर्ति 12. वातावरण 13. आश्चर्य चकित 14. आदि काल से 15. आवाज़ 16. सम्मान 17. पद चिन्ह 18. गोद 19. नाव 20. मल्लाह

70

फूलों ने, सितारों ने, शफ़क़[1] ने न तुझी ने
कुछ हाल सुना है तो मिरा नीम-शबी[2] ने

उस आँख को देखा जो मिरी तश्ना-लबी[3] ने
दीं लाख दुआऐं मिरी आशुफ़्ता-सरी[4] ने

फिर होश उड़ाए मेरे लिल्लाह[5] उसी ने
दीवाना बनाया था मुझे जिस की कमी ने

कुछ मस्त-निगाही ने तो कुछ ख़न्दा-लबी[6] ने
बीमार किया मुझ को इसी चारा-गरी[7] ने

फिर तेज़ हुई क़ल्बे-ख़राबात[8] की धड़कन
जादू वो जगाए तिरी आहिस्ता-रवी[9] ने

ईमां की तो यह है कि है अब कुफ़्र भी ईमां
वो हशर[10] उठाया है तिरी जलवा-गरी ने

वो क़हक़हे फूलों के, अनादिल[11] के वो नाले
क्या याद दिलाया है मुझे तेरी हंसी ने

वो राज़ भी क्या राज़ था जिस को दमे-रुख़सत[12]
अनजाने में इफ़शा[13] किया आँखों की नमी ने

देखा जो मिरा हाल तो सकता सा गया वो
दिल तोड़ दिया उसका मिरी दिल-शिकनी[14] ने

कल बज़्मे-हसीनां[15] में मुझे ले गए एहबाब[16]
देखा न किसी ने मुझे पूछा न किसी ने

थी एक नज़र जिस को कोई रोक न पाया
दिल चीर दिया क़ैस का उस तेज़ छुरी ने

❖❖❖❖

---

1. आकाश का लालिमा 2. आधी रात 3. प्यास 4. दुख की अवस्था 5. भगवान न करे 6. हंसी 7. हिकमत 8. मधुशाला का अस्तित्व 9. धीरे-धीरे चलना 10. कयामत 11. बुलबुलों का रूदन 12. विदाई के समय 13. भेद खोलना 14. दिल का टूटना 15. हसीनाओं की महफ़िल 16. यार-दोस्त

तुझ से रूठे तो कई रोज़ न ख़ुद से बोले
बार-हा[1] तेरी ही यादों के दरीचे खोले

तू भी ख़ामोश है, तस्वीर भी तेरी ख़ामोश
कोई तो बात करे, कोई तो हम से बोले

हम अगर तुझ पे फ़िदा हैं तो बड़ी बात है क्या?
देख ले तुझ को तो भगवान का भी मन डोले

मेरी तख़ईल[2] मिरी ज़ात से आगे न बढ़ी
तेरी आंखों ने कई भेद जहां के खोले

मेरी तौफ़ीक़ भी कम है मिरी औक़ात भी कम
कया ज़रूरी है कि वह आंख मुझी को तोले

आज की रात तो जी भर के हमें रोना है
जिस को सोना है बड़े शौक़ से जाए, सो ले

जिसके दामन[3] पे नुमायां[4] है कोई भी धब्बा
मेरी माने तो उसे अश्क[5] बहा कर धो ले

हमने हर रोज़ ही मांगी हैं दुआऐं, लेकिन
न कभी हाथ उठाए, न कभी लब खोले

ज़ौक़े-परवाज़[6] ही काफ़ी था उड़ानों के लिए
न कभी पंख हिलाए, न कभी पर तोले

हमने इस बहरे-ग़मो-कैफ़[7] में क्या कुछ न किया
कभी तूफ़ान उठाए, कभी मोती रोले

मेरे बारे में भला मौत का मंशा[8] क्या है?
सोचती है कि "वह आए, मिरा घूंघट खोले"

लोग मुश्ताक़[9] भी हैं, गोश-बर-आवाज़[10] भी हैं
कैस को चाहिए, ऐसे में ज़बां तो खोले

❖❖❖❖

1. बार बार 2. सोच विचार 3. पल्लू 4. ज़ाहिर 5. आंसू 6. उड़ने का शौक़ 7. दुख-सुख का सागर 8. इच्छा 9. शौक़ रखने वाले 10. आवाज़ पर कान लगाए हुए

72

सुनते हैं कि सह्रा[1] में फिर बादे-बहार[2] आई
आँखों में शिफ़ा[3] लाई, होंटों पे दुआ[4] लाई

कुछ हम से इलाक़ा[5] था या यूँ ही भटकती थी?
तुझ को तो ख़बर होगी, ए लाला-ए-सह्राई[6]!

हम ख़ाक-निशीनों[7] का एहवाल कोई देखे
इक आन तमाशा[9] हैं, इक आन तमाशाई[10]

यह कौन सी दुनिया है? आवाज़ ना आवाज़े[11]
जब देखिये ख़ामोशी, जब देखिये तनहाई

इक जुर्मे-मोहब्बत ने सौ रंग दिखाए हैं
नाकामी-ओ-मजबूरी, महरूमी-ओ-रूसवाई

उस दुश्मने-ईमां पर अब कौन फ़िदा[12] होगा?
हमने तो बहुत देखा, हमने तो क़सम खाई!

तुम क़ैस की कहते हो? उस आँख की सर-मस्ती
''ऐक ऐक बगूले को दीवाना बना आई।''

❖❖❖❖

---

1. बयाबान 2. वसंत ऋतु की पवन 3. स्वास्थ्य-लाभ 4. प्रार्थना 5. तअल्लुक़ 6. सह्रा का लाल फूल 7. मिट्टी में मिले हुए 8. हाल 9. नज़ारा 10. दर्शक 11. ताने 12. न्योछावर

73

ये क्या हुआ कि महकने लगी है तनहाई[1]?
तिरे ख़्याल की शायद चली है पुरवाई

ये कैसी धीमी सी कानों में इक सदा[2] आई?
दिलो-दिमाग़ में बजने लगी हे शहनाई

ये तेरी याद ने जादू जगा दिये कैसे?
हर आरज़ू[3] मिरी लेने लगी हे अंगड़ाई

सनम-कदों[4] के दिए भी लरज़ लरज़ से गए
तिरे जमाल[5] की जब रौशनी नज़र आई

तिरे इशारे पे दिल फिर धड़क धड़क उट्ठा
ज़हे-नसीब[6] कि मुरदों ने ज़िन्दगी पाई

न हमने जाम उठाया न हमने घूंट भरा
तिरी निगाह ने कुछ इस तरह से छलकाई

तिरे ही दम से ज़माने में नाम था अपना
तिरे ही दम से हुई शहर शहर रूसवाई

वो तेरा क़ैस कि फ़ानूसे-बज़्मे-यारां[7] था
जो आज है तो फ़क़त एक नक़्शे-सहराई[8]

❖❖❖❖

---

1. अकेलापन 2. आवाज़. 3. इच्छा 4. मन्दिरों के दिए 5. सौंदर्य 6 शुक्र है 7. दोस्तों की महफ़िल की रोनक़
8. बयावान का एक चिन्ह

74

बन बन के बिगड़ती रही तक़दीर हमारी
काम आ न सकी कोई भी तदबीर हमारी

ज़िन्दां[1] से निकलने का ख़याल आता है जिस वक़्त
पैरों से लिपट जाती है ज़ंजीर हमारी

ऐ दीदा-ए-गिरियाँ,[2] इन्हें लुटने से बचाना
ले दे के यही अश्क[3] हैं जागीर हमारी

दीवाना कोई निकलेगा जब फूंक के घर को
उभरे गी तिरे ज़हन[4] में तसवीर हमारी

अब तुझ से जो बिछड़े हैं तो हर हाल में खुश हैं
लुटती है तो लुटती रहे तौक़ीर[5] हमारी

आशिक़ थे तो हर कूचे में चर्चा था हमारा
शाईर हैं तो हर शहर मे तशहीर[6] हमारी

अल्फ़ाज़[7] में तासीर[8] न आवाज़ में जादू
तहरीर[9] हमारी है न तक़रीर[10] हमारी

इक-आध ग़ज़ल जिस पे उठे थे तिरे अबरू[11]
दीवान[12] वही है, वही तफ़सीर[13] हमारी

यह क़ैस भी क्या है, जिसे यह भी नहीं मालूम
हम ख़्वाब हैं तो कौन है ताबीर[14] हमारी?

❖❖❖❖

---

1. क़ैदखाना 2. रोती हुई आंखें 3. आंसू 4. मन 5. प्रतिष्ठा 6. प्रसिद्धी 7. शब्दों में 8. असर 9. लिखत 10. भाषण 11. भवें 12. संकलन 13. व्याख्या 14. फल, नतीजा

75

वो शब[1] जो तेरे ख़्यालो-खुमार[2] में गुज़री
वही सिताईश-ए-परवरदगार[3] में गुज़री

अज़ल[4] से गर्दिशे-लैलो-नहार[5] में गुज़री
ये ज़िन्दगी न कभी भी क़रार में गुज़री

कभी कभी गमें-जानां से रू-शिनास[6] हुई
ज़ियादातर तो गमें-रोज़गार में गुज़री

खुली फ़ज़ा[7] का तसव्वुर[8] भी पड़ गया फीका
कुछ इस तरह से फ़सीलो-हिसार[9] में गुज़री

जिधर निगाह उठी, गुलस्ताँ नज़र आया
मिरी हयात[10] फ़रेबे-बहार[11] में गुज़री

सुराग़े-राह[12] न कोई, न मंज़िलों के निशाँ
सफ़र की शाम थी, गर्दो-गुबार में गुज़री

उमीदो-यासो-फ़िराक़ो-विसालो-लुत्फ़ो-सितम[13]
तमाम उमर इसी कारोबार में गुज़री

तमाम दिन मैं बनाता रहा तिरी तसवीर
तमाम शब तिरे नक़्शो-निगार[14] में गुज़री

तमाम दिन तिरी यादों से खेलते गुज़रा
तमाम रात तिरे इन्तिज़ार में गुज़री

वो मस्ते-नाज़ तो हर अंजुमन[15] की जान रहा
ग़रीब कैस की उजड़े दयार[16] में गुज़री

❖❖❖❖

---

1. रात 2. मस्ती भरी सोच 3. प्रभु की प्रशन्सा 4. आदिकाल 5. दिन रात का चक्र 6. चेहरे से परिचय 7. वातावरण 8. कल्पना 9. चार-दीवारी 10. जीवन 11. बहार का धोका 12. पथ-प्रदर्शन 13. आशा-निराशा-विरह-मिलन- कृपा एवं अत्याचार 14. सुन्दरता के चिन्ह 15. महफ़िल 16. शहर

76

देख, तिरे दीवानों की अब जान पे क्या बन आई है?
चुप साधें तो दम धुटता है, बोलें तो रूसवाई है

बस्ती बस्ती, जंगल जंगल, सह्रा सह्रा घूमे हैं
हमने तेरी खोज में अबतक कितनी ख़ाक उड़ाई हैं

दिल अपना सुनसान नगर है, फिर भी कितनी रौनक़ है
सपनों की बारात सजी है, यादों की शहनाई है

यूँ तो सब कुछ हार चुके हैं, फिर भी माला-माल हैं हम
बातें करने को सन्नाटे, सोहबत को तनहाई है

मेरे दिल का चौंक सा जाना इक मामूली जज़्बा था
वो तो तेरी शोख़ नज़र थी जिस नें बात बढ़ाई है

यूँ तो तेरे मैख़ाने[1] में रंगा-रंग शरावें हैं
आज वही उंडेल जो तेरी आँखों ने छलकाई है

आज तो मय[2] का इक इक क़तरा झूम रहा है मस्ती से
शायद मेरे जाम से कोई ख़ास नज़र टकराई है

आज समन्दर की लेहरें ऊँची भी हैं, जोशीली भी
या पानी की बैचैनी है या तेरी अंगड़ाई है

पहलू पहलू दर्द उठा है, करवट करवट रोए हैं
तुझ को क्या मालूम कि हम ने कैसे रैन बिताई है

मोड़ मोड़ पर बिजली लपकी, मंज़िल मंज़िल तीर गिरे
मर मर कर इस राह में हमने अपनी जान बचाई है

देखने वाले ध्यान से देखें, हुस्न नहीं यह जादू है
या तो इसका मन्तर ढूंढें या फिर शामत आई है

कहने को तो वस्ल[3] की दावत[4] लेकर कोई आया है
हो ना हो, मेरी तनहाई भेस बदल कर आई है

सारी सखियाँ पूछ रही हैं आज हमारी राधा से
तेरे मन के बृंदाबन में किस ने रास रचाई है ?

❖❖❖❖

1. मधुशाला 2. शराब 3. मिलन 4. निमंत्रण

77

फ़िक्र[1] की तौफ़ीक़ है ना ताक़ते-गुफ़्तार[2] है
दिल को फिर भी आहो-ज़ारी[3] पर अजब इसरार[4] है

इल्मो-फ़न[5], मश्क़े-सुख़न[6] और आगही[7] काफ़ी नहीं
शे'र कहने के लिए कुछ और भी दरकार[8] है

बज़्मे-हस्ती[9] के मुअम्मे[10] कौन समझाए, किसे?
यह कोई मकतब[11] नहीं, यह आलमे-असरार[12] है

ये वो ख़ित्ता[13] है समन्दर भी जहां प्यासे रहे
ये वो बस्ती है मसीहा[14] भी जहां बीमार है

ये वो गुलशन[15] है जहाँ शाख़ें भी शमशीरें हुई
ये वो खेती है जहां बादल भी शो'ला बार[16] है

क्या ज़रूरी है कि हर शै ठीक दामों में बिके
ये कोई मंडी नहीं, यह मिस्र का बाज़ार[17] है

आशिक़ी से तो कई बरसों का था उखड़ा हुआ
''ज़िन्दगी से भी मिरा जी इन दिनों बेज़ार है''

दफ़अतन[18] बज़्मे-तसव्वुर[19] में चिराग़ाँ[20] सा हुआ
या कोई बिजली गिरी या ताबिशे-रूख़सार[21] है

फिर गुलिसताने-वफ़ा[22] में सरसराहट सी हुई
या नसीमे-सुब्हगाही[23] या तिरी रफ़्तार है

फिर मिरे क़सरे-तमन्ना[24] में बजीं शहनाईयां
फिर कहीं नग़मा-सरा[25] पाज़ेब[26] की झंकार है

फिर दिमाग़ो-दिल पे छाई कैफ़ो-मस्ती की घटा
फिर निगाहों में वही अक्से-जमाले-यार[27] है

सुन के मेरी शे'र-ख़्वानी, उस परी-वश[28] ने कहा
शाइरी अच्छी है लेकिन आदमी बेकार है

❖❖❖❖

---

1. सोच 2. वाक्-शक्ति 3. रोना-धोना 4. ज़िद 5. ज्ञान-कला 6. काव्य अभ्यास 7. ज्ञान 8. ज़रूरी 9. जीवन 10. पहेलियां 11. पाठशाला 12. भेद-भरा संसार 13. इलाक़ा 14. चिकित्सक 15. बाग़ 16 शोले बरसाने वाला 17. वो बाज़ार जहां क़ीमती चीज़ें बहुत सस्ती बिक्ती हों 18. अचानक 19. विचार सभा 20. आलोकित 21. गालों की चमक दमक 22. प्रेम उपवन 23. सुबह की मंद पवन 24. इच्छाओं का महल 25. गीत गाती हुई 26. पायल 27. सौंदर्य का प्रतिबिंब 28. परियों जैसी

78

एक मुद्दत से तुझे दिल में बिठा रक्खा है
तेरे हर राज़[1] को सीने से लगा रक्खा है

मुसकुराती हुई आँखों का सहारा लेकर
तूने हर शख़्स को दीवाना बना रक्खा है

ये तिरी मस्त-निगाही का करम[2] है, वरना
जाम[3] में, शीशे[4] में, पैमाने[5] में क्या रक्खा है?

तेरे हल्के से तबस्सुम[6] में ये क्या था? जिस ने
दिल में जज़्बात[7] का तूफ़ान मचा रक्खा है

तू अगर पास नहीं है तो कोई बात नहीं
तेरी यादों से नगर दिल का बसा रक्खा है

तेरे आने का भरोसा तो नहीं है फिर भी
इक पुजारी ने दिया दिल का जला रक्खा है

न ख़ुदा से कोई रिश्ता न बुतों से नाता
तेरी दहलीज़ पे सर अपना झुका रक्खा है

क़ैस ख़ुश-वज़ा[8] था, ख़ुश-तबा[9] था, ख़ुश-ज़ौक़[10] भी था
कुछ हुआ होगा जो यह हाल बना रक्खा है

❖❖❖❖

1. भेद 2. कृपा 3. प्याला 4. शराब का प्याला 5. मापक 6. मुस्कान 7. भाव 8. अच्छी शक्ल वाला 9. अच्छी तबीयत वाला 10. अच्छी रुचि वाला

79

दिल में अजब सा कैफ़[1], अजब सा सुरूर[2] है
कोई न कोई बज़्म[3] में शामिल ज़रूर है

मौजूद है मगर वही आलम गुरेज़[4] का
मस्तूर[5] है मगर वही शाने-ज़ुहूर[6] है

ये कैसी कैफ़ियत[7] है कि मस्ती भी, होश भी
है नूर[8] भी धुंधलका, धुंधलका भी नूर है

फिर दिल में जागने लगा नज़्ज़ारगी[9] का शौक़
अब मैं हूँ और सिलसिला-ए-कोहे-तूर[10] है

जलवों की ताब[11] हो कि ना हो, आरज़ू[12] तो है
और यह भी कम नहीं कि नज़र को शुऊर[13] है

जी चाहता है आज ग़ज़ल-दर-ग़ज़ल[14] कहूं
पर क्या करुं कि फ़िक्रे-सुख़न[15] चूर चूर है

बस्ती में, कोह-सार[16] में, वादी में, दश्त[17] में
चर्चा जनाबे-क़ैस का नज़दीको-दूर है

❖❖❖❖

---

1. मस्ती 2. नशा 3. महफ़िल 4. कतराना 5. पर्दे में 6. प्रगटता 7. अवस्था 8. रौशनी 9. नज़ारा देखना 10. पहाड़ों की श्रृंखला 11. सहनशक्ति 12. इच्छा, 13. शिष्टता 14. ग़ज़ल पर ग़ज़ल 15. काव्य-सोच 16. पहाड़ों का सिलसिला 17. जंगल

80

मिरा कलाम[1] जिसे आइना दिखाता है
वो देखता है तो हैरत[2] में डूब जाता है

न जाने कौन सा शे'र उसको याद आता है?
नज़र मिलाता है और झेंप झेंप जाता है

कहीं पे हुस्न[3] के फंदे, कहीं पे अक़्ल के जाल
ग़रीब इश्क़ जिधर जाए मात खाता है

हुजूमे-यास[4] में गुम हैं तमाम एहसासात[5]
ख़याले-यार अबस[6] मुझको गुदगुदाता है

वो एक नख़्ले-तमन्ना[7] जो मैंने सींचा था
वो बे-समर[8] ही सही, फिर भी लहलहाता है

मिरा पयामे-मोहब्बत[9] तो सीधा-साधा था
यह कौन है जो उधर हाशिये[10] चढ़ाता है?

तू मुझ को छोड़ गया, यह तो तेरे वस में था
तिरा ख़याल मगर लौट लौट आता है

हों महफ़िलें तो जहाँ भर की बात होती है
हों ख़लवतें[11] तो फ़क़त तू ही याद आता है

तिरा जो ज़िक्र किसी से करें तो कैसे करें?
तिरा तो नाम भी अब भूल भूल जाता है

न कोई वादा न उम्मीद, फिर भी हैरत है
चिराग़े-ज़ीस्त[12] अभी तक भी टिमटिमाता है

अगर मरा तो मरूंगा यह जानने के लिए
मिरे जनाज़े पे वो हीला-साज़[13] आता है?

वो दर[14] जहां से कभी भी किसी को कुछ ना मिला
यह क़ैस अब भी उसी दर को खटखटाता है

❖❖❖❖

1. कथन 2. आश्चर्य 3. सौंदर्य 4. निराशाओं का घेरा 5. भावनाएें 6. बेकार 7. इच्छाओं का पेड़ 8. फल-हीन 9. प्यार का संदेश 10. बढ़ा चढ़ा कर कहना 11. अकेलापन 12. जीवन ज्योति 13. बहाने बाज़ 14. दरवाज़ा

81

खुद को रोका बहुत फिर भी हम आ गए
आख़िरिश[1] तेरे सर की क़सम आ गए

पेच-दर-पेच[2] राहों में ऐसे फंसे
ज़ह्न[3] में तेरी ज़ुल्फ़ों के ख़म[4] आ गए

मेरी ख़ुशीयाँ जहां भर में बांटी गई
मेरे हिस्से में औरों के ग़म आ गए

तश्नगी[5], देख! अब तो तिरे सामने
ख़ूने-दिल से भरे जामे-जाम[6] आ गए

दिल गया तो ग़मो-रंजो-दरदो-क़लक़[7]
यक-ब-यक[8] आ गए, दम-ब-दम[9] आ गए

अब तो साया भी हम से गुरेज़ाँ[10] सा है
किस गली में हमारे क़दम आ गए?

मैकदे की फ़ज़ा[11] कितनी ख़ामोश है
कोई साक़ी से कह दे कि हम आ गए

आज लिक्खेंगे कुछ आपके रूबरू[12]
देखिए, ले के काग़ज़ क़लम आ गए

क़ैस आए तो बज़्मे-सुख़न[13] बोल उठी
बा अदब! शाइरे-मोहतरम[14] आ गए

❖❖❖❖

---

1. आख़िरकार 2. पेचीदा 3. मन 4. बल 5. प्यास 6. ईरान के बादशाह जमशेद का प्याला जिसमें वह जो चाहें देख सकते थे 7. बेचैनी 8. एक एक करके 9. देखते देखते 10. कतराना 11. वातावरण 12. सामने 13 काव्य-सभा 14. आदरणीय कवि

82

उनके अन्दाज़ दिल को सुहाने लगे
मुझ से रूठे, मुझी को मनाने लगे

उनको देखा तो नज़रें वहीं जम गई
ज़हनो-दिल[1] पर कई रंग छाने लगे

मैं तो मोहतात[2] था, सो झिझकता रहा
वो बिला-ख़ौफ़[3] नज़दीक आने लगे

उनका हुस्ने-नज़र[4], उनका हुस्ने-बयाँ[5]
मेरे एहसास[6] को गुदगुदाने लगे

नक़्श[7] ऐसे कि जैसे कोई फुलझड़ी
यूं लगा, आग सी इक लगाने लगे

उनसे अन्जाने में, जाने क्या कह दिया
शर्म से ज़ेरे-लब[8] मुस्कुराने लगे

छोड़िए, यह पुरानी अदा छोड़िए
आप नागाह[9] आँखें चुराने लगे

हम जहां भी गए, आप हमराह[10] थे
हम भला क्यों किसी को बताने लगे?

ग़ैर तो ग़ैर थे, आप को क्या हुआ?
''आप भी मुझ पे तोहमत लगाने लगे''

खो न जाना कहीं आन की आन में
आपको ढूंढने में ज़माने लगे

आपकी बे-नियाज़ी[11] भी क्या ख़ूब थी
आप आए कि जब क़ैस जाने लगे

❖❖❖❖

---

1. मन और चित्त 2. सावधान 3. निडरता से 4. नज़र की परख 5. कथन की श्रेष्टता 6. अनुभूति 7. चिन्ह 8. होटों के नीचे 9. यूं ही 10. साथ साथ 11. वे-परवाई

83

आँखों में बस गए, मिरे दिल में समा गए
वीरान ज़िन्दगी को गुलिस्ताँ[1] बना गए

आहट किये बग़ैर, दबे पांव आ गए
किस सादगी से वो मिरी दुनिया पे छा गए

आँखो में आँखे डाल के जादू सा ढा गए
ईमान ले गए, मुझे काफ़िर बना गए

बस देखते ही देखते दुनिया बदल गई
हर सू शराबो-शे'र के दरया बहा गए

अपनी वफ़ा[2] के, प्यार के मोती बिखेर कर
ग़म-ख़ाना-ए-हयात[3] में खुशियाँ लुटा गए

चाहा तो मेरी नज़्म का उनवान[4] हो गए
चाहा तो शे'र बन के ग़ज़ल में समा गए

आए वो बज़्मे-नाज़[5] में सर-मस्तियाँ लिए
देखा मुझे तो शर्म से आँखें चुरा गए

❖❖❖❖

---

1. बाग़ 2. भलाई 3. दुखी जीवन 4. शीर्षक 5. हसीनाओं की महफ़िल

84

ज़िन्दगी राहे-उलफ़त[1] पे चलती रही
आज गिरती रही, कल संभलती रही

पुछते हो, शबे-हिज्र[2] कैसे कटी?
अश्क[3] बहते रहे, रात ढलती रही!

दर्द रह रह के पहलू में उठता रहा
आरजू[4] थी कि दिल में मचलती रही

ख़ून दम तोड़कर मुन्जमिद[5] हो गया
नब्ज़ फिर भी किसी तौर चलती रही

आप मिल भी गए, फिर बिछड़ भी गए
बेबसी[6] आज तक हाथ मलती रही

मैं अकेला था फिर भी अकेला न था
बेकसी[7] उम्र भर साथ चलती रही

दुश्मनी का गिला कीजिये भी तो क्या?
दोस्ती भी तो आँखें बदलती रही

इश्क़ की आस्तीं में, खुदा जाने क्यों
एक नागन अज़ल[8] ही से पलती रही

क़ैस के पास ले दे के इक जान थी
वो भी ऐसी कि हर दम निकलती रही

❖❖❖❖

---

1. प्रेम डगर 2. विरह की रात 3. आंसू 4. इच्छा 5. जम जाना 6. बस न चलना 7. बे-सहारा होना 8. आदिकाल से

85

मेरे लब पर तिरी बात आई
फूल महके कली मुस्कुराई

तेरा आना मिरा चौंक जाना
वो घड़ी उमर भर याद आई

तेरी अवाज़ का ले के जादू
ख़ामुशी रात भर गुनगुनाई

सारी दुनिया परेशान क्यों है?
हम ने पी जब किसी ने पिलाई!

जाने किस ने हिलाया था शाना[1]?
आज तक ना हमें नींद आई

वो सनम[2] है, खुदा तो नहीं है
फिर भी मरती है सारी खुदाई

ये सरापा[3], ये हुस्ने-तनासुब[4]
किस मुसव्विर[5] की है ये घड़ाई?

ये खुदा के भी बस की नहीं थी
ऐसी तस्वीर किस ने बनाई?

ताकना झांकना हर किसी को
क़ैस में थी यही इक बुराई

❖❖❖❖

1. कंधा 2. मूर्ति 3. सर से पांव तक का सौंदर्य 4. मुनासिबत 5. तसवीर बनाने वाला

86

कभी रूख़[1] से कभी रूख़सारों[2] से
हम तो खेला किये अंगारों से

बात करते हैं हमेशा तेरी
कभी फूलों से, कभी तारों से

तुम फ़रिश्ते हो, ख़ुदा हो, क्या हो?
पूछ लो अपने परस्तारों[3] से

कभी अकाश को हम चीर गए
कभी टकरा गए दीवारों से

भरे बैठे हैं, छलक जाएँगे
हाल मत पूछिए बीमारों से

अब तो रग रग से टपकता है लहू
सुर निकलते नहीं इन तारों से

क़ैस का हाल अजब है, यारो!
बात करता है तो दीवारों से

❖❖❖❖

1. चेहरा 2. गाल 3. प्रेम पुजारी

87

झिझकते क्यों हो बताओ कि फ़ैसला क्या है?
जो मेरा जुर्म है, उस जुर्म की सज़ा क्या है?

मैं क्या कंहू कि मिरे ग़म की इब्तिदा[1] क्या थी?
कोई बताए कि इस ग़म की इन्तिहा[2] क्या है?

मरीज़े-इश्क़[3] को झूठी तसल्लियां मत दो
इसे जो दर्द है, उस दर्द की दवा क्या है?

जो पास थे तो मिरे हाथ में ज़माना था
जो दूर हैं तो मिरे हाथ में रहा क्या है?

न पूछिए कि ख़ज़ाने लुटाए हैं क्या क्या?
ये देखिए कि मिरे पास अब बचा क्या है?

जो मेरी लाश को देखा तो भोलेपन से कहा
यह कौन है? ज़रा पूछो इसे हुआ क्या है?

अजब है, छोड़ के बस्ती चले हैं सहरा[4] को
जनाबे-क़ैस ही जानें ये माजरा[5] क्या है?

❖❖❖❖

1. आरंभ 2. अंत 3. प्रेम रोगी 4. बयाबान 5. मामला

88

उनको ज़ेबाई[1] भी फबती है, ख़ुद-आराई[2] भी
हम अगर एहले-नज़र[3] हैं तो तमाशाई[4] भी

मंज़िले-इश्क़ पे दीवानों को क्या कुछ न मिला
हिज्र[5] की धूप भी थी, वस्ल[6] की पुरवाई भी

सोने देंगे न तिरे ख़्वाब मुझे आज की रात
किसी सूरत मिरी आँखों में जो नींद आई भी

दरे-का'बा[7] पे झुकें या कि तिरी चौखट पर?
बन्दे अल्लाह के हैं, तेरे तमन्नाई[8] भी

सुनते आए हैं अज़ल[9] से जो कहानी, उस में
कुछ हक़ीक़त[10] भी है, कुछ हाशिया-आराई[11] भी

दिले-नादां[12], तुझे क़ातिल से शिकायत क्या है?
तू ने देखी है मसीहा[13] की मसीहाई भी

आज परवाज़े-तख़य्युल[14] ने अगर साथ दिया
मिल ही जाएगी भरी बज़्म[15] में तनहाई[16] भी

जिस में आलिम[17] भी थे, फ़ाज़िल[18] भी थे, फ़नकार[19] भी थे
उसी महफ़िल में मिला क़ैस सा सौदाई भी

❖❖❖❖

---

1. प्राकृतिक सौंदर्य 2. अपने आप को संजाना 3. पारखी 4. नज़ारा देखने वाला 5. बिरह 6. मिलन 7. काबे का दरवाज़ा 8. अभिलाषी 9. आदिकाल 10. सच्चाई 11. बढ़ा चढ़ा कर कहना 12. मूढ़मन 13. प्राण-दाता 14. सोच को उड़ान 15. महफ़िल 16. अकेलापन 17 विद्वान 18. श्रेष्ठ 19. कलाकार

89

आज की रात फिर कहां होगी?
ये मुलाक़ात फिर कहाँ होगी?

आप से प्यार तो रहेगा, मगर
आप से बात फिर कहाँ होगी?

चाँद चमकेगा रात भर, लेकिन
चाँदनी रात फिर कहां होगी?

जब भी जी चाहा, तुम से मिल बैठे
ऐसी औक़ात फिर कहां होगी?

चूम लो आज मेरे अश्कों[1] को
ऐसी बरसात फिर कहां होगी?

थाम लो मेरा डूबता हुआ दिल
ऐसी सोग़ात फिर कहां होगी?

हम कहीं होंगे और आप कहीं
शरहे-जज़्बात[2] फिर कहां होगी?

जिस तरह आज मात खाई है
इस तरह मात फिर कहा होगी?

आप की बज़्मे-कैफ़ो-मस्ती[3] में
क़ैस सी ज़ात[4] फिर कहा होगी?

❖❖❖❖

1. आंसूओं को 2. भावनाओं का विस्तार 3. मस्ती भरी महफ़िल 4. व्यक्तित्व

क़त'आत

ज़िन्दगी में सुरूर है तुझ से
घुप अंधरे में नूर है तुझ से
तू पराई सही मगर फिर भी
कोई रिश्ता ज़रूर है तुझ से

❖

यह ज़मीं आसमां तिरे दम से
यह बहारो-ख़िज़ां तिरे दम से
तू पराई सही मगर फिर भी
जानो-दिल को अमां तिरे दम से

❖

आबरूए-बहार है तुझ से
ज़िन्दगी में निखार है तुझ से
तू पराई सही मगर फिर भी
जानो-दिल को क़रार है तुझ से

❖

मेरी आँखों को भा गई है तू
मेरे दिल को लुभा गई है तू
तू पराई सही मगर फिर भी
मेरी दुनिया पे छा गई है तू

❖

कितना अनमोल प्यार है तेरा
दिल सरापा शिकार है तेरा
तू पराई सही मगर फिर भी
रात दिन इन्तिज़ार है तेरा

❖

भोली भोली सी लग रही थी तू
प्यारी प्यारी सी लग रही थी तू
तू पराई सही मगर फिर भी
अपनी अपनी सी लग रही थी तू

❖

आज तक याद है वो शाम कि जब
दिल में उतरी थी इक निगाह तिरी
मुद्दतें हो गईं मगर अब तक
ज़िन्दगी तक रही है राह तिरी

❖

सारी दुनिया को जीत के आख़िर
मात खाई है तेरी आँखों से
रात दिन पी रहा हूँ छुप छुप कर
जो चुराई है तेरी आँखों से

❖

हशर बरपा है तेरी चितवन से
क़हर छाया है तेरी आँखों में
खुद को बरबाद होते देखा है
जब भी झांका है तेरी आँखों में

❖

आज बैठे बिठाए याद तिरी
आई और रूह को झंझोड़ गई
जिस्मो-जां के उड़ा गई पुरज़े
शीश-ए-दिल को तोड़ तोड़ गई

❖

ख़ूबसूरत है पुर-वक़ार है तू
चाँद तारों से हम-किनार है तू
जाज़िबीयत है तेरे पैकर में
हुस्ने-फ़ितरत का शाहकार है तू

हुस्न की आबरु नज़र आई
इशक़ की आरज़ू नज़र आई
लोग कहते रहे ख़ुदा जिस को
हम ने देखा तो तू नज़र आई

❖

मेरे घर आई और यूँ आई
जैसे आकाश से परी उतरी
रात अमावस की थी मगर फिर भी
मेरे आँगन में चाँदनी उतरी

❖

आसमानों पे छा गए बादल
एक बिजली फ़ज़ा में लहराई
सोए अरमान उठ के बैठ गए
उन को ऐसे लगा कि तू आई

❖

मेरी हर आरज़ू को टाल गई
ख़ुद को हर तरह से संभाल गई
दे के अगले जन्म का बहलावा
आज की बात कल पे डाल गई

❖

अनगिनत लोग हैं ज़माने में
बात भाती है तो फ़क़त उस की
दिल मचलता है तो फ़क़त उस पर
याद आती है तो फ़क़त उस की

❖

दोस्तो, आज सुब्ह होने तक
उस बुते-अशवा-गर की बात करो
जामो-मीना के तज़करे छोड़ो
उस नशीली नज़र की बात करो

बात करती है फूल झड़ते हैं
तरज़े-गुफ़तार हो तो ऐसी हो
जब भी देखा है होश खोए हैं
शाने-दीदार हो तो ऐसी हो

❖

नरम आवाज़, रस भरा लहजा
यह लताफ़त उसी का हिस्सा है
हल्की मुस्कान, शर्मगीं आँखें
यह नज़ाकत उसी का हिस्सा है

❖

जैसे नक़्शो-निगार उस के हैं
वैसे नक़्शो-निगार और कहाँ?
जैसा उजला निखार उस का है
वैसा उजला निखार और कहाँ?

❖

मेरे नग़मे मिरे सही, लेकिन
इन में वजदान आप ही का है
यह जो दिल में ख़लिश सी रहती है
यह भी एहसान आप ही का है

❖

यह तबस्सुम उसी के दम से है
यह तकल्लुम उसी के दम से है
मेरे नग़मों पे झूमने वालो
यह तरन्नुम उसी के दम से है

❖

हस्रतों के उदास आंगन में
ज़िकर है सुबह शाम उस बुत का
जब भी उठती है हूक सी दिल में
लब पे आता है नाम उस बुत का

हुस्न की आन है तो एक वही
इश्क़ की जान है तो एक वही
मेरे दिल के ग़रीब-ख़ाने में
कोई महमान है तो एक वही

❖

ज़िन्दगी के तवील रस्ते में
किस दोराहे पे खो गया कोई
दूर पहले भी था मगर अब तो
और भी दूर हो गया कोई

❖

जिन की क़िस्मत में ख़ाक लिक्खी हो
उन की क़िस्मत में मेहरो-माह कहाँ?
जिन को बस दूर ही की निस्बत हो
उन को अय्याशीए-गुनाह कहाँ?

❖

तेरे बारे में आज तक, ऐ दोस्त,
दिल में कितने ख़याल गुज़रे हैं
जिन का कोई जवाब बन न पड़े
ऐसे ऐसे सवाल गुज़रे हैं

तेरी फ़ुरक़त में सैंकड़ो लम्हे
ज़िन्दगी पर मुहाल गुज़रे हैं
यह कोई इन दिनों की बात नहीं
अनगिनत माहो-साल गुज़रे हैं

साल गुज़रा किए मगर फिर भी
तेरे चहरे की दिलकशी है वही
तेरी आँखों में है वही जादू
तेरे होंटो की नाज़ुकी है वही

है वही कैफ़ तेरी नज़रों में
तेरी बातों की नग़मगी है वही
फिर भला इस में क्या तअज्जुब है?
तेरी वहशी का हाल भी है वही

तुझ से मिलने की आरजू दिल में
तुझ को पाने की आस आँखों में
चूम लेने का शौक़ होंटो को
प्यार करने की प्यास आँखों में

❖

हम तो मोहतात थे मगर फिर भी
कर गई काम इक झलक उस की
सर में अब तक उसी का सौदा है
दिल में है आज तक कसक उस की

आँख से आँख जब मिली, तब से
ज़हन में जगमगाहटें सी हैं
उस की आवाज़ जब सुनी, तब से
हर तरफ़ गुनगुनाहटें सी हैं

होंट टकरा गए थे होंटो से
आज तक गुदगुदाहटें सी हैं
उनगलियाँ जा पड़ी थीं सीने पर
आज तक सरसराहटें सी हैं

बस इन्हीं हादिसों के सर सदक़े
मेरी हर रात रात है उस की
मेरा हर शे'र शे'र है उस का
मेरी हर बात बात है उस की

صحرا

راج کمار قیسؔ

یہ قیسؔ نہ مومن ہے نہ صوفی ہے، مگر دیکھ
جو تو نے سمجھ رکھا ہے، ویسا بھی نہیں ہے

An imprint of professor toofaanii publishers

سال گزرا کئے مگر پھر بھی — تیرے چہرے کی دلکشی ہے وہی
تیری آنکھوں میں ہے وہی جادو — تیرے ہونٹوں کی نازکی ہے وہی

ہے وہی کیف تیری نظروں میں — تیری باتوں کی نغمگی ہے وہی
پھر بھلا اس میں کیا تعجب ہے — تیرے وحشی کا حال بھی ہے وہی

تجھ سے ملنے کی آرزو دل میں — تجھ کو پانے کی آس آنکھوں میں
چوم لینے کا شوق ہونٹوں کو — پیار کرنے کی پیاس آنکھوں میں

☆

ہم تو محتاط تھے مگر پھر بھی — کر گئی کام اک جھلک اُس کی
سر میں اب تک اُسی کا سودا ہے — دل میں ہے آج تک کسک اُس کی

آنکھ سے آنکھ جب ملی، تب سے — ذہن میں جگمگاہٹیں سی ہیں
اُس کی آواز جب سنی، تب سے — ہر طرف گنگناہٹیں سی ہیں

ہونٹ ٹکرا گئے تھے ہونٹوں سے — آج تک گدگداہٹیں سی ہیں
انگلیاں جا پڑی تھیں سینے پر — آج تک سرسراہٹیں سی ہیں

بس انہی حادثوں کے سر صدقے — میری ہر رات رات ہے اُس کی
میرا ہر شعر شعر ہے اُس کا — میری ہر بات بات ہے اُس کی

یہ تبسّم اُسی کے دم سے ہے　　یہ تکلّم اُسی کے دم سے ہے
میرے نغموں پہ جھومنے والو　　یہ ترنّم اُسی کے دم سے ہے

☆

حسرتوں کے اداس آنگن میں　　ذکر ہے صبح شام اُس بت کا
جب بھی اٹھتی ہے ہوک سی دل میں　　لب پہ آتا ہے نام اُس بت کا

☆

حسن کی آن ہے تو ایک وہی　　عشق کی جان ہے تو ایک وہی
میرے دل کے غریب خانے میں　　کوئی مہمان ہے تو ایک وہی

☆

زندگی کے طویل رستے میں　　کس دوراہے پہ کھو گیا کوئی
دور پہلے بھی تھا مگر اب تو　　اور بھی دور ہو گیا کوئی

☆

جن کی قسمت میں خاک لکھی ہو　　اُن کی قسمت میں مہر و ماہ کہاں؟
جن کو بس دور ہی کی نسبت ہو　　اُن کو عیاشیِ گناہ کہاں؟

☆

تیرے بارے میں آج تک، اے دوست　　دل میں کتنے خیال گزرے ہیں
جن کا کوئی جواب بن نہ پڑے　　ایسے ایسے سوال گزرے ہیں

تیری فرقت میں سینکڑوں لمحے　　زندگی پر محال گزرے ہیں
یہ کوئی ان دنوں کی بات نہیں　　ان گنت ماہ و سال گزرے ہیں

آسمانوں پہ چھا گئے بادل ایک بجلی فضا میں لہرائی
سوئے ارمان اٹھ کے بیٹھ گئے اُن کو ایسے لگا کہ تو آئی

☆

میری ہر آرزو کو ٹال گئی خود کو ہر طرح سے سنبھال گئی
دے کے اگلے جنم کا بہلاوا آج کی بات کل پہ ڈال گئی

☆

ان گنت لوگ ہیں زمانے میں بات بھاتی ہے تو فقط اُس کی
دل مچلتا ہے تو فقط اُس پر یاد آتی ہے تو فقط اُس کی

☆

دوستو، آج صبح ہونے تک اُس بتِ عشوہ گر کی بات کرو
جام و مینا کے تذکرے چھوڑو اُس نشیلی نظر کی بات کرو

☆

بات کرتی ہے پھول جھڑتے ہیں طرزِ گفتار ہو تو ایسی ہو
جب بھی دیکھا ہے ہوش کھوئے ہیں شانِ دیدار ہو تو ایسی ہو

☆

نرم آواز، رس بھرا لہجہ یہ لطافت اُسی کا حصّہ ہے
ہلکی مسکان، سُرمگیں آنکھیں یہ نزاکت اُسی کا حصّہ ہے

☆

جیسے نقش و نگار اُس کے ہیں ویسے نقش و نگار اور کہاں؟
جیسا اجلا نکھار اُس کا ہے ویسا اجلا نکھار اور کہاں؟

☆

آج تک یاد ہے وہ شام کہ جب   دل میں اتری تھی اک نگاہ تری
مدّتیں ہو گئیں مگر اب تک   زندگی تک رہی ہے راہ تری

☆

ساری دنیا کو جیت کر آخر   مات کھائی ہے تیری آنکھوں سے
رات دن پی رہا ہوں چھپ چھپ کر   جو چرائی ہے تیری آنکھوں سے

☆

حشر برپا ہے تیری چتون سے   قہر چھایا ہے تیری آنکھوں میں
خود کو برباد ہوتے دیکھا ہے   جب بھی جھانکا ہے تیری آنکھوں میں

☆

آج بیٹھے بٹھائے یاد تری   آئی اور روح کو جھنجوڑ گئی
جسم و جاں کے اڑا گئی پرزے   شیشۂ دل کو توڑ توڑ گئی

☆

خوبصورت ہے پُروقار ہے تو   چاند تاروں سے ہمکنار ہے تو
جاذبیت ہے تیرے پیکر میں   حسنِ فطرت کا شاہکار ہے تو

☆

حسن کی آبرو نظر آئی   عشق کی آرزو نظر آئی
لوگ کہتے رہے خدا جس کو   ہم نے دیکھا تو تُو نظر آئی

☆

میرے گھر آئی اور یوں آئی   جیسے آکاش سے پری اتری
رات اماوس کی تھی مگر پھر بھی   میرے آنگن میں چاندنی اتری

☆

قطعات

زندگی میں سُرور ہے تجھ سے ــــ گھپ اندھیرے میں نور ہے تجھ سے
تو پرائی سہی مگر پھر بھی ــــ کوئی رشتہ ضرور ہے تجھ سے

☆

یہ زمیں آسماں ترے دم سے ــــ یہ بہار و خزاں ترے دم سے
تو پرائی سہی مگر پھر بھی ــــ جان و دل کو اماں ترے دم سے

☆

آبروئے بہار ہے تجھ سے ــــ زندگی میں نکھار ہے تجھ سے
تو پرائی سہی مگر پھر بھی ــــ جان و دل کو قرار ہے تجھ سے

☆

میری آنکھوں کو بھا گئی ہے تو ــــ میرے دل کو لبھا گئی ہے تو
تو پرائی سہی مگر پھر بھی ــــ میری دنیا پہ چھا گئی ہے تو

☆

کتنا انمول پیار ہے تیرا ــــ دل سراپا شکار ہے تیرا
تو پرائی سہی مگر پھر بھی ــــ رات دن انتظار ہے تیرا

☆

بھولی بھولی سی لگ رہی تھی تو ــــ پیاری پیاری سی لگ رہی تھی تو
تو پرائی سہی مگر پھر بھی ــــ اپنی اپنی سی لگ رہی تھی تو

☆

جس طرح آج مات کھائی ہے
اِس طرح مات پھر کہاں ہوگی؟

آپ کی بزمِ کیف و مستی میں
قیسؔ سی ذات پھر کہاں ہوگی؟

آج کی رات پھر کہاں ہوگی؟
یہ ملاقات پھر کہاں ہوگی؟

آپ سے پیار تو رہے گا، مگر
آپ سے بات پھر کہاں ہوگی؟

چاند چمکے گا رات بھر، لیکن
چاندنی رات پھر کہاں ہوگی؟

جب بھی جی چاہا، تم سے مِل بیٹھے
ایسی اوقات پھر کہاں ہوگی؟

چوم لو آج میرے اشکوں کو
ایسی برسات پھر کہاں ہوگی؟

تھام لو میرا ڈوبتا ہُوا دل
ایسی سوغات پھر کہاں ہوگی؟

ہم کہیں ہوں گے اور آپ کہیں
شرحِ جذبات پھر کہاں ہوگی؟

اُن کو زیبائی بھی پھبتی ہے، خود آرائی بھی
ہم اگر اہلِ نظر ہیں تو تماشائی بھی

منزلِ عشق پہ دیوانوں کو کیا کچھ نہ ملا
ہجر کی دھوپ بھی تھی، وصل کی پُروائی بھی

سونے دیں گے نہ ترے خواب مجھے آج کی رات
کسی صورت میری آنکھوں میں جو نیند آئی بھی

درِ کعبہ پہ جھکیں یا کہ تری چوکھٹ پر؟
بندے اللہ کے ہیں، تیرے تمنائی بھی

سنتے آئے ہیں ازل سے جو کہانی، اُس میں
کچھ حقیقت بھی ہے، کچھ حاشیہ آرائی بھی

دلِ ناداں! تجھے قاتل سے شکایت کیا ہے؟
تُو نے دیکھی ہے مسیحا کی مسیحائی بھی!

آج پروازِ تخیّل نے اگر ساتھ دیا
مِل ہی جائے گی بھری بزم میں تنہائی بھی

جس میں عالم بھی تھے، فاضل بھی تھے، فنکار بھی تھے
اُسی محفل میں مِلا قیسؔ سا سودائی بھی

جھجکتے کیوں ہو، بتاؤ کہ فیصلہ کیا ہے؟
جو میرا جرم ہے، اُس جرم کی سزا کیا ہے؟

میں کیا کہوں کہ مِرے غم کی ابتدا کیا تھی؟
کوئی بتائے کہ اِس غم کی انتہا کیا ہے؟

مریضِ عشق کو جھوٹی تسلّیاں مت دو
اِسے جو درد ہے، اُس درد کی دوا کیا ہے؟

جو پاس تھے تو مِرے ہاتھ میں زمانہ تھا
جو دُور ہیں تو مِرے ہاتھ میں رہا کیا ہے؟

نہ پوچھیئے کہ خزانے لُٹائے ہیں کیا کیا؟
یہ دیکھیئے کہ مِرے پاس اب بچا کیا ہے؟

جو میری لاش کو دیکھا تو بھولے پن سے کہا
یہ کون ہے؟ ذرا پوچھو، اِسے ہُوا کیا ہے؟

عجب ہے، چھوڑ کے بستی چلے ہیں صحرا کو
جنابِ قیسؔ ہی جانیں، یہ ماجرا کیا ہے؟

کبھی رُخ سے، کبھی رُخساروں سے
ہم تو کھیلا کئے انگاروں سے

بات کرتے ہیں ہمیشہ تیری
کبھی پھولوں سے، کبھی تاروں سے

تم فرشتے ہو، خدا ہو، کیا ہو؟
پوچھ لو اپنے پرستاروں سے

کبھی آکاش کو ہم چیر گئے
کبھی ٹکرا گئے دیواروں سے

بھرے بیٹھے ہیں، چھلک جائیں گے
حال مت پوچھئے بیماروں سے

اب تو رگ رگ سے ٹپکتا ہے لہو
سُر نکلتے نہیں اِن تاروں سے

قیسؔ کا حال عجب ہے، یارو!
بات کرتا ہے تو دیواروں سے

❖

میرے لب پر تری بات آئی
پھول مہکے، کلی مُسکرائی

تیرا آنا، مرا چونک جانا
وہ گھڑی عمر بھر یاد آئی

تیری آواز کا لے کے جادو
خامُشی رات بھر گنگنائی

ساری دنیا پریشان کیوں ہے؟
ہم نے پی جب کسی نے پلائی

جانے، کس نے ہلایا تھا شانہ؟
آج تک نہ ہمیں نیند آئی

کوئی آیا ہے زلفیں بکھیرے
میرے مَولا، دُہائی دُہائی

وہ صنم ہے، خدا تو نہیں ہے
پھر بھی مرتی ہے ساری خدائی

یہ سراپا، یہ حسنِ تناسُب
کس مصوّر کی ہے یہ گھڑائی؟

یہ خدا کے بھی بس کی نہیں تھی
ایسی تصویر کس نے بنائی؟

تاکنا جھانکنا ہر کسی کو
قیسؔ میں تھی یہی اک بُرائی

زندگی راہِ الفت پہ چلتی رہی — آج گرتی رہی، کل سنبھلتی رہی
پوچھتے ہو، شبِ ہجر کیسے کٹی؟ — اشک بہتے رہے، رات ڈھلتی رہی
درد رہ رہ کے پہلو میں اٹھتا رہا — آرزو تھی کہ دل میں مچلتی رہی
خون دم توڑ کر منجمد ہو گیا — نبض پھر بھی کسی طور چلتی رہی
آپ مِل بھی گئے، پھر بچھڑ بھی گئے — بے بسی آج تک ہاتھ ملتی رہی
میں اکیلا تھا، پھر بھی اکیلا نہ تھا — بے کسی عمر بھر ساتھ چلتی رہی
دشمنی کا گلہ کیجئے بھی تو کیا؟ — دوستی بھی تو آنکھیں بدلتی رہی
عشق کی آستیں میں، خدا جانے کیوں — ایک ناگن ازل ہی سے پلتی رہی

قیسؔ کے پاس لے دے کے اک جان تھی
وہ بھی ایسی کہ ہر دم نکلتی رہی

آنکھوں میں بس گئے، مرے دل میں سما گئے
ویران زندگی کو گلِستاں بنا گئے

آہٹ کئے بغیر، دبے پاؤں آ گئے
کس سادگی سے وہ مری دنیا پہ چھا گئے

آنکھوں میں آنکھیں ڈال کے جادو سا ڈھا گئے
ایمان لے گئے، مجھے کافر بنا گئے

بس دیکھتے ہی دیکھتے دنیا بدل گئی
ہر سُو شراب و شعر کے دریا بہا گئے

اپنی وفا کے، پیار کے، موتی بکھیر کر
غم خانۂ حیات میں خوشیاں لُٹا گئے

چاہا تو میری نظم کا عُنوان ہو گئے
چاہا تو شعر بن کے غزل میں سما گئے

آئے وہ بزمِ ناز میں سرمستیاں لئے
دیکھا مجھے تو شرم سے آنکھیں چُرا گئے

اُن کے انداز دل کو سُہانے لگے　　مجھ سے روٹھے، مجھی کو منانے لگے

اُن کو دیکھا تو نظریں وہیں جم گئیں　　ذہن و دل پر کئی رنگ چھانے لگے

میں تو محتاط تھا، سو جھجکتا رہا　　وہ بِلا خوف نزدیک آنے لگے

اُن کا حسنِ نظر، اُن کا حسنِ بیاں　　میرے احساس کو گدگدانے لگے

نقش ایسے کہ جیسے کوئی پھلجھڑی　　یوں لگا، آگ سی اک لگانے لگے

اُن سے، انجانے میں، جانے کیا کہہ دیا؟　　شرم سے زیرِ لب مُسکُرانے لگے

چھوڑیے یہ پُرانی ادا، چھوڑیے　　آپ ناگاہ آنکھیں چُرانے لگے

ہم جہاں بھی گئے، آپ ہمراہ تھے　　ہم بھلا کیوں کسی کو بتانے لگے؟

غیر تو غیر تھے، آپ کو کیا ہُوا؟　　''آپ بھی مجھ پہ تہمت لگانے لگے''

کھو نہ جانا کہیں آن کی آن میں　　آپ کو ڈھونڈنے میں زمانے لگے

آپ کی بے نیازی بھی کیا خوب تھی
آپ آئے کہ جب قیسؔ جانے لگے

★

خود کو روکا بہت، پھر بھی ہم آ گئے
آخِرش، تیرے سر کی قسم آ گئے

پیچ در پیچ راہوں میں ایسے پھنسے
ذہن میں تیری زلفوں کے خم آ گئے

میری خوشیاں جہاں بھر میں بانٹی گئیں
میرے حصّے میں اوروں کے غم آ گئے

تشنگی، دیکھ اب تو ترے سامنے
خونِ دل سے بھرے جامِ جم آ گئے

دل گیا تو غم و رنج و درد و قلق
یک بہ یک آ گئے، دم بدم آ گئے

اب تو سایہ بھی ہم سے گُریزاں سا ہے
کس گلی میں ہمارے قدم آ گئے؟

میکدے کی فضا کتنی خاموش ہے؟
کوئی ساقی سے کہہ دے کہ ہم آ گئے

آج لکھیں گے کچھ آپ کے رُوبرُو
دیکھئے، لے کے کاغذ قلم آ گئے

قیسؔ آئے تو بزمِ سخن بول اٹھی
با ادب! شاعرِ محترم آ گئے

ہوں محفلیں تو جہاں بھر کی بات ہوتی ہے
ہوں خلوتیں تو فقط تُو ہی یاد آتا ہے

ترا جو ذکر کسی سے کریں تو کیسے کریں؟
ترا تو نام بھی اب بھُول بھُول جاتا ہے

نہ کوئی وعدہ نہ امّید، پھر بھی حیرت ہے
چراغِ زیست ابھی تک بھی ٹمٹماتا ہے

اگر مرا تو مروں گا یہ جاننے کے لئے
مِرے جنازے پہ وہ حیلہ ساز آتا ہے؟

وہ در جہاں سے کبھی بھی کسی کو کچھ نہ ملا
یہ قیسؔ اب بھی اُسی در کو کھٹکھٹاتا ہے

مرا کلام جسے آئنہ دکھاتا ہے
وہ دیکھتا ہے تو حیرت میں ڈوب جاتا ہے

نہ جانے کون سا شعر اُس کو یاد آتا ہے؟
نظر ملاتا ہے اور جھینپ جھینپ جاتا ہے

کہیں پہ حسن کے پھندے، کہیں پہ عقل کے جال
غریب عشق جدھر جائے، مات کھاتا ہے

ہجومِ یاس میں گُم ہیں تمام احساسات
خیالِ یار عبث مجھ کو گدگداتا ہے

وہ ایک نخلِ تمنا جو میں نے سینچا تھا
وہ بے ثمر ہی سہی، پھر بھی لہلہاتا ہے

مرا پیامِ محبت تو سیدھا سادہ تھا
یہ کون ہے جو اُدھر حاشئے چڑھاتا ہے؟

تُو مجھ کو چھوڑ گیا، یہ تو تیرے بس میں تھا
ترا خیال مگر لَوٹ لَوٹ آتا ہے

دل میں عجب سا کیف، عجب سا سُرور ہے
کوئی نہ کوئی بزم میں شامل ضرور ہے

موجود ہے مگر وہی عالم گریز کا
مستور ہے مگر وہی شانِ ظہور ہے

یہ کیسی کیفیت ہے کہ مستی بھی، ہوش بھی
ہے نور بھی دُھندلکا، دُھندلکا بھی نور ہے

پھر دل میں جاگنے لگا نظّارگی کا شوق
اب میں ہوں اور سلسلۂ کوہِ طور ہے

جلووں کی تاب ہو کہ نہ ہو، آرزو تو ہے
اور یہ بھی کم نہیں کہ نظر کو شعور ہے

جی چاہتا ہے، آج غزل در غزل کہوں
پر کیا کروں کہ فکرِ سخن چُور چُور ہے

بستی میں، کوہسار میں، وادی میں، دشت میں
چرچا جنابِ قیسؔ کا نزدیک و دُور ہے

ایک مدّت سے تجھے دل میں بٹھا رکھا ہے
تیرے ہر راز کو سینے سے لگا رکھا ہے

مسکراتی ہوئی آنکھوں کا سہارہ لے کر
تُو نے ہر شخص کو دیوانہ بنا رکھا ہے

یہ تری مست نگاہی کا کرم ہے، ورنہ
جام میں، شیشے میں، پیمانے میں کیا رکھا ہے؟

تیرے ہلکے سے تبسم میں یہ کیا تھا ؟جس نے
دل میں جذبات کا طوفان مچا رکھا ہے

تُو اگر پاس نہیں ہے تو کوئی بات نہیں
تیری یادوں سے نگر دل کا بسا رکھا ہے

تیرے آنے کا بھروسہ تو نہیں ہے، پھر بھی
اِک پُجاری نے دِیا دل کا جلا رکھا ہے

نہ خدا سے کوئی رشتہ، نہ بتوں سے ناتا
تیری دہلیز پہ سر اپنا جھکا رکھا ہے

قیؔس خوش وضع تھا، خوش طبع تھا، خوش ذوق بھی تھا
کچھ ہُوا ہوگا جو یہ حال بنا رکھا ہے

دفعتاً بزمِ تصوّر میں چراغاں سا ہُوا
یا کوئی بجلی گری یا تابشِ رخسار ہے

پھر گلستانِ وفا میں سرسراہٹ سی ہوئی
یا نسیمِ صبحگاہی یا تری رفتار ہے

پھر مرے قصرِ تمنا میں بجیں شہنائیاں
پھر کہیں نغمہ سرا پازیب کی جھنکار ہے

پھر دماغ و دل پہ چھائی کیف و مستی کی گھٹا
پھر نگاہوں میں وہی عکسِ جمالِ یار ہے

سن کے میری شعرخوانی اُس پری وش نے کہا
شاعری اچھی ہے لیکن آدمی بیکار ہے

★

فکر کی توفیق ہے نہ طاقتِ گفتار ہے
دل کو پھر بھی آہ و زاری پر عجب اِصرار ہے

علم و فن، مشقِ سخن اور آگہی کافی نہیں
شعر کہنے کے لئے کچھ اور بھی درکار ہے

بزمِ ہستی کے معمّے کون سمجھائے، کیسے؟
یہ کوئی مکتب نہیں، یہ عالمِ اَسرار ہے

یہ وہ خطّہ ہے سمندر بھی جہاں پیاسے رہے
یہ وہ بستی ہے مسیحا بھی جہاں بیمار ہے

یہ وہ گلشن ہے جہاں شاخیں بھی شمشیریں ہوئیں
یہ وہ کھیتی ہے جہاں بادل بھی شعلہ بار ہے

کیا ضروری ہے کہ ہر شے ٹھیک داموں میں بِکے؟
یہ کوئی منڈی نہیں، یہ مصر کا بازار ہے

عاشقی سے تو کئی برسوں کا تھا اُکھڑا ہُوا
''زندگی سے بھی مِرا جی اِن دنوں بیزار ہے''

آج سمندر کی لہریں اونچی بھی ہیں، جوشیلی بھی
یا پانی کی بے چینی ہے یا تیری انگڑائی ہے

پہلو پہلو درد اٹھا ہے، کروٹ کروٹ روئے ہیں
تجھ کو کیا معلوم کہ ہم نے کیسے رَین بِتائی ہے

موڑ موڑ پر بجلی لپکی، منزل منزل تیر گرے
مر مر کر اِس راہ میں ہم نے اپنی جان بچائی ہے

دیکھنے والے دھیان سے دیکھیں، حسن نہیں یہ جادو ہے
یا تو اِس کا منتر ڈھونڈیں یا پھر شامت آئی ہے

کہنے کو تو وصل کی دعوت لے کر کوئی آیا ہے
ہو نا ہو میری تنہائی بھیس بدل کر آئی ہے

ساری سکھیاں پوچھ رہی ہیں آج ہماری رادھا سے
تیرے من کے برندا بن میں کس نے راس رچائی ہے؟

✦

دیکھ ترے دیوانوں کی اب جان پہ کیا بن آئی ہے؟
چپ سادھیں تو دم گھٹتا ہے، بولیں تو رُسوائی ہے

بستی بستی، جنگل جنگل، صحرا صحرا گھومے ہیں
ہم نے تیری کھوج میں اب تک کتنی خاک اُڑائی ہے

دل اپنا سنسان نگر ہے، پھر بھی کتنی رونق ہے
سپنوں کی بارات سجی ہے، یادوں کی شہنائی ہے

یوں تو سب کچھ ہار چکے ہیں، پھر بھی مالامال ہیں ہم
باتیں کرنے کو سناٹے، صحبت کو تنہائی ہے

میرے دل کا چَونک سا جانا اک معمولی جذبہ تھا
وہ تو تیری شوخ نظر تھی جس نے بات بڑھائی ہے

یوں تو تیرے میخانے میں رنگا رنگ شرابیں ہیں
آج وہی انڈیل جو تیری آنکھوں نے چھلکائی ہے

آج تو مے کا اک اک قطرہ جھوم رہا ہے مستی سے
شائد میرے جام سے کوئی خاص نظر ٹکرائی ہے

تمام دن مَیں بناتا رہا تری تصویر
تمام شب ترے نقش و نگار میں گزری

تمام دن تری یادوں سے کھیلتے گزرا
تمام رات ترے اِنتظار میں گزری

وہ مستِ ناز تو ہر انجمن کی جان رہا
غریب قیسؔ کی اُجڑے دیار میں گزری

❖ ❖

وہ شب جو تیرے خیال و خُمار میں گزری
وہی سِتائشِ پروردگار میں گزری

ازل سے گردشِ لَیل و نہار میں گزری
یہ زندگی نہ کبھی بھی قرار میں گزری

کبھی کبھی غمِ جاناں سے رُوشِناس ہوئی
زیادہ تر تو غمِ روزگار میں گزری

کُھلی فضا کا تصوّر بھی پڑ گیا پھیکا
کچھ اِس طرح سے فصِیل و حِصار میں گزری

جدھر نگاہ اٹھی، گلِستاں نظر آیا
مِری، حیات فریبِ بہار میں گزری

سُراغِ راہ نہ کوئی، نہ منزلوں کے نشاں
سفر کی شام تھی، گرد و غُبار میں گزری

اُمید و یاس و فِراق و وِصال و لطف و سِتم
تمام عمر اِسی کاروبار میں گزری

اک آدھ غزل جس پہ اٹھے تھے ترے ابرُو
دِیوان وہی ہے، وہی تفسیر ہماری

یہ قیس بھی کیا ہے ، جسے یہ بھی نہیں معلوم
ہم خواب ہیں تو کون ہے تعبیر ہماری؟

بن بن کے بگڑتی رہی تقدیر ہماری
کام آ نہ سکی کوئی بھی تدبیر ہماری

زِنداں سے نکلنے کا خیال آتا ہے جس وقت
پَیروں سے لِپٹ جاتی ہے زنجیر ہماری

اے دیدۂ گِریاں، اِنہیں لُٹنے سے بچانا
لے دے کے یہی اشک ہیں جاگیر ہماری

دیوانہ کوئی نکلے گا جب پھُونک کے گھر کو
اُبھرے گی ترے ذہن میں تصویر ہماری

اب تجھ سے جو بچھڑے ہیں تو ہر حال میں خوش ہیں
لُٹتی ہے تو لُٹتی رہے توقیر ہماری

عاشق تھے تو ہر کوچے میں چرچا تھا ہمارا
شاعر ہیں تو ہر شہر میں تشہیر ہماری

الفاظ میں تاثیر نہ آواز میں جادو
تحریر ہماری ہے نہ تقریر ہماری

یہ کیا ہُوا کہ مہکنے لگی ہے تنہائی؟
ترے خیال کی شائد چلی ہے پُروائی

یہ کیسی دھیمی سی کانوں میں اک صدا آئی؟
دل و دماغ میں بجنے لگی ہے شہنائی

یہ تیری یاد نے جادو جگا دِئے کیسے؟
ہر آرزو مری لینے لگی ہے انگڑائی

صنم کدوں کے دِئے بھی لرز لرز سے گئے
ترے جمال کی جب رَوشنی نظر آئی

ترے اِشارے پہ دل پھر دھڑک دھڑک اٹھا
زہے نصیب کہ مُردوں نے زندگی پائی

نہ ہم نے جام اٹھایا، نہ ہم نے گھُونٹ بھرا
تری نگاہ نے کچھ اِس طرح سے چھلکائی

ترے ہی دم سے زمانے میں نام تھا اپنا
ترے ہی دم سے ہوئی شہر شہر رُسوائی

وہ تیرا قیسؔ کہ فانُوسِ بزمِ یاراں تھا
جو آج ہے تو فقط ایک نقشِ صحرائی

72

سنتے ہیں کہ صحرا میں پھر بادِ بہار آئی
آنکھوں میں شفا لائی، ہونٹوں پہ دعا لائی

کچھ ہم سے عِلاقہ تھا یا یونہی بھٹکتی تھی؟
تجھ کو تو خبر ہوگی، اے لالہِ صحرائی

ہم خاک نشینوں کا احوال کوئی دیکھے
اک آن تماشا ہیں، اک آن تماشائی

یہ کون سی دنیا ہے؟ آواز نہ آوازے
جب دیکھئے، خاموشی، جب دیکھئے، تنہائی

اک جرمِ محبت نے سَو رنگ دکھائے ہیں
ناکامی و مجبوری، محرومی و رسوائی

اُس دشمنِ ایماں پر اب کون فدا ہوگا؟
ہم نے تو بہت دیکھا، ہم نے تو قسم کھائی

تم قیس کی کہتے ہو؟ اُس آنکھ کی سرمستی
"ایک ایک بگولے کو دیوانہ بنا آئی"

یوں تو ہر روز ہی مانگی ہیں دعائیں ، لیکن
نہ کبھی ہاتھ اٹھائے، نہ کبھی لب کھولے

ذوقِ پرواز ہی کافی تھا اُڑانوں کے لئے
نہ کبھی پنکھ ہلائے، نہ کبھی پَر تولے

ہم نے اِس بحرِ غم و کیف میں کیا کچھ نہ کِیا؟
کبھی طوفان اٹھائے، کبھی موتی رولے

میرے بارے میں بھلا موت کا منشا کیا ہے؟
سوچتی ہے کہ وہ آئے، مِرا گھونگھٹ کھولے

لوگ مشتاق بھی ہیں، گوش بر آواز بھی ہیں
قیسؔ کو چاہیے، ایسے میں زباں تو کھولے

★

تجھ سے روٹھے تو کئی روز نہ خود سے بولے
بارہا تیری ہی یادوں کے دریچے کھولے

تُو بھی خاموش ہے، تصویر بھی تیری خاموش
کوئی تو بات کرے، کوئی تو ہم سے بولے

ہم اگر تجھ پہ فِدا ہیں تو بڑی بات ہے کیا؟
دیکھ لے تجھ کو تو بھگوان کا بھی مَن ڈولے

میری تخیّل مِری ذات سے آگے نہ بڑھی
تیری آنکھوں نے کئی بھید جہاں کے کھولے

میری توفیق بھی کم ہے، مِری اوقات بھی کم
کیا ضروری ہے کہ وہ آنکھ مجھی کو تولے؟

آج کی رات تو جی بھر کے ہمیں رونا ہے
جس کو سونا ہے، بڑے شوق سے جائے، سو لے

جس کے دامن پہ نُمایاں ہے کوئی بھی دھبّہ
میری مانے تو اُسے اشک بہا کر دھو لے

وہ راز بھی کیا راز تھا جس کو دمِ رخصت
انجانے میں اِفشا کیا آنکھوں کی نمی نے

دیکھا جو مِرا حال تو سکتا سا گیا وہ
دل توڑ دیا اُس کا مِری دل شِکنی نے

کل بزمِ حسیناں میں مجھے لے گئے احباب
دیکھا نہ کسی نے مجھے پوچھا نہ کسی نے

تھی ایک نظر جس کو کوئی روک نہ پایا
دِل چیر دیا قیسؔ کا اُس تیز چھری نے

❖

پھولوں نے ، ستاروں نے ، شفق نے نہ تجھی نے
کچھ حال سنا ہے تو مِرا نیم شبی نے

اُس آنکھ کو دیکھا جو مِری تشنہ لبی نے
دیں لاکھ دعائیں مِری آشفتہ سری نے

پھر ہوش اُڑائے مِرے، لِلّٰہ، اُسی نے
دیوانہ بنایا تھا مجھے جس کی کمی نے

کچھ مست نگاہی نے تو کچھ خندہ لبی نے
بیمار کیا مجھ کو اِسی چارہ گری نے

پھر تیز ہوئی قلبِ خرابات کی دھڑکن
جادو وہ جگائے تِری آہستہ روی نے

ایماں کی تو یہ ہے کہ ہے اب کفر بھی ایماں
وہ حشر اٹھایا ہے تِری جلوہ گری نے

وہ قہقہے پھولوں کے، عنادِل کے وہ نالے
کیا یاد دِلایا ہے مجھے تیری ہنسی نے

69

سزا ہو یا جزا ہو، کون جانے — مرا مقسوم کیا ہو، کون جانے
فنا ہو یا بقا ہو، کون جانے — مری ہستی کا کیا ہو، کون جانے
دوا ہو یا دعا ہو، کون جانے — مُداوا غم کا کیا ہو، کون جانے
کرم ہو یا جفا ہو، کون جانے — کسی کے دل میں کیا ہو، کون جانے
بُرا ہو یا بھلا ہو، کون جانے — اِرادہ اُن کا کیا ہو، کون جانے
لبِ نازک پہ ہلکا سا تبسم — اِشارہ ہو، ادا ہو، کون جانے
عجب انداز سے شرما رہے ہیں — مُقابِل آئنہ ہو، کون جانے
مجھے جس کی طلب ہے، وہ ستمگر — مجھی کو ڈھونڈتا ہو، کون جانے
مجھے ملتے ہی آنکھیں پھیر لینا — محبت کا صِلہ ہو، کون جانے
وفاؤں پر جفائیں ہو رہی ہیں — یہی شاید روا ہو، کون جانے
زمانہ جس کو کہتا ہے قیامت — وہی ظالم بلا ہو، کون جانے
جسے دنیا صنم کہتی رہی ہے — وہی کافر خدا ہو، کون جانے
فضائیں محوِ حیرت ہو چلی ہیں — کوئی پردہ اُٹھا ہو، کون جانے
سنائی دے رہی ہے جو ازل سے — خود اپنی ہی صدا ہو، کون جانے
کرو تعظیم اِس دل کی کہ یہ بھی — کسی کا نقشِ پا ہو، کون جانے
ہمیں سر پر بٹھاتا ہے زمانہ — اب اِس کا راز کیا ہو، کون جانے
پڑے ہیں موت کی آغوش میں ہم — اب اِس کے بعد کیا ہو، کون جانے
سفینے کو ڈبو ڈالا ہے جس نے — خدا ہو، ناخدا ہو، کون جانے
یہ زنجیروں کی خاموشی، سنو تو — کوئی قیدی چھٹا ہو، کون جانے

نہ جھانکو قیسؔ کے دل میں، نہ جھانکو
وہاں کوئی چھپا ہو، کون جانے

بن کے شعلہ مرے احساس کو بیدار کرے
بن کے نغمہ مرے افکار میں گونجے کوئی

آنکھ موندوں تو مجھے دیکھ کے کیا کچھ سوچے
آنکھ کھولوں تو مجھے دیکھ کے جھینپے کوئی

قیسؔ شاعر ہے، کوئی شیخ و برہمن تو نہیں
اِس کے اشعار میں وہ بات نہ ڈھونڈے کوئی

پھر مجھے بزم میں لے آئے ہیں، دیکھے کوئی
بات میری نہ سنے کوئی، نہ سمجھے کوئی

صبح ہو، شام ہو، دوپہر ہو یا نیم شبی
گھر کا دروازہ کھُلا رکھو کہ آئے کوئی

بے یقینی سے کوئی میرا سراپا دیکھے
ہو کے حیران، مری آنکھ میں جھانکے کوئی

میری نظروں سے مِرے دل کا دھڑکنا جانچے
اپنی نظروں سے مِری نبض ٹٹولے کوئی

بن کے تصویر مِرے سامنے کچھ یوں بیٹھے
میرے کعبے کو صنم خانہ بنا دے کوئی

بن کے مرہم مِرے ہر زخم کو صحت بخشے
بن کے دارُو مِرا ہر درد سمیٹے کوئی

روشنی بن کے مِرے دل کو منوّر کر دے
بن کے خوشبو مِرے انفاس میں مہکے کوئی

67

پھر کسی بت سے لَو لگائیں گے ایک مندر نیا بنائیں گے
اُس کی صورت پہ دل کریں گے نثار اُس کی آنکھوں میں ڈوب جائیں گے
عشق میں معتبر وہی ہوں گے جیت کر بھی جو ہار جائیں گے
جن سے وابستگی رہی برسوں "کیا خبر تھی وہ بھول جائیں گے"
کوئی آئے نہ آئے، کیا کیجے؟ ہم تو شب بھر دِیے جلائیں گے
ہم جہاں ہیں ، وہاں فقط ہم ہیں تیری باتیں کسے سنائیں گے؟
شامِ ہجراں، تجھے خدا رکھے اب تجھی کو گلے لگائیں گے
ایک ایسا بھی وقت آئے گا ہم اُنہیں، وہ ہمیں منائیں گے
جو فضاؤں میں اُڑ رہے ہیں، اُڑیں ہم قفس ہی میں پھڑپھڑائیں گے
دشت و صحرا بنیں گے بزمِ سخن ہم کسی کے تو کام آئیں گے
صفِ ماتم بچھے قرینے سے آج کے دن تو وہ بھی آئیں گے
زندگی سے تو ہم نبھا نہ سکے موت سے کس طرح نبھائیں گے

آج محفل میں چل کے دیکھیں تو
آج، سنتے ہیں، قیسؔ آئیں گے

❖

کس نے یہ جلوہ نمائی کی ہے؟ بجلیوں نے بھی دُہائی دی ہے
ہر طرف گونج اٹھے ہیں نغمے کس کی آواز سنائی دی ہے؟
کیف میں ڈوب چلی ہیں نظریں کون سی شکل دکھائی دی ہے؟
یوں تو کہنے کو صنم ہے، لیکن اُس کی ہر بات خدائی کی ہے
ایک کافر کو خدا کہہ بیٹھے اور کیا ہم نے بُرائی کی ہے؟
دین و دل دے کے ترا غم پایا عاشقوں نے بھی کمائی کی ہے
کیا کہیں تجھ سے کہ تیری خاطر ہم نے کس کس سے لڑائی لی ہے
رنگ لایا مرا اندازِ سخن اُن نگاہوں نے بدھائی دی ہے
قیسؔ کو چاہیے، اب کھل کھیلے
سامنے رات جدائی کی ہے

ستم ایجاد کو مانُوسِ سوز و ساز کیا کرتے؟
جو خود ہی راز تھا، اُس کو شریکِ راز کیا کرتے؟

خدا جانے، کہاں تھا وہ مگر پھر بھی شبِ ہجراں
اُسے دیتے رہے آواز پر آواز، کیا کرتے؟

جہاں وہ تھا، وہیں مرکوز تھی دنیا بھی جنّت بھی
اب ایسے میں ہم اُس سے شکوۂ اعجاز کیا کرتے؟

ہمیں خواہش تو تھی ہی، آس بھی تھی فیض پانے کی
مگر وہ نازنیں نکلا سراپا ناز، کیا کرتے؟

ہمارے حال پر دنیا بہت روئی، بہت روئی
مگر ہم اُس کا ہنس دینا نظر انداز کیا کرتے؟

گئے تھے اُس کے گھر ہم تو وفاؤں کا صلہ پانے
"جفا کاری سے پیش آیا وہ حیلہ ساز، کیا کرتے؟"

ہم اُس کی بزم میں بیٹھے، اُٹھے اور الوداع چاہی
نگاہِ ناز کے ایسے ہی تھے انداز، کیا کرتے؟

جنابِ قیسؔ اٹھے تھے ترنّم میں غزل پڑھنے
اُسے دیکھا تو کچھ دَب سی گئی آواز، کیا کرتے؟

بظاہر پھولتا پھلتا شجر ہے — نشیمن کو مگر دن رات ڈر ہے
اُدھر برقِ تپاں پر تولتی ہے — اِدھر طائر کو فکرِ بال و پر ہے
نظر کے زاویے چاہے نئے ہوں — زمانہ تو پرانی راہ پر ہے
وہی ارض و سما کی گردشیں ہیں — وہی ہنگامۂ شام و سحر ہے
ستاروں کی وہی ہے جھلملاہٹ — وہی تابانیِ شمس و قمر ہے
پتنگوں کی وہی جاں سوزیاں ہیں — وہی دلداریِ رقصِ شرر ہے
بہاریں اب بھی ہمدردِ چمن ہیں — خزاں کی چال اب بھی پُر خطر ہے
مسافر تو جہاں پر تھے، وہیں ہیں — بظاہر قافلہ گرمِ سفر ہے
کہاں جائے کوئی بہرِ زیارت — ہجومِ آستاں ہے، ایک سر ہے
نظر پھر بھی ضروری ہے، اگرچہ — ''تماشائے جہاں مفتِ نظر ہے''
یہ عُقدہ خوب ہے پر اِس کا مطلب — کسے معلوم ہے، کس کو خبر ہے؟
بشر کا ذہن تو اک کوٹھڑی ہے — نہ رَوزن ہے نہ کھڑکی ہے نہ در ہے
یہ کس نے بے نِقابی کی خطا کی؟ — نِظامِ زندگی زیر و زبر ہے
دوا بھی دی، دعا بھی کر رہے ہیں — مگر بیمار کی حالت دِگر ہے
ترا آنا، مرا دم توڑ دینا — یہ قصّہ تو بہت ہی مختصر ہے

وہ بستی ہو کہ جنگل ہو کہ صحرا
جنابِ قیسؔ کا کوئی تو گھر ہے

ایسے دیوانے کو کچھ دے بھی تو کیا دے کوئی
جو کڑی دھوپ میں بھی رات کی رانی مانگے

وقتِ رخصت مجھے حسرت تھی کہ آگے بڑھ کر
کوئی سینے سے لگے اور نشانی مانگے

مجھ کو تو ایسے سمندر پہ ترس آتا ہے
جو لگے پیاس تو صحراؤں سے پانی مانگے

دل کو ماضی سے وہ رغبت ہے کہ بہرِ تفریح
نئی دُکّان سے بھی چیز پرانی مانگے

قیؔس ویسے تو مۓ زُہد کا شیدائی ہے
پھر بھی کمبخت بڑھاپے میں جوانی مانگے

طبع ہر حال میں مضموں کی روانی مانگے
فکر الفاظ کے پردوں میں معانی مانگے

شوق بیگانۂ تشریح و عبارت ٹھہرا
عقل گنجینۂ اَسرارِ نہانی مانگے

دل کو آیات سے، کلمات سے کچھ کام نہیں
جب بھی مانگے کوئی دلچسپ کہانی مانگے

حسن وہ آگ کہ ہر اہلِ پرستش کے لیے
مستقِل سلسلۂ شعلہ فِشانی مانگے

عشق وہ سانپ کہ جس کا نہیں منتر کوئی
اِس کا کاٹا ہوا مشکل ہے کہ پانی مانگے

میں وہ فرزانہ کہ ہر بات سلیقے سے کہوں
"غم وہ افسانہ کہ آشفتہ بیانی مانگے"

وہ جو اک شخص تھکا ہارا سا گھر لَوٹا ہے
کیا تعجب ہے اگر شام سُہانی مانگے؟

اِظہارِ تمنّا نہ کِیا ہے نہ کریں گے
یوں عشق کو رسوا نہ کِیا ہے نہ کریں گے

ساقی سے تقاضا نہ کِیا ہے نہ کریں گے
ہم نے کبھی ایسا کِیا ہے نہ کریں گے

جس بات کے سننے کو ہے بے تاب زمانہ
اُس بات کا چرچا نہ کِیا ہے نہ کریں گے

جو دل پہ ستم ڈھاتے ہیں، ڈھاتے ہی رہیں گے
ہم نے کبھی شکوہ نہ کِیا ہے نہ کریں گے

جل جائیں گے پر ایک بھی شعلہ نہ اٹھے گا
ہم نے یہ دِکھاوا نہ کِیا ہے نہ کریں گے

انسان ہیں ہم، کوئی فرشتے تو نہیں ہیں
ایسا کبھی دعویٰ نہ کِیا ہے نہ کریں گے

ہم پہنیں گے خود اپنا کفن اپنے ہی ہاتھوں
اوروں پہ بھروسہ نہ کِیا ہے نہ کریں گے

وہ رشکِ مسیحا ہیں مگر ایک کمی ہے
مجھ قیسؔ کو اچھا نہ کِیا ہے نہ کریں گے

اب دل بھی اپنے بھید ہمیں سے چُھپائے ہے
پوچھے کوئی کہ کیوں اُسی کافر پہ آئے ہے؟

جب بھی تری تلاش کو نکلے، بھٹک گئے
ہے کوئی راستہ جو ترے گھر کو جائے ہے؟

دیوانگیٔ شوق نے کیا حال کر دیا؟
اب تو نگاہِ ناز بھی دامن بچائے ہے

اب خلوتوں میں لطفِ تصوّر نہیں رہا
اب تو خیالِ یار بھی ڈر ڈر کے آئے ہے

اب ہم تو انتظار کی شمعیں بُجھا چکے
دل پھر بھی تیری آس کے دیپک جلائے ہے

ہے جان اضطراب میں، نبضیں نڈھال ہیں
وہ کون ہے جو دُور کھڑا مسکرائے ہے؟

یہ زندگی تو ہم کو کبھی کی بھلا چکی
اب کیا کریں کہ موت بھی آنکھیں چُرائے ہے

کیا بات ہے کہ کوئی کسی کا نہیں رہا؟
صحرا بھی اب تو قیسؔ سے پیچھا چُھڑائے ہے

دلِ وحشی، تجھے صحرا کی ضرورت کیا ہے؟
خاک اُڑا ایسی کہ بستی ہی بیاباں ہو جائے

عمر بھر قیسؔ نے پُوجا اُسی کافر بت کو
ہم نے تو لاکھ کہا تھا کہ مُسلماں ہو جائے

زندگی بھر کی مُدارات کا ساماں ہو جائے
رات کی رات اگر وہ مِرا مہماں ہو جائے

پھر مرے سامنے اک چاند سا چہرہ چمکے
پھر مری آنکھ اُسے دیکھ کے حیراں ہو جائے

میری تخئیل بصد ناز قصیدے لکھے
میرا احساس بصد شوق غزل خواں ہو جائے

میرے جذبات کی کلیاں، مِرے نغمات کے پھول
ایسے مہکیں کہ یہ گھر رشکِ گلستاں ہو جائے

کہیں جگنو ، کہیں تارے ، کہیں فانُوسِ خیال
ایسے چمکیں کہ جہاں بھر میں چراغاں ہو جائے

ڈال جا پھر وہی نگہِ غلط انداز، اے دوست!
کیا بُرا ہے جو کسی پر کوئی احساں ہو جائے؟

عشق ہر حال میں پردے پہ یقیں رکھتا ہے
حسن جب چاہے، جہاں چاہے، نمایاں ہو جائے

اب تجھ سے کسی بات کا شکوہ بھی نہیں ہے
حالانکہ وطیرہ ترا اچّھا بھی نہیں ہے

آنکھوں میں وہ مبہم سے اشارے بھی نہیں ہیں
ہونٹوں پہ کوئی جھوٹا سا وعدہ بھی نہیں ہے

اُمّیدِ وفا تجھ سے اگر تھی تو کبھی تھی
اب تو دلِ ناداں کو یہ دھوکہ بھی نہیں ہے

تُو چاہے تو حال اپنا سنا دیں تجھے کھُل کر
تجھ سے تو کسی بات کا پردہ بھی نہیں ہے

بس ایک جھلک پائی کہ چندھیا گئیں آنکھیں
ہم نے تو تجھے غور سے دیکھا بھی نہیں ہے

اب اور ستم سہنے کی طاقت نہیں، لیکن
دل ہے کہ تری بزم سے اٹھتا بھی نہیں ہے

تُو روح کا مالک بھی، دل و جاں کا امیں بھی
کہنے کو تو تجھ سے کوئی رشتہ بھی نہیں ہے

یہ قیسؔ نہ مومن ہے نہ صوفی ہے مگر دیکھ
جو تُو نے سمجھ رکھا ہے، ویسا بھی نہیں ہے

ساقی کی چشمِ مست بھی کیا بے لحاظ تھی
اک اک کو ٹال ٹال گئی، خاص کر مجھے

ہر لحہ تیری یاد سے رہتا ہوں ہم کلام
کیوں ٹوکتی ہے گردشِ شام و سحر مجھے؟

منزل ملی تو پاس سے ہو کر گزر گیا
اٹھ اٹھ کے دیکھتی رہی گردِ سفر مجھے

یہ کون سا مقام ہے راہِ وفا میں، قیسؔ؟
میں ہم سفر کو ڈھونڈتا ہوں، ہم سفر مجھے

★

دینے لگے ہیں لوریاں دیوار و در مجھے
یہ کون یاد آ گیا پچھلے پہر مجھے

لینی پڑی ہے بادۂ گلفام کی پناہ
بہکا رہی تھی شام سے تیری نظر مجھے

بادِ بہار آئی بیاباں میں بھی، مگر
وا حسرتا کہ لَوٹ گئی دیکھ کر مجھے

مل ہی گیا بگولوں سے میرا پتہ تجھے
پُروائیوں سے مل گئی تیری خبر مجھے

تیری گلی تو تیری گلی ہے، خدا پناہ!
یاں کاٹنے کو دوڑتا ہے میرا گھر مجھے

سَو مشوروں سے بھی نہ کوئی بات بن سکی
شکوے اُدھر اُنہیں رہے، شکوے اِدھر مجھے

اک میں کہ تم کو یاد نہ آیا تمام عمر
اک تم کہ یاد آئے ہو آٹھوں پہر مجھے

دلِ مُضطر کا تڑپنا نہیں دیکھا جاتا
کسی صورت اِسے بہلاؤ کہ کچھ رات کٹے

تشنہ کامی کی قسم، آج تکلّف نہ کرو
جس قدر ہو سکے ، چھلکاؤ کہ کچھ رات کٹے

یہ تسلّی، یہ تشفّی، یہ دِلاسے چھوڑو
اک غزل قیسؔ کی سنواؤ کہ کچھ رات کٹے

★

میرے جذبات کو سہلاؤ کہ کچھ رات کٹے
میرے احساس کو سمجھاؤ کہ کچھ رات کٹے

میری بھولی ہوئی یادو، مجھے اپنا سمجھو
آؤ، آ کر مجھے تھپکاؤ کہ کچھ رات کٹے

وہ کہانی جو مجھے گود میں لے لیتی تھی
اُس کہانی ہی کو دہراؤ کہ کچھ رات کٹے

جگنوؤ ، اتنا نہ چمکو کہ کوئی سو نہ سکے
میری سن پاؤ تو سو جاؤ ، کہ کچھ رات کٹے

جانِ من، آج بہت دیر کے بعد آئی ہو
آج آنکھوں میں سما جاؤ کہ کچھ رات کٹے

دن بھی بھاری تھا، مگر کٹ ہی گیا رو دھو کر
رات پھر رات ہے، رک جاؤ کہ کچھ رات کٹے

تم چلی جاؤ گی، اُڑ جائیں گی نیندیں میری
کچھ ذرا اور ٹھہر جاؤ کہ کچھ رات کٹے

یہی طرزِ تعلّق ہے تو کیا طرزِ تعلّق ہے؟
تغافُل مستقِل تیرا ، توجّہ عارِضی تیری

اُدھر وہ قیسِ نم دیدہ ، اِدھر ہنستی ہوئی آنکھیں
یہی اِخلاص ہے تیرا ، یہی ہے دوستی تیری

✦

56

نہ جانے، کب سے چالیس چل رہی تھی دل لگی تیری
کہ اب تو رات دن ہونے لگی ہے بندگی تیری

وفائیں ہوں، جفائیں ہوں، شکایت کیا؟ تقاضا کیا؟
تری محفل، ترے جلوے، رضا تیری، خوشی تیری

یہ کیا تھا جس نے خوابِ مست سے چونکا دیا مجھ کو؟
کوئی آواز تھی یا بھولی بسری یاد تھی تیری؟

تری فرقت میں بھی احساس ہوتا ہے رفاقت کا
''تری موجودگی میں بھی کھٹکتی ہے کمی تیری''

کبھی فرہاد و شیریں کے فسانے تھے مگر اب تو
زمانہ بات کرتا ہے کبھی میری، کبھی تیری

تری محفل میں یوں تو سینکڑوں باتیں سنیں ہم نے
مگر کانوں میں اب تک گونجتی ہے ان کہی تیری

یہ سچ ہے، خوئے انسانی نہ بدلی ہے نہ بدلے گی
وہی مسلک رہا میرا، وہی عادت رہی تیری

تم اگر روٹھ بھی جاؤ تو کوئی بات نہیں
اک غزل کہہ کے منا لوں گا، تم آؤ تو سہی

تشنہ کامی کی قسم، شام کے آتے ہی تمہیں
صورتِ جام اٹھا لوں گا، تم آؤ تو سہی

ساعتِ وصل کی میعاد بڑھانے کے لئے
دن کو بھی رات بنا لوں گا، تم آؤ تو سہی

تم کو کچھ پیار بھرے گیت سنانے کے لئے
قیسؔ صاحب کو بُلا لوں گا، تم آؤ تو سہی

55

تم کو سینے سے لگا لوں گا، تم آؤ تو سہی
اپنی پلکوں پہ بٹھا لوں گا، تم آؤ تو سہی

اپنی بانہوں میں سُلا لوں گا، تم آؤ تو سہی
کچھ لگی دل کی بجھا لوں گا، تم آؤ تو سہی

کہیں جذبات کی کلیاں، کہیں نغمات کے پھول
گھر کا ہر طاق سجا لوں گا، تم آؤ تو سہی

غم کے آثار کہ زینت ہیں مرے چہرے کی
اِن کو چہرے سے ہٹا لوں گا، تم آؤ تو سہی

چشمِ نم پونچھ کے رکھوں گا تمہاری خاطر
دل کا ہر زخم چھپا لوں گا، تم آؤ تو سہی

سر تو کیا چیز ہے؟ اِن پاؤں کے صدقے، اے دوست
آسماں کو بھی جھکا لوں گا، تم آؤ تو سہی

میرے گھر کے در و دیوار بھی کہتے ہیں یہی
بھولا بھٹکا کبھی آجا، ترا جاتا کیا ہے؟

قیسؔ بیزار ہے تجھ سے تو کوئی بات نہیں
بات تو یہ ہے کہ اس شخص کو بھاتا کیا ہے؟

54

مجھ سے رغبت ہے تو پھر مجھ سے چھپاتا کیا ہے
آنکھ سے آنکھ ملا، جھینپ سا جاتا کیا ہے؟

میں نے دیکھی ہے تری مست نگاہی کی ادا
رقصِ پیمانہ مرے دل کو لبھاتا کیا ہے

یہ تو مانا کہ تری شام سہانی گزری
بات اغیار کی ہے، مجھ کو سناتا کیا ہے

رنج و غم، جور و ستم، دل شکنی، دل سوزی
اپنے احسان بھلا مجھ پہ جتاتا کیا ہے

میں جو روٹھا ہوں تو روٹھا ہی مجھے رہنے دو
جھوٹے وعدوں سے، مری جان، مناتا کیا ہے

تُو ہر اک بزم کی رونق، میں کہیں کا بھی نہیں
کس کو معلوم کہ تیرا مرا ناتا کیا ہے؟

اب وہ پہلے سے تعلّق تو نہیں ہیں، پھر بھی
"دیکھ کر مجھ کو ترے ذہن میں آتا کیا ہے"؟

وہ بجلیوں کی لپک ہو کہ جگنوؤں کی چمک
جگر میں آگ لگائے تو اُس کو کیا کہیے

گلوں کے سوگ میں بلبل کی مرثیہ خوانی
دلوں کو چیر سی جائے تو اُس کو کیا کہیے

کوئی حسین کلی اوس میں نہاتی ہوئی
جو انگ انگ چھپائے تو اُس کو کیا کہیے

زبانِ قیسؔ پہ لطفِ وصال کی باتیں
وہ سن کے جھینپ سا جائے تو اُس کو کیا کہیے

53

جفا جو جی کو جلائے تو اُس کو کیا کہیے
وفا بھی راس نہ آئے تو اُس کو کیا کہیے

کسی کے خواب ستائیں تو اُن کا کیا کیجے
کسی کی یاد رُلائے تو اُس کو کیا کہیے

جو سامنے ہی نہ آئے تو اُس کو کیا دیکھیں
جو آنکھ ہی نہ ملائے تو اُس کو کیا کہیے

جو مل بھی جائے تو ایسے کہ جانتا ہی نہیں
نہ کچھ سُنے نہ سُنائے تو اُس کو کیا کہیے

خداترس ہے مگر پھر بھی وہ بتِ کافر
ستم سے باز نہ آئے تو اُس کو کیا کہیے

نسیمِ صبح جو اُس کی گلی سے گزری ہے
مری گلی میں نہ آئے تو اُس کو کیا کہیے

وہ ایک جھونکا جو اُس کے بدن سے کھیلا ہے
اِدھر سے ہو کے نہ جائے تو اُس کو کیا کہیے

52

پاس آؤ تو کوئی بات بنے   مسکراؤ تو کوئی بات بنے
روٹھنے سے تو بات بڑھتی ہے   مان جاؤ تو کوئی بات بنے
بیتی باتوں میں کچھ نہیں رکھا   بھول جاؤ تو کوئی بات بنے
میں تمہارا نہیں تو کس کا ہوں؟   یہ بتاؤ تو کوئی بات بنے
روزِ محشر تو روزِ محشر ہے   آج آؤ تو کوئی بات بنے
میں کڑے کوس کا مسافر ہوں   ساتھ آؤ تو کوئی بات بنے
میری باہیں سنبھال لیں گی تمہیں   ڈگمگاؤ تو کوئی بات بنے
ہاتھ تو ہر کوئی مِلاتا ہے   دل مِلاؤ تو کوئی بات بنے
ہر طرف چھا رہی ہے تاریکی   جگمگاؤ تو کوئی بات بنے
جام و مینا بُجھے بُجھے سے ہیں   آنکھ اٹھاؤ تو کوئی بات بنے
میری دنیا ہے گوش بر آواز   لب ہلاؤ تو کوئی بات بنے
ہر زباں پر ہے داستاں میری   تم سناؤ تو کوئی بات بنے

دل میں رکھتے ہو قیسؔ کی غزلیں؟
گنگناؤ تو کوئی بات بنے

کسی کو لُوٹ گئیں دلربائیاں تیری
کسی کو مار گئیں کج ادائیاں تیری

نظامِ دہر کو کیسا پلٹ دیا تُو نے؟
کہ خلق دینے لگی ہے دہائیاں تیری

عجب نہیں کہ شفق کا بھی رنگ اُڑ جائے
کہیں جو دیکھ لے جلوہ نمائیاں تیری

دعا کو ہاتھ اٹھانا ترا بوقتِ سحر
وہ گورے ہاتھ، وہ گوری کلائیاں تیری

زمانہ کس لئے کہتا ہے بیوفا تجھ کو؟
ہمیں تو یاد نہیں بیوفائیاں تیری

تجھے ملے بھی تو آنکھیں تجھے نہ دیکھ سکیں
نظر میں جھوم رہی تھیں جدائیاں تیری

مری غزل پہ عنادل بھی رشک فرمائیں
اگر نصیب ہوں نغمہ سرائیاں تیری

زمانہ بھول نہ پائے گا روزِ محشر تک
جبینِ قیسؔ کے سجدے، خدائیاں تیری

دل و نظر میں اگر رشکِ حور ہے کوئی
کوئی بتائے کہ میرا قصور ہے کوئی؟

اگرچہ میری رسائی سے دُور ہے ہر شے
مِری نگاہ کی زد میں ضرور رہے کوئی

وفورِ غم میں بھی کیف و نشاط کا عالم
نظامِ دہر میں وجہِ سُرور ہے کوئی

کبھی کبھی تو جدائی میں یوں ہُوا محسوس
کہ خلوتوں میں بھی میرے حضور ہے کوئی

اِدھر گدازِ محبت میں دل کی سرشاری
اُدھر خُمارِ جوانی میں چُور ہے کوئی

وہی چمک، وہی تابش، وہی فُسوں کاری
ترا جمال ہے یا برقِ طور ہے کوئی

ترے خیال کی صحبت میں یوں لگا جیسے
نہ آس پاس ہے کوئی، نہ دُور ہے کوئی

سنیں جو قیسؔ کی باتیں تو برملا بولے
تری سمجھ میں یقیناً فتور ہے کوئی

بات ہونٹوں پہ چلی آئی ہے
اب تو رُسوائی ہی رُسوائی ہے

دل دھڑکنے کی بھی آواز نہیں
کوئی تنہائی سی تنہائی ہے؟

اک فقط آپ نہیں ہیں، ورنہ
رات ہے، چاند ہے، پُروائی ہے

خونِ بلبل نے نِکھارا ہے چمن
لوگ کہتے ہیں، بہار آئی ہے

یوں تو ہر چیز ہے پیاری اُس کی
پھر بھی ہرجائی تو ہرجائی ہے

پھر وہ نظریں، وہی نظریں اُٹھیں
ہو نہ ہو، میری قضا آئی ہے

ہر ادا اُس کی ہے قاتل قاتل
پھر بھی اک شانِ مسیحائی ہے

موت کو چاہیے، آرام کرے
ہم نے جینے کی قسم کھائی ہے

48

گزرتے جا رہے ہیں ماہ و سال آہستہ آہستہ
بدلتے جا رہے ہیں خدّ و خال آہستہ آہستہ

ابھی تک تمتماتے ہیں جو ماضی کی شعاؤں میں
عیاں ہوگا اِنہیں چہروں سے حال آہستہ آہستہ

کوئی اِتنا تو سمجھا دے مرے تیمارداروں کو
خدا کے واسطے پوچھیں سوال آہستہ آہستہ

مقام و وقت کی پگڈنڈیوں پر ایک مدّت سے
لئے پھرتے ہیں کچھ خواب و خیال آہستہ آہستہ

عجب تھا وار اُس کا جس نے یک دم خاک کر ڈالا
مزا جب تھا کہ ہم ہوتے نڈھال آہستہ آہستہ

غزل گوئی کوئی مشکل نہیں، پر واقعہ یہ ہے
غزل گوئی میں آتا ہے کمال آہستہ آہستہ

یہ تیرا قیسؔ بے کس، عین ممکن ہے، سنبھل جاتا
اگر ہوتا تماشائے جمال آہستہ آہستہ

47

ترے حسن نے ہے بخشا یہ مزاجِ عاشقانہ
تری دلکشی نے سونپی یہ نوائے شاعرانہ

مرا دل ہُوا ہے جب سے تری آنکھ کا نشانہ
یہ فضا ہے بہکی بہکی، یہ جہاں شراب خانہ

میں زمیں کا ایک ذرّہ، تُو فلک کا اک ستارہ
مرے ہاتھ میں لکیریں، ترے ہاتھ میں زمانہ

نہ خدا کی سوچتا ہوں، نہ بتوں کی سوجھتی ہے
مرے دل کو بھا گئی ہے تری شانِ کافرانہ

کبھی میکدے کے در پر، کبھی تیری رہگزر میں
مری رات کٹ گئی ہے جہاں مل گیا ٹھکانہ

کئی بار سن چکا تھا ترے حسن کی کہانی
کئی بار کہہ چکا ہوں ترے عشق کا فسانہ

کوئی قیسؔ جی سے پوچھے، یہ کلام ہے تو کس سے؟
سبھی لوگ جانتے ہیں کہ غزل تو ہے بہانہ

ہٹا لو یہ دَیر و حرم، دوستو　　مجھے مل گیا جامِ جم، دوستو
ملیں حسن کی روح فرسائیاں　　ملے عشق کے پیچ و خم، دوستو
کہاں کی حقیقت، کہاں کا مجاز؟　　کہاں کے وُجود و عدم، دوستو؟
زمانے کی گردِش کا چارہ نہیں　　ہوئی ہے نہ ہوگی یہ کم، دوستو
روِیّے پُرانے، بہانے نئے　　کھُلا دوستی کا بھرم، دوستو
چلو، میکدے کی زیارت کریں　　ڈبو آئیں دو چار غم، دوستو
یہ الفاظ کا رقصِ جادو اثر　　یہ آواز کے زیر و بم، دوستو
کہیں دل ستانی کی ارضِ جمیل　　کہیں فکر و فن کا اِرم، دوستو
کہیں گنگا جمنا کی سرگوشیاں　　کہیں رمزِ مصر و عجم، دوستو
اِنہیں سے عبارت مری شاعری　　اِنہیں سے ہے زورِ قلم، دوستو

"فضائے بیاباں نے دی ہے خبر"
لیا قیسؔ نے پھر جنم، دوستو!

اوروں کی روش اور ہے، اپنی ہے روش اور
اوروں کی طرح ہم ہیں نہ اوروں کی طرح تُو

یہ عشق ہے، بازیچۂ اطفال نہیں ہے
آ، کھیل! مگر کھیل نہ بچّوں کی طرح تُو

یہ قیسؔ دِوانہ نہیں، مخمورِ ازل ہے
اِس سے نہ جھجک اور حسینوں کی طرح تُو

دن بھر تو مہکتا رہا پھولوں کی طرح تُو
رات آئی، چمکنے لگا تاروں کی طرح تُو

یادوں میں ابھرتا رہا بن بن کے فرشتہ
خوابوں میں نظر آیا تو پریوں کی طرح تُو

تُو پھول بھی، تتلی بھی، شفق اور دھنک بھی
چھایا ہے مِری فکر پہ رنگوں کی طرح تُو

تُو سب سے جدا، سب سے الگ، سب سے انوکھا
لگتا ہے مجھے میرؔ کے شعروں کی طرح تُو

تجھ سے کبھی ملتے ہیں تو اپنوں کی طرح ہم
ہم سے کبھی ملتا ہے تو غیروں کی طرح تُو

جب چاہتے، سینے سے لگا لیتے تجھے ہم
اے کاش کہ ہوتا تری یادوں کی طرح تُو

یہ ساتھ کسی طور چُھٹا ہے نہ چُھٹے گا
کانٹوں کی طرح ہم ہیں تو پھولوں کی طرح تُو

44

نظر کا دے کے سہارا بچا لیا مجھ کو
میں گر رہا تھا، کسی نے اٹھا لیا مجھ کو

میں روٹھنے ہی لگا تھا کہ اُن نگاہوں نے
گلے میں ڈال کے بانہیں منا لیا مجھ کو

میں ایک اشک تھا لیکن کسی کی پلکوں نے
جہان بھر کی نظر سے چھپا لیا مجھ کو

یہ دوستی تھی کہ جادو گری کہ راہزنی؟
نظر بچا کے مجھی سے چُرا لیا مجھ کو

میں آسماں پہ بڑی عافیت سے بیٹھا تھا
غمِ جہاں نے زمیں پر بُلا لیا مجھ کو

کسی خوشی نے مجھے آج تک نہ پہچانا
تمہارے غم نے گلے سے لگا لیا مجھ کو

یہ زندگی تو مجھے قتل کرنے والی تھی
بھلا ہو موت کا جس نے بچا لیا مجھ کو

اب جانے دے، جانے دے مجھے، اے شبِ ہجراں!
شب بھر تو رکے وہ جسے امّیدِ سحر ہو

اِس بزمِ ادیباں میں بھلا قیسؔ کا کیا کام؟
اُس رندِ خرابات میں کوئی تو ہنر ہو

☆

سنبھلے سے اِشارات ہوں، سنبھلی سی نظر ہو
پہلی سی محبت نہ سہی، کچھ تو مگر ہو

ساغر ہو، صُراحی ہو، مئے زُود اثر ہو
جینا کوئی مشکل نہیں، سامان اگر ہو

چوکھٹ ہو کہ دہلیز، دریچہ ہو کہ در ہو
جیسا بھی ہو، کہنے کے لئے، کوئی تو گھر ہو

ہم جس کی تجلّی کے ہیں مشتاق ازل سے
وہ کافرِ آفاق، خدا جانے، کدھر ہو

ہم جان بھی دے دیں تو کوئی دیکھے نہ دیکھے
وہ ہونٹ ہلا دیں تو زمانے کو خبر ہو

تنہائی میں رہ کر بھی میں تنہا نہیں رہتا
رہتا ہے کوئی ساتھ، سفر ہو کہ حضر ہو

سب کی یہ دعا ہے کہ میں اس روگ سے چھوٹوں
میری یہ دعا ہے کہ دعا میں نہ اثر ہو

ذرّے ذرّے کی زباں پر ہیں نئے پیغامات
کھُل چلا عالمِ اَسرار، ابھی رک جاؤ

تم اور آسودگیِ کون و مکاں قبضے میں
میں اور آلام کی یلغار، ابھی رک جاؤ

یہ گھٹا ٹوپ اندھیرا، یہ سیاہی ہر سُو
اور اِدھر تابشِ رخسار، ابھی رک جاؤ

بھیگا بھیگا سا یہ ماحول کچھ ایسا ہے کہ اب
گرمیِ حسن ہے درکار، ابھی رک جاؤ

پھر مرے دل میں تمناؤں نے کروٹ بدلی
عشق ہونے لگا بیدار، ابھی رک جاؤ

قصرِ امّید کہ برسوں میں ہوا ہے تعمیر
ہو نہ جائے کہیں مسمار، ابھی رک جاؤ

آج کچھ پیار بھرے گیت سنانے ہیں تمھیں
اور کچھ قیسؔ کے اشعار، ابھی رک جاؤ

42

دیدہ و دل کو ہے اِصرار، ابھی رک جاؤ
ہر رگِ جاں ہے طلبگار ، ابھی رک جاؤ

آنکھ کہتی ہے کہ دیدار کی حسرت ہے ابھی
پھر ذرا دیکھ لے اک بار، ابھی رک جاؤ

ہونٹ کہتے ہیں کہ ہر بات ادھوری ہی رہی
اور اک لمحۂ گفتار، ابھی رک جاؤ

ہاتھ باندھے در و دیوار کھڑے ہیں کب کے
بات کرنے سے ہیں لاچار، ابھی رک جاؤ

تم چلے جاؤ گے، ہو جائیں گی سانسیں بوجھل
کون جھیلے گا یہ آزار، ابھی رک جاؤ

شام ہو جائے گی بے حال غمِ فرقت میں
رات پڑ جائے گی بیمار، ابھی رک جاؤ

رُوئے افلاک پہ چھائے ہیں گھنیرے بادل
ابھی چھڑنے کو ہے ملہار، ابھی رک جاؤ

تھام لو دل مِرا، سینے سے لگا لو مجھ کو
میں بکھر جانے کو ہوں، آؤ سنبھالو مجھ کو

بعد مُدّت کے بڑے شوق سے روٹھا ہوں میں
مان بھی جاؤ، کسی طرح منا لو مجھ کو

یہ تو سچ ہے کہ میں اپنا نہیں، بیگانہ ہوں
بن کے انجان کبھی اپنا بنا لو مجھ کو

میں ذرا آنکھ سے اوجھل ہوں مگر ہوں تو سہی
دے کے آواز کسی وقت بُلا لو مجھ کو

میں کبھی اشکِ ندامت، کبھی سوزِ الفت
کبھی پلکوں میں، کبھی دل میں چھپا لو مجھ کو

مے کدے والو! بڑی دیر کا پیاسا ہوں میں
چشمِ ساقی کی قسم، اور نہ ٹالو مجھ کو

چاند تاروں سے بھی کچھ دُور ہے بستی میری
دوستو! اور، ذرا اور، اُچھالو مجھ کو

قیسؔ ہوں، دشت نوردی سے ابھی لَوٹا ہوں
اتنی جلدی تو نہ بستی سے نکالو مجھ کو

رنگِ فراق و میر جو منظور ہو تمہیں
اُس مہ جبیں کو سامنے میرے بٹھاؤ تو

اِس بحرِ بیکراں سے نکلنا محال ہے
لے کر خدا کا نام، یہیں ڈوب جاؤ تو

خونِ جگر سے بنتی نہیں قیسؔ کی غزل
تھوڑا سا اس میں رنگِ حِنا بھی مِلاؤ تو

❖

جس سے غزل مُراد ہے ، اُس کو بُلاؤ تو
جیسے بھی ہو سکے اُسے محفل میں لاؤ تو

وہ پیکرِ جمال بھی ہے، جانِ حسن بھی
اِس انجمن کو آج اُسی سے سجاؤ تو

وہ نغمگی بھی، نور بھی، نکہت بھی، رنگ بھی
کیا کچھ نہیں ہے اُس میں، اگر دیکھ پاؤ تو

پھر آرتی اُتارو اُسی مستِ ناز کی
ساغر کھنک اٹھیں جو اُسے گنگناؤ تو

شمعیں تو جل رہی ہیں مگر روشنی نہیں
اُن عارِضوں کی لَو ذرا اِن کو دکھاؤ تو

جام و سبو کی خیر ہو، اے پیرِ میکدہ
رِندوں کو آج اُس کی نظر سے پلاؤ تو

دنیا کے تذکروں سے تو اُکتا چلا ہے جی
چھیڑو اُسی کی بات، اُسی کی سناؤ تو

تیری مانیں تو پارسا ہو جائیں　　ایک غمناک حادِثہ ہو جائیں
ایک سہمی ہوئی صدا ہو جائیں؟　　ایک ٹوٹا ہوا دِیا ہو جائیں؟
عمرِ رفتہ کا مرثیہ ہو جائیں؟　　آپ اپنا ہی فاتحہ ہو جائیں؟
جن کی پہچان عیب ہی سے ہو　　وہ بھلا کیسے با صفا ہو جائیں؟
آدمی خاک بھی ، بگولا بھی　　ہم جو چاہیں تو کیا سے کیا ہو جائیں
عین ممکن ہے ، تجھ میں گم ہو کر　　جُز و کل کا مُعامِلہ ہو جائیں
ہم پہ پڑ جائے گر نظر تیری　　اپنی نظروں میں ہم خدا ہو جائیں
سرفرازی سی سرفرازی ہو　　ہم اگر تیرا نقشِ پا ہو جائیں
میرے نغموں کو آرزو ہے یہی　　بن سنور کر تری قبا ہو جائیں
میرے اشعار پر یہ لازِم ہے　　حمد تیری ، تری ثنا ہو جائیں
میری نظمیں ہوں یا مِری غزلیں　　تیرے حق میں سبھی دعا ہو جائیں
سامنے آ کہ روبرو دیکھیں　　ہو نہ ہو ، تیرا آئنہ ہو جائیں
کیا عجب ہے کہ ایک دن ہم بھی　　تیری ہستی کا مُدّعا ہو جائیں

قیسؔ صاحب کو روز نہ ٹال
کہیں ایسا نہ ہو ، خفا ہو جائیں

✦

ایسا بھی ہُوا ہے راتوں کو جب اٹھ اٹھ کر ہم روئے ہیں
زخموں کے پھول کھِلائے ہیں، اشکوں کے ہار پِروئے ہیں

تیری تصویر کو دیکھا ہے، تیری تصویر کو چوما ہے
یوں آنکھوں کو بہلایا ہے، یوں سوکھے ہونٹ بھِگوئے ہیں

اِس جوشِ جنُوں کی کیا کہیئے، بے ہوشی بھی بے چینی بھی
مدّت سے تمہارے دیوانے نہ جاگے ہیں نہ سوئے ہیں

اِس دردِ محبت نے آخر احسان کیا ہے دونوں پر
کچھ ہم بھی پریشاں حال سے ہیں، کچھ آپ بھی کھوئے کھوئے ہیں

سَو بار تمہاری محفل میں اِس دل کو صدمہ پہنچا ہے
سَو بار تمہاری محفل میں ہم آنکھ بچا کر روئے ہیں

ہمیں نے خونِ دل دے کر سجایا بیل بوٹوں کو
ہمیں نے لٹتے دیکھی ہے چمن کی آبرو برسوں

دعائیں دو مرے الفاظ کو، میرے تخیّل کو
بکھیرے ہیں تمہاری انجمن میں رنگ و بُو برسوں

جسے 'اے قیسؔ' تُو سمجھا تھا حاصل لاکھ سجدوں کا
پھرایا ہے اُسی کافر نے تجھ کو کُو بہ کُو برسوں

37

ہمارے دل میں تھی تو تھی تری ہی آرزو برسوں
زمیں سے تا فلک کی ہے تری ہی جستجو برسوں

نہ خلوت میں تجھے دیکھا، نہ جلوت میں تجھے پایا
رہا پوشیدہ پوشیدہ، نہ آیا روبرو برسوں

گل و غنچہ کبھی مائل نہ دیکھے لب کشائی پر
خس و خاشاک سے تو خیر کی ہے گفتگو برسوں

عجب دستور ہے ساقی، ترے پینے پلانے کا
نہ ہم نے جام دیکھا ہے، نہ دیکھا ہے سبو برسوں

اُسے ملنے کے ہم مشتاق تھے ہر حال میں، لیکن
ہمیں ملنے سے کتراتا رہا وہ حیلہ جُو برسوں

مِرے جیسا کہاں ہوگا؟ جو عاشق بھی ہو شاعر بھی
''دُکھا کر دل مِرا پچھتائے گا وہ تندخُو برسوں''

گل و گلزار پر یہ رنگ کیوں ہے، تازگی کیوں ہے؟
کلی سے پوچھئے، جس نے بہایا ہے لہو برسوں

عشق میں بے حجاب ہو جائیں
اُس کی رعنائیوں میں کھو جائیں

زندگی بھر جو دُور دُور رہا
آج اُس کے قریب ہو جائیں

وہ جو ہر سانس میں سمایا ہے
اُس کو ہر شعر میں سمو جائیں

اُس کی برسوں پُرانی مالا میں
چند موتی نئے پِرو جائیں

چشمِ گریاں ترے نِثار، اگر
اشکِ غم داغ دل کے دھو جائیں

کہیں ایسا نہ ہو کہ یہ آنسو
غیرتِ عشق کو ڈُبو جائیں

وہ عجب ہیں کہ دل کو شاد کریں
اور پھر آنکھ بھی بھِگو جائیں

یوں تو ہر زخم پر دھریں مرہم
ساتھ نِشتر بھی کچھ چُبھو جائیں

بادلوں سے کہو کہ آج کی رات
آئیں اور آ کے مجھ کو رو جائیں

کوئی اپنا اگر نہیں ہوتا
کیوں نہ ہم ہی کسی کے ہو جائیں؟

دَیر و کعبہ بہت ہوا ، اب تو
کوئی کافر بُلائے تو جائیں

زندگی بھر تو سو نہیں پائے
موت آئی ہے، اب تو سو جائیں

قیسؔ اٹھے ہیں شعر خوانی کو
اہلِ محفل خموش ہو جائیں

❖

بات کرتے ہیں مِری، شعر مِرے پڑھتے ہیں
جب بھی اِس شہر میں کچھ اہلِ زباں ملتے ہیں

قیسؔ، اور اُن سے ملاقات کا دعویٰ، توبہ!
وہ تو ایسے ہیں کہ ایسوں سے کہاں ملتے ہیں؟

کیا کہیں، وہ ہمیں کس وقت کہاں ملتے ہیں؟
ہوش اُڑ جاتے ہیں جس وقت جہاں ملتے ہیں

کوئی بستی ہو کہ جنگل ہو کہ ویرانہ ہو
ہر جگہ اپنے ہی قدموں کے نشاں ملتے ہیں

ہم تو بس ایک تبسّم ہی پہ بک سکتے ہیں
لیکن اب ایسے خریدار کہاں ملتے ہیں؟

درِ میخانہ کھُلا ہے، چلو دیکھیں تو سہی
اُن میں کیا عیب ہے جو لوگ یہاں ملتے ہیں؟

زلفِ جاناں سے کہو، اور ذرا لہرائے
اِس کے سائے میں ہمیں دونوں جہاں ملتے ہیں

حالِ دل اپنا سنائیں تو سنائیں کیسے؟
آپ رہتے ہیں کہاں، آپ کہاں ملتے ہیں؟

دلِ عاشق میں جو رہتے ہو تو رہتے جاؤ
قسمتیں ہوں تو کہیں ایسے مکاں ملتے ہیں

وہ شخص جس سے کہ برسوں کی آشنائی تھی
کچھ آج ایسا ملا جیسے جانتا بھی نہیں

یہ قیسِ شیریں سخن اب تو ایک مدّت سے
بہت اداس سا رہتا ہے ، بولتا بھی نہیں

خود اپنا حال کبھی آپ سے کہا بھی نہیں
اگر کہا ہے تو پھر آپ نے سنا بھی نہیں

ہمارے درد کی ، یا رب، کوئی دوا بھی نہیں
کسی کے لب پہ ہمارے لئے دعا بھی نہیں

یہ کِس مقام پہ پھینکا ہے لا کے قسمت نے
اندھیری رات ہے اور پاس اک دِیا بھی نہیں

وہ دن بھی تھے کہ زمانے میں دھوم تھی اپنی
یہ دن بھی ہیں کہ کوئی ہم کو کوستا بھی نہیں

ہم اُس کی آنکھ پہ سب کچھ لٹائے بیٹھے ہیں
جو آنکھ اٹھا کے کبھی ہم کو دیکھتا بھی نہیں

ابھی سے بزمِ دل و جاں میں اِنتشار سا ہے
ابھی تو اُس کی گلی میں قدم دھرا بھی نہیں

ہم اُس کی یاد میں گھلتے رہیں، یہ تاب کہاں؟
ہم اُس کو دل سے بھلا دیں ، یہ حوصلہ بھی نہیں

رہ جاؤ اگر پاس ہمارے کسی صورت
مر جائیں جو چھیڑیں کبھی مر جانے کی باتیں

اغیار کی محفل میں نہ جایا کرو، جاناں
واں پر تو ہُوا کرتی ہیں بہکانے کی باتیں

سُننی ہیں تو پھر قیسؔ کے الفاظ میں سنئے
فرزانے کی باتیں ہوں کہ دیوانے کی باتیں

آئے ہو تو بیٹھو، نہ کرو جانے کی باتیں
اچھی نہیں اپنوں پہ ستم ڈھانے کی باتیں

تم آنکھ اٹھا کر ذرا دیکھو تو ، مری جاں!
ہے کوئی جو چھیڑے یہاں میخانے کی باتیں

ہم وہ ہیں کہ جب سے تمہیں پوجا ہے، تبھی سے
کعبے میں بھی ہوتی ہیں صنم خانے کی باتیں

تم شعلہ بداماں ہو، جگر سوختہ ہم ہیں
وہ شمع کی باتیں ہیں، یہ پروانے کی باتیں

مت پوچھو کہ کیا حال ہوا تم سے بچھڑ کر
اب یاد نہیں تم سے بچھڑ جانے کی باتیں

کلیوں سے سنے تھے ترے شرمانے کے قصے
بھنوروں سے سنی ہیں ترے کھل جانے کی باتیں

تاروں میں نظر آئی تری آنکھ مچولی
موجوں نے سنائیں ترے بل کھانے کی باتیں

وہ جو نظریں جھکائے ہوئے ہیں میری دنیا پہ چھائے ہوئے ہیں
یوں تو پردہ ہٹائے ہوئے ہیں پھر بھی خود کو چھپائے ہوئے ہیں
کل تلک میرا دل، میری جاں تھے آج آنکھیں چُرائے ہوئے ہیں
مجھ کو دیکھا مگر بے رخی سے جانے، کِس کے سِکھائے ہوئے ہیں
میرے چُھوتے ہی گھبرا کے بولے ''ہم تو گنگا نہائے ہوئے ہیں''
آزماتے ہیں جو ہر کسی کو وہ مِرے آزمائے ہوئے ہیں
ہر کوئی مہرباں ہے ہمیں پر ہم سبھی کے ستائے ہوئے ہیں
جس کو دیکھو، وہ پہنچا ہوا ہے اک ہمیں ہیں کہ آئے ہوئے ہیں
کون آتا ہے اپنی رضا سے؟ ہم کسی کے بُلائے ہوئے ہیں
آج محفل میں جانا ہی ہوگا
آج تو قیسؔ آئے ہوئے ہیں

صحرا کو رشکِ باغ کروں تو قلم اٹھے
پانی کو گر شراب کروں تو غزل کہوں

فکر و نظر تو ذہن کے ادنیٰ سے کھیل ہیں
لفظوں کا انتخاب کروں تو غزل کہوں

میری چلے تو قیسؔ کو پیری کے باوجود
دل بستۂ شباب کروں تو غزل کہوں

اُس شوخ سے خِطاب کروں تو غزل کہوں
تھوڑا بہت حِساب کروں تو غزل کہوں

کچھ اُس کو بے نِقاب کروں تو غزل کہوں
کچھ خود کو بے حجاب کروں تو غزل کہوں

کچھ شکوہِ عتاب کروں تو غزل کہوں
یہ کارِ لا ثواب کروں تو غزل کہوں

ہر پھول کو گلاب کروں تو غزل کہوں
جگنو کو ماہتاب کروں تو غزل کہوں

قطرے کو موج ، موج کو دریا کا روپ دوں
ذرّے کو آفتاب کروں تو غزل کہوں

سوزِجگر سے آتی نہیں شعر میں تپش
دل کو اگر کباب کروں تو غزل کہوں

پھر آج اُس نگاہ نے پوچھے ہیں سَو سوال
اب جرأتِ جواب کروں تو غزل کہوں

گلاب آنکھیں، شراب آنکھیں
یہی تو ہیں لاجواب آنکھیں
اِنہیں میں الفت، اِنہیں میں نفرت
ثواب آنکھیں، عذاب آنکھیں
کبھی نظر میں بلا کی شوخی
کبھی سراپا حجاب آنکھیں
کبھی چُھپاتی ہیں راز دل کے
کبھی ہیں دل کی کتاب آنکھیں
کسی نے دیکھیں تو جھیل جیسی
کسی نے پائیں سراب آنکھیں
میں سر بہ سجدہ تھا میکدے میں
تھیں ذہن و دل میں شراب آنکھیں
وہ آئے تو لوگ مجھ سے بولے
حضور، آنکھیں! جناب، آنکھیں!
عجیب تھا گفتگو کا عالم
سوال کوئی، جواب آنکھیں
اُدھر کھڑا تھا وہ ماہ پیکر
گھنیرے گیسو، سحاب آنکھیں
اِدھر نِشستہ تھے قیسؔ صاحب
خراب نیت، خراب آنکھیں

✦

تیرا یہ تبسّم ترے وحشی کی نظر میں
انعام کا انعام ہے ، احسان کا احسان

تفریقِ من و تُو ہے بُری چیز کہ اس میں
کچھ میرا بھی نقصان ہے، کچھ تیرا بھی نقصان

لگتا ہے کہ اک روز تُو آئے گا یقیناً
ہنگامہ بپا ہوگا اگر مجھ میں رہی جان

اک میں ہوں کہ ہر وقت وہی حال، وہی چال
اک تُو ہے کہ ہر لحظہ نئی آن نئی شان

گر قیسؔ سے مِلیو تو ذرا سوچ کے مِلیو
انسان کا انسان ہے ، شیطان کا شیطان

★

کس درجہ دل آویز تھی، اے دوست، تری شان
ایمان بھی اب کفر ہے ، اب کفر بھی ایمان

ساغر ہو کہ پیمانہ ، سبو ہو کہ صراحی
سب کیف کے آلات ہیں ، تُو کیف کا عنوان

تُو رونقِ میخانہ بھی، تزئینِ حرم بھی
تُو مجھ سے شناسا نہ سہی، خود کو تو پہچان

تُو مجھ کو فرشتہ نہ سمجھ ، جانِ تمنا
انسان ہوں، انسان ہوں ، انسان ہوں ، انسان

دل شائقِ دیدار ہے ، جاں مائلِ ایثار
اے کاش ، وہ دن آئے کہ ہو تُو مِرا مہمان

تُو مجھ سے پرے رہ مگر اتنا نہ پرے رہ
کچھ عقل کی سن بات تو کچھ دل کا کہا مان

طوفانِ حوادث کو یہ معلوم نہیں ہے
میں تیرا نگہبان ہوں، تُو میرا نگہبان

بنے ہیں ہم جو تری شعلگی کے پروانے
چراغِ بزم بھی اب تجھ کو جل کے دیکھتے ہیں

ملا تو ہم نے تجھے اپنی مملکت سمجھا
بچھڑ گیا ہے تو اب ہاتھ مَل کے دیکھتے ہیں

لگاؤ کیا ہے؟ جنوں کیا ہے؟ وحشتیں کیا ہیں؟
حِصارِ عقل سے باہر نکل کے دیکھتے ہیں

یہ قیس کیا ہے؟ کبھی اہلِ دیں کبھی کافر
حسین پھر بھی اِسے راہ چل کے دیکھتے ہیں

❖

زمیں پہ سبزہ و گل آنکھ مَل کے دیکھتے ہیں
فلک سے چاند اُسے رخ بدل کے دیکھتے ہیں

یہ رقصِ موج نہیں ہے ، یہ بیقراری ہے
وہ سامنے ہو تو پانی مچل کے دیکھتے ہیں

سنا ہے اُس کو کوی لوگ اچّھے لگتے ہیں
یہ بات ہے تو چلو ہم بھی چل کے دیکھتے ہیں

سنا ہے اُس کے سبھی زاویے ہیں قابلِ دید
تبھی تو ہم اُسے پہلو بدل کے دیکھتے ہیں

ہر ایک آنکھ سرِ بزم ہم سے لپٹی ہے
اسی لئے تو اُسے ہم سنبھل کے دیکھتے ہیں

ہوئی ہے جب سے تری دلبری نصیب ہمیں
مزاج اور ہی اپنی غزل کے دیکھتے ہیں

اِسی امید پہ ، شاید کہ تیری باس آئے
کلی کلی کو چمن میں مسل کے دیکھتے ہیں

جب کبھی تلخیِ حالات سے گھبراتا ہوں
تیرے پُر کیف تصوّر سے لپٹ جاتا ہوں

جب بھی چھڑتا ہے ترا ذِکر کسی محفل میں
بے ارادہ تری یادوں میں الجھ جاتا ہوں

اک زمانے سے نرالی ہے عبادت میری
نام لیتا ہوں ترا، گیت ترے گاتا ہوں

چشمِ ساقی، مجھے مَیخانے سے کچھ کام نہیں
میں جو آتا ہوں تو بس تیرے لئے آتا ہوں

میری آنکھوں سے تو اب نیند بھی کتراتی ہے
رات بھر دل کو تری یاد سے بہلاتا ہوں

ترکِ الفت کا ارادہ تو کِیا ہے، لیکن
جب بھی سنتا ہوں ترا نام، مچل جاتا ہوں

عشق کی راہ کچھ اِس طرح کٹی جاتی ہے
چوٹ کھاتا ہوں، تڑپتا ہوں، سنبھل جاتا ہوں

مسحور کر لیا ہے مجھے اِس کے لوچ نے
دلدادۂ نِگارشِ اردو زباں ہوں میں

مجھ سے جدیدیت کی امیدیں؟ خدا پناہ!
میں قیسؔ ہوں، جہانِ کہن کا نِشاں ہوں میں

جَور و ستم کے مارے ہُوؤں کی زباں ہوں میں
بے مہریٔ جہاں، ترا افسانہ خواں ہوں میں

ظاہر ہے میرے حال سے ہر دل کا اضطراب
غم خانۂ حیات، ترا ترجماں ہوں میں

یاں ایک دوسرے سے کوئی آشنا نہیں
ہر اِک سے پوچھتا ہوں کہ آخر کہاں ہوں میں؟

دامن میں میرے پھول بھی ہیں اور خار بھی
تصویرِ امتزاجِ بہار و خزاں ہوں میں

میرے ہی دم سے ساغر و مینا میں ربط ہے
ساقی ہوں، بادہ خوار ہوں، پیرِ مغاں ہوں میں

کچھ ڈر نہیں ہے تنگیٔ حالات کا مجھے
پروردۂ نشاطِ غمِ دو جہاں ہوں میں

اے جذبِ شوق، کوئی نیا راستہ نکال!
مدّت گزر گئی ہے، پسِ کارواں ہوں میں

نہ جُزو و کُل کا مُعامِلہ ہوں، نہ آفرینش کا مدّعا ہوں
کتابِ ہستی کا اک ورق ہوں، ہوائے اِمکاں میں اُڑ رہا ہوں

کبھی تمنا جہان بھر کی، کبھی ہر اک شے سے بے نیازی
کبھی توجہ کی جستجو ہے، کبھی تغافل کو ڈھونڈتا ہوں

سفر کی یہ کون سی ہے منزل، نہ پائے رفتن نہ جائے ماندن
نسیم آسا چلا تھا گھر سے، غُبار بن کر بکھر گیا ہوں

تجھے گماں پر یقیں کا دعویٰ، مجھے یقیں پر گماں کا دھوکا
نہ تُو ہی میری طرح بنا ہے، نہ میں ہی تیری طرح بنا ہوں

حُدودِ سُود و زیاں سے آگے نکل گیا ہے شعور میرا
کرم کسی کا، جفا کسی کی، نہ ناپتا ہوں نہ تولتا ہوں

خدا سے دوٹوک کہہ دیا ہے، تُو میرا خالق میں تیرا خالق
تُو میری تخئیل کا کرشمہ، میں تیری صنعت کا معجزہ ہوں

نہ کنجِ خلوت میں چین پایا، نہ انجمن مجھ کو راس آئی
برونِ محفل غریب سا تھا، درونِ محفل عجیب سا ہوں

24

اب وہ پہلے سے ماہ و سال نہیں — وہ بلاخیزیِ جمال نہیں
اب کہاں حسن میں وہ رعنائی؟ — وہ دل آویز خدّ و خال نہیں
ہم بھی اب مضطرب نہیں اتنے — دل پریشاں تو ہے، نڈھال نہیں
جس کی صحبت میں روز و شب گزرے — آج وہ بھی شریکِ حال نہیں
سینکڑوں ہرنیاں تھیں بستی میں — دشت میں ایک بھی غزال نہیں
آج شادی ہے اور کل ماتم — وقت پابندِ اعتدال نہیں
سب سے دل جوئی، ہر کسی سے لگاؤ؟ — ''تم کو میرا ذرا خیال نہیں''؟
تھی کبھی آس تم سے ملنے کی — اب تو اتنا بھی احتمال نہیں
تم کو قربت سے عار ہے تو رہے — ہم کو بھی فرصتِ وصال نہیں
غم پرستوں کا کال ہے، جاناں — غمزدوں کا تو کوئی کال نہیں
اُکھڑی اُکھڑی سی ہے مگر پھر بھی — زندگی اِس قدر محال نہیں

قیسؔ جب تک جِیا، خدا صدقے!
مر گیا ہے تو کچھ ملال نہیں

بات کرنے کا وہ انداز، وہ لہجہ تیرا
جیسے کُھل جائے کسی مدبھری بوتل کا دہن

روح فرسا ہے مہکتی ہوئی ہر موجِ نفس
جان لیوا ہے چہکتا ہوا ہر عُضوِ بدن

آ کچھ ایسے کہ تجھے دیکھ کے اُڑ جائیں حواس
جا کچھ ایسے کہ تری یاد میں رہ جاؤں مگن

میرے اشعار نے کیا کیا نہ جگائے جادو
کوئی دیکھے مِری صنعت، مِری جَودت، مِرا فن

اَوجِ تخئیل کچھ ایسا کہ ہمالا کانپے
طبع کچھ ایسی رواں، پانی بھریں گنگ و جمن

وہ ستمگر تو کسی کا بھی نہیں ہے، یارو!
قیسِ ناداں سے کہو، ہوش کا تھامے دامن

نہ تفکّر ہے، نہ احساس، نہ توفیقِ سخن
پھر مجھے سونگھ گئی کوئی نشیلی ناگن

طائرِ عرش تھا، پرواز تھی منزل میری
آہوئے دشت ہُوں، آوارگی میرا مسکن

میں ہُوں وہ پھول کہ جو زینتِ صحرا ٹھہرا
لوگ کیوں ڈھونڈ رہے ہیں مجھے گلشن گلشن

چاند تاروں پہ تو چلتا ہے ہمارا سِکّہ
یہ الگ بات کہ دھرتی ہے ہمیں سے بدظن

تیرے تیور تو بہر گام بدل جاتے ہیں
یاں وہی جان کی اُلجھن، وہی دل کی دھڑکن

تیرے چہرے پہ شِگُفتہ ہیں تر و تازہ گلاب
میرے چہرے سے نُمایاں کئی صدیوں کی تھکن

دیکھنا میری طرف اور دھڑک سا جانا
جیسے پانی پہ پڑے اور پھسل جائے کرن

مری خموش لبی پر شکائتیں کیسی؟
میں اپنے آپ سے بولوں تو تجھ سے بات کروں

یہ وہ مقام ہے، یا میں ہوں یا مری خلوت
میں اس مقام سے گزروں تو تجھ سے بات کروں

یہ موج موج تلاطم، یہ ڈوبنا میرا
میں اتّفاق سے ابھروں تو تجھ سے بات کروں

زبانِ قیسؔ پہ ہر وقت تیری باتیں ہیں
زبانِ قیسؔ جو سیکھوں تو تجھ سے بات کروں

✦ ✦ ✦

22

حصارِ ذات سے نکلوں تو تجھ سے بات کروں
تری صِفات کو سمجھوں تو تجھ سے بات کروں

تو کوہسار میں، وادی میں، دشت و صحرا میں
میں تجھ کو ڈھونڈ نکالوں تو تجھ سے بات کروں

تو شاخ شاخ پہ بیٹھا ہے پھول کی صورت
میں خار خار سے الجھوں تو تجھ سے بات کروں

ترے اشاروں سے بڑھ کر ترا بیاں مبہم
میں تیری بات کو سمجھوں تو تجھ سے بات کروں

تو اتنا دُور کہ پہچاننا بھی مشکل ہے
تجھے قریب سے دیکھوں تو تجھ سے بات کروں

جھجک جھجک کے اگر ہو تو بات بات نہیں
میں تیری آنکھ میں جھانکوں تو تجھ سے بات کروں

تو میرا دوست ہے، دشمن ہے یا کہ کچھ بھی نہیں؟
میں تیرے دل کو ٹٹولوں تو تجھ سے بات کروں

"یاں ذوقِ دید بھی ہے عبادت کے ساتھ ساتھ"
اُٹھیں گے ایک روز اِسی آستاں سے ہم

اپنے اِک اِک مسام سے چَھنتا ہے نور سا
کچھ یوں نکھر کے آئے ہیں کوئے بُتاں سے ہم

جچتی نہیں نگاہ میں اب انجمن کوئی
جلوے جہاں ہزار تھے، لَوٹے ہیں واں سے ہم

"ہر روز روزِ عید ہے، ہر شب شبِ برات"
ہیں بے نیاز اِن دنوں سود و زیاں سے ہم

وہ قیسِؔ نامُراد، نہ جانے، کدھر گیا؟
اُس لامکاں کو ڈھونڈ کے لائیں کہاں سے ہم؟

گھبرا گئے ہیں وُسعتِ کون و مکاں سے ہم
جاتے نہیں ہیں دُور کہیں آشیاں سے ہم

جتنا ڈرا دِیا ہے ہمیں اِس زمین نے
اِتنا بھلا ڈرے تھے کبھی آسماں سے ہم؟

اب کیف و اِنبساط کی پروا نہیں رہی
مانوس یوں ہوئے ہیں غمِ جاوِداں سے ہم

اپنا جو حال ہے وہ عیاں ہے، نِہاں نہیں
پھر کیا بتائیں آپ کو اپنی زباں سے ہم؟

مشقِ فُغاں کریں تو ہلا دیں دلِ وُجود
گو دیکھنے کو لگتے ہیں کچھ ناتواں سے ہم

کچھ الفتوں کے رنج ہیں، کچھ آفتوں کے غم
"کچھ دل سے ہیں ڈرے ہوئے، کچھ آسماں سے ہم"

اے جذبِ شوق کوئی نیا راستہ نکال
اب تک وہیں کھڑے ہیں، چلے تھے جہاں سے ہم

ہم فقیروں سے تجھے اتنی کدُورت ہے تو کیوں؟
نام ہی لیتے ہیں تیرا، اور کیا لیتے ہیں ہم؟

تیری صورت دیکھ لی، جلوے بھی تیرے چُن لئے
اب اِجازت ہو تو اپنا راستہ لیتے ہیں ہم

زندگی بھر قیس تیری راہ میں حائل رہا
آج تیری راہ سے اِس کو ہٹا لیتے ہیں ہم

کس سلیقے سے شبِ ہجراں سجا لیتے ہیں ہم
تُو نہیں تو تیری یادوں کو بُلا لیتے ہیں ہم

دردِ دل ، سوزِ جگر ، اُفتادگی جسم و جاں
بوجھ بھاری ہے مگر پھر بھی اٹھا لیتے ہیں ہم

شامِ غم کو اور بھی رنگیں بنانے کے لیے
مَے میں کچھ خونِ تمنا بھی مِلا لیتے ہیں ہم

حالِ دل اپنا کسی پر کیا کُھلے، کیسے کُھلے؟
اک ہنسی کی آڑ میں سَو غم چُھپا لیتے ہیں ہم

ساز کے تاروں سے ہم نے کچھ تو سیکھا ہے سبق
چوٹ جب پڑتی ہے دل پر ، گُنگُنا لیتے ہیں ہم

تیرے در سے جو بھی مِل جائے، مبارک ہے ہمیں
پھول ہو یا خار ، سینے سے لگا لیتے ہیں ہم

اک زمانے سے نرالی ہے ہماری بندگی
نام جب سُنتے ہیں تیرا ، سر جھکا لیتے ہیں ہم

ہم نے دنیا سے چُھپائی نہ کوئی چیز، مگر
ہم نے دنیا سے چُھپایا ہے تو بس ایک ہی شخص

ہم سے روٹھے جو زمانہ تو ہنسی آتی ہے
ہم نے رو رو کے منایا ہے تو بس ایک ہی شخص

کُنجِ خلوت کے در و بام سجانے کے لئے
آج بھی ہم نے بُلایا ہے تو بس ایک ہی شخص

جب بھی جھانکا ہے دلِ قیسؔ کی پہنائی میں
واں پہ کوئی نظر آیا ہے تو بس ایک ہی شخص

19

میری آنکھوں میں سمایا ہے تو بس ایک ہی شخص
میرے افکار پہ چھایا ہے تو بس ایک ہی شخص

اپنی پلکوں پہ بٹھایا ہے تو بس ایک ہی شخص
خانۂ دل میں بسایا ہے تو بس ایک ہی شخص

جاگتے میں کوئی بھایا ہے تو بس ایک ہی شخص
خواب میں سامنے آیا ہے تو بس ایک ہی شخص

میں کہ افلاک پہ بیٹھا تھا بصد عِزّ و جلال
مجھ کو اس خاک پہ لایا ہے تو بس ایک ہی شخص

چاندنی یوں تو میسّر تھی سبھی کو، لیکن
اِس میں جی بھر کے نہایا ہے تو بس ایک ہی شخص

بزمِ ہستی میں ملے یوں تو کئی زہرہ جبیں
ہم نے سینے سے لگایا ہے تو بس ایک ہی شخص

دَیر و کعبہ میں بہت کچھ تھا مگر کیا کہیے
ہم نے معبود بنایا ہے تو بس ایک ہی شخص

18

پہلے تو میری جرأتِ تدبیر دیکھنا
پھر اہتمامِ شُومیِ تقدیر دیکھنا

جب آنکھ مُوندنا، ترے بارے میں سوچنا
جب آنکھ کھولنا، تری تصویر دیکھنا

آنسو بکھر بکھر گئے، آہیں ہوا ہُوئیں
لُٹتی ہے کیسے عشق کی جاگیر، دیکھنا

اب وہ بھی پوچھتے ہیں مری بے کسی کا حال
للّٰہ، میری آہ کی تاثیر دیکھنا

مجرم تو جان دینے کو تیار ہے مگر
کیوں کانپتی ہے آپ کی شمشیر، دیکھنا

کہتے ہیں لوگ، کوئی مُقرِر نہیں ہوں میں
بات اُس کی ہو تو پھر مری تقریر دیکھنا

میرا تو کیا ہے، آج گیا کل گیا مگر
اک دن کلامِ حضرتِ تنویر[1] دیکھنا

کیا حسنِ التفات تھا، کیا حسنِ احتیاط
حلقہ بہ حلقہ قیس کی زنجیر دیکھنا

1۔ میرے عزیز دوست شعیب تنویر صاحب جوان دنوں کناڈا میں مقیم ہیں۔

ترے بعد تیرے مریض کا، تجھے کیا بتائیں کہ کیا ہُوا؟
تری یاد آ کے تھپک گئی، ترا درد آ کے ڈُبو گیا

وہ جو ہر کسی کا رقیب تھا، شب و روز تیرے قریب تھا
وہی قیسؔ، تیری تلاش میں، وہ پھرا کہ آپ ہی کھو گیا

ترى آنکھ اٹھی تو میں رک گیا، ترے لب ہلے تو میں کھو گیا
نہ تری خطا، نہ مری خطا، یہ تو حادِثہ تھا کہ ہو گیا

تری آنکھ کا جو خمار تھا، مرے روم روم میں بس گیا
ترے روپ کا جو نکھار تھا، مرے انگ انگ کو دھو گیا

کہیں تیری جلوہ نُمائیاں، کہیں میری نغمہ سرائیاں
تُو ہزار موتی لُٹا گیا، میں ہزار موتی پرو گیا

مری زندگی کا سوال تُو، مری شاعری کا کمال تُو
تُو سما گیا مری روح میں، میں غزل میں تجھ کو سمو گیا

وہی بزم تھی، وہی جام تھے، وہی اُلٹے سیدھے پیام تھے
یہ تو ظرف ظرف کی بات تھی، کوئی ہنس گیا، کوئی رو گیا

صبح شام مستِ سفر ہے جو، اُسے صبح کیا، اُسے شام کیا؟
جہاں جاگ اٹھا وہیں چل پڑا، جہاں تھک گیا وہیں سو گیا

یہ ترا خیال مرے لئے، کبھی آس ہے کبھی یاس ہے
کبھی دل میں پھول کھلا گیا، کبھی آنکھ میری بھگو گیا

16

اشتیاقِ خُم و سبُو نہ گیا
هم میں جو عیب تھا، کبھو نہ گیا

مدّتوں گلِستاں سے دُور رہے
پھر بھی احساسِ رنگ و بو نہ گیا

ہم نے پائی نہ ایک بھی منزل
پھر بھی ارمانِ جستجو نہ گیا

اشک باری کا فیض تو دیکھو
میں عبادت کو بے وضو نہ گیا

منہ سے نکلی تھی ایک بات کبھی
آج تک شورِ ہا و ہُو نہ گیا

کوئی سنتا نہیں مِری، پھر بھی
سر سے سودائے گفتگو نہ گیا

میری گردن تو کٹ گئی، لیکن
آستیں سے تِری لہو نہ گیا

میں تو کب کا سُدھر چکا، لیکن
تیرا اندازِ دُو بدُو نہ گیا

با وجودِ عنائتِ یاراں
دل سے اندیشۂ عُدو نہ گیا

کُوئے جاناں کو ساری خلق گئی
قیسؔ منحوس، ایک تُو نہ گیا

دل کسی مہ جبیں پر فدا ہو گیا
بیٹھے بیٹھے یہ کیا ماجرا ہو گیا؟

اُن کی نظریں اُٹھیں، جام تھرّا گئے!
میکدے میں عجب حادثہ ہو گیا!

کچھ ہماری نظر ہی کا اعجاز تھا
ہم نے جس بت کو دیکھا، خدا ہو گیا!

دوستی کے لئے ہم نے آواز دی
بس اِسی پر زمانہ خفا ہو گیا

ہم کسی کو بھی اپنا بنا نہ سکے
آپ جس سے ملے، آپ کا ہو گیا

ترکِ الفت کا جب بھی ارادہ کیا
بس وہیں آپ کا سامنا ہو گیا

حالِ بیمارِ الفت کا اچھا نہ تھا
آپ آئے تو کچھ حوصلہ ہو گیا

ہوک اُٹھی تو کچھ بے قراری گھٹی
درد حد سے بڑھا تو دوا ہو گیا

جو بھی ملتا ہے، کہتا ہے ''کیا بات ہے؟
تُو تو ہر بات میں قیسؔ سا ہو گیا''

چلے ہیں حضرتِ واعظ کی گفتگو سننے
جو سنتے سنتے ہنسی آ گئی تو کیا ہوگا؟

یہ قیسؔ محفلِ رنداں کی جان ہے، یارو!
جو پارسائی اِسے بھا گئی تو کیا ہوگا؟

کلی امید کی مرجھا گئی تو کیا ہوگا؟
چمن میں پھر سے خزاں آ گئی تو کیا ہوگا؟

وہ بات جس نے مچائی ہیں ہلچلیں دل میں
اگر لبوں پہ کبھی آ گئی تو کیا ہوگا؟

سنا ہے آج وہ محفل میں آنے والے ہیں
نظر نظر سے جو ٹکرا گئی تو کیا ہوگا؟

ہم اپنے دل کا فسانہ سنا تو دیں، لیکن
کسی کی آنکھ جو شرما گئی تو کیا ہوگا؟

یہ منزلوں کے ارادے تو ٹھیک ہیں، لیکن
جو راستے ہی میں نیند آ گئی تو کیا ہوگا؟

مریضِ غم کو ابھی موت پر بھروسا ہے
مگر جو موت بھی کترا گئی تو کیا ہوگا؟

شبِ فراق تو آنکھوں میں کاٹنی ہے ہمیں
تمہاری یاد ہی تھکا گئی تو کیا ہوگا؟

13

اُن کی آنکھوں کا اِشارہ تو وہی ہے کہ جو تھا
میرے جینے کا بہانہ تو وہی ہے کہ جو تھا

دل جلے، جان جلے، روح جلے، کچھ بھی جلے
آنکھ کو ذوقِ نظارہ تو وہی ہے کہ جو تھا

شمع جس حال میں جلتی ہے، اُسے جلنے دو
ہم پتنگوں کا اِرادہ تو وہی ہے کہ جو تھا

حسن والوں نے کئی بار وطیرے بدلے
عشق والوں کا سلیقہ تو وہی ہے کہ جو تھا

اپنے رستے بھی جدا، اپنی منازِل بھی جدا
پھر بھی تیرا مِرا رشتہ تو وہی ہے کہ جو تھا

ہم کو جو کچھ بھی مِلا، اپنی ہی محنت سے مِلا
پھر بھی قسمت پہ بھروسا تو وہی ہے کہ جو تھا

آسمانوں پہ کئی بار لگائے ڈیرے
پھر بھی اس خاک سے ناتا تو وہی ہے کہ جو تھا

لوگ کہتے ہیں کہ یہ شخص بڑا کامِل ہے
اصل میں قیس دِوانہ تو وہی ہے کہ جو تھا

دَیر و حرم کی بِھیڑ جو دیکھی تو یوں لگا
دستِ ہوس کو دستِ دعا یاد آ گیا

کون و مکاں کی سَیر کو نکلے تھے قیسؔ جی
اچھا ہُوا کہ گھر کا پتہ یاد آ گیا

12

برسوں کی دوستی کا صِلہ یاد آ گیا
بیٹھے بٹھائے آج یہ کیا یاد آ گیا؟

وہ ذوقِ آرزو مِرا، وہ تیری بے رُخی
اس بے رُخی پہ اپنا گِلہ یاد آ گیا

دیکھا تجھے تو آنکھ مِری بھیگ سی گئی
کیا جانے تجھ کو دیکھ کے کیا یاد آ گیا

جب بھی کسی نے چھیڑی کسی بیوفا کی بات
کچھ بات ہے جو نام ترا یاد آ گیا

جب پاس آ کے موت بھی رستہ بدل گئی
''اک بیوفا کا عہدِ وفا یاد آ گیا''

پروانوں کا جو حال ہُوا، اُس کو دیکھ کر
ہم کو بھی اپنا اچھا بُرا یاد آ گیا

جَورِ بتاں کی خیر ہو، جس کے طُفیل سے
مُنکِر تھے جو اُنہیں بھی خدا یاد آ گیا

11

کسے سنائیں کہ ہے حرف ناتمام اپنا
جو تُو نہیں تو مکمل نہیں کلام اپنا

صراحی تیری، سبو تیرے، میکدہ تیرا
نگاہِ نرگسِ رعنا، کہاں ہے جام اپنا؟

کچھ اور دیر چلے رقصِ ساغر و مینا
کچھ اور دیر زمانے سے انتقام اپنا

دیارِ غیر میں اُٹھتی تھیں انگلیاں ہم پر
خود اپنے شہر میں بھی تذکرہ ہے عام اپنا

یہ کیا کہ بادِ صبا سر جھکائے آئی ہے؟
جبینِ ناز نے بھیجا نہ ہو سلام اپنا

مجھے زمیں سے فلک تک رہی تلاش اُس کی
وہ ڈھونڈتا رہا میری غزل میں نام اپنا

کِیا ہے جب سے مجھے قیسؔ اُس ستم گر نے
بنا ہے بزمِ سخن میں نیا مقام اپنا

10

کاش کہ حسن بھی تنہا ہوتا　　کیا ہوتا گر ایسا ہوتا؟
گیسو بکھرے بکھرے ہوتے　　چہرہ اُترا اُترا ہوتا
آنکھیں بھیگی بھیگی ہوتیں　　کاجل پھیلا پھیلا ہوتا
باتیں مبہم مبہم ہوتیں　　لہجہ اُکھڑا اُکھڑا ہوتا
یادوں کی بوچھاڑیں ہوتیں　　دل متواتر دھڑکا ہوتا
آنکھ میں آنسو ٹھہر نہ پاتے　　قطرہ قطرہ دریا ہوتا
قلب و جگر سہمے سے ہوتے　　مایوسی نے گھیرا ہوتا
آس کی کھیتی سوکھی ہوتی　　باغِ تمنا اجڑا ہوتا
سانسیں بوجھل بوجھل ہوتیں　　ہر پل ایک زمانہ ہوتا
آنکھوں آنکھوں رات گزرتی　　سوئے بِناں سویرا ہوتا
آئینے میں دیکھ کے خود کو　　اور کسی کا دھوکا ہوتا
سینے میں ارمان مچلتے　　دل رہ رہ کر اُچھلا ہوتا
ہر آواز پہ جان سکڑتی　　ہر آہٹ پر کھٹکا ہوتا
حال سے دل آزاری ہوتی　　مستقبل کا خطرہ ہوتا
اُلٹے سیدھے وہم گزرتے　　انہونی کا خدشہ ہوتا
کچھ اغیار سے رنجش ہوتی　　کچھ اپنوں سے شکوہ ہوتا
بستی بستی باتیں ہوتیں　　عالم عالم چرچا ہوتا
ایسے میں اُس سوختہ جاں سے　　کاش، کسی نے پوچھا ہوتا
ہم سے بچھڑنا کیا لازم تھا؟　　اس کا نتیجہ سمجھا ہوتا
ہم تو خیر، پرائے ٹھہرے　　اپنا ہی کچھ سوچا ہوتا
ہم سے تعلّق قائم رکھتے　　ہر دو جانب اچھا ہوتا

قیس کا ہاتھ اگر تھاما تھا
اُس کو تھامے رکھا ہوتا

ذبح کرتا ہے، تسلّی بھی دئے جاتا ہے
''وہی انداز ہے ظالم کا زمانے والا''

دشتِ وحشت میں نہ آندھی نہ بگولا کوئی
ٹوٹ کر بیٹھ گیا خاک اُڑانے والا

ذائقہ مَے کا بہت تلخ ہوا جاتا ہے
کاش، آ جائے کوئی زہر پلانے والا

موت پیاری ہے تو مر جا مگر اے قیسؔ حزیں!
کون آئے گا تری لاش اُٹھانے والا؟

OO

9

میرا یہ حال کہ ہوں جان سے جانے والا
پھر بھی یہ وہم کہ وہ آتا ہے آنے والا

دل کے ہوتے ہوئے ہنگامے ہی ہنگامے تھے
اب اِدھر کوئی نہیں شور مچانے والا

کب سے پھرتے ہیں یہاں کاسۂ امّید لئے
کوئی اب تک نہ مِلا آنکھ مِلانے والا

راہ کوئی بھی ہو، ہر موڑ پہ ہم بیٹھے ہیں
دیکھیں، جاتا ہے کدھر روٹھ کے جانے والا؟

بزمِ اغیار پہ چھایا ہے تبسّم اُس کا
کتنا خُوش خُلق ہے اپنوں کو رلانے والا

مجھ گرفتارِ ازل کے لئے اتنی زحمت؟
کتنا معصوم ہے یہ جال بچھانے والا

دل کے ماتم کا مزہ اور ذرا بڑھ جاتا
کوئی آ جاتا اگر سوگ منانے والا

رہِ عشق میں ہے حائل یہ ندی پہاڑ جیسی
میں اِدھر کا ہوں کنارا، وہ اُدھر کا ہے کنارا

یہ غزل بڑی کٹھن تھی، میاں قیسؔ، پھر بھی تُو نے
جو لیا تھا بوجھ سر پر، دل و جان سے اتارا

نہ وہ دل رُبا تکلّم، نہ وہ دل نِشیں اشارہ
کبھی کچھ سنیں کسی کی، کبھی کچھ کہیں خدارا

شبِ ہجر کیا بتائیں کہ جو حال تھا ہمارا
کبھی زندگی کو روئے، کبھی موت کو پکارا

تری بے توجّہی نے وہ جلا جلا کے مارا
ترے انتظار کا بھی نہ رہا کسی کو یارا

ترے حسن کا کرشمہ، مرے شوق کو ابھارا
مرے عشق کی کرامت، ترے روپ کو نکھارا

تری بے رخی مسلسل، مرا اضطراب پیہم
تجھے ہر جفا مبارک، مجھے ہر ستم گوارا

مری خامشی نے اُس سے کئی بار بات چھیڑی
"وہ نظر بھی کیا نظر ہے جو سمجھ نہ لے اشارہ"

وہی آنکھ جامِ شیریں، وہی زہر کا پیالہ
کبھی ڈھا گئی قیامت، کبھی دے گئی سہارا

7

سب لوگ پوچھتے ہیں، محبت میں کیا مِلا؟
میں کیا کہوں کہ یار مِلا یا خدا مِلا؟

راتوں کی نیند اُڑ گئی، دن کا سکوں گیا
کچھ ایسے بانکپن سے وہ کافِر ادا مِلا

کل تک سجی ہوئی تھی جہاں دل کی کائنات
واں آج ایک ٹوٹا ہوا آئنہ مِلا

اک شوقِ وصل تھا کہ رہا محوِ جستجو
اک دردِ ہجر تھا کہ مجھے بارہا مِلا

پھولوں کی انجمن سے کہ تاروں کی بزم سے
کیاجانے، کس مقام سے اُس کا پتہ مِلا

دیکھا اُسے تو روح پر مستی سی چھا گئی
محسوس یوں ہُوا کہ کوئی میکدہ مِلا

میری دعا یہی ہے کہ اس بت کی خیر ہو
جس کے طفیل سے مجھے میرا خدا مِلا

دیکھا جو اُس نے قیس کی ریشِ دراز کو
بولا، خدا کا شکر ہے، اک پارسا مِلا

6

چوری چھپکے جی بہلائے ایک زمانہ بیت گیا
اُس کو اپنے پاس بٹھائے ایک زمانہ بیت گیا

ہجر کی راتوں کی تاریکی اب تو مری ہمجولی ہے
آشاؤں کے دیپ جلائے ایک زمانہ بیت گیا

رازِ مشیعت کیسے جانیں؟ بھید جہاں کے کیا سمجھیں؟
اُس کافر سے آنکھ ملائے ایک زمانہ بیت گیا

وہ کیسا ہے؟ کیسی پھبن ہے؟ کیسی ادا ہے؟ مت پوچھو
اُس کوچے میں آئے جائے ایک زمانہ بیت گیا

اُس کا اک اک انگ تھا میرا، وہ بھی ایک زمانہ تھا
اب تو اُس کو ہاتھ لگائے ایک زمانہ بیت گیا

برندا بن کی باتیں چھوڑو، صحراؤں کا ذِکر کرو
اب تو ہم کو راس رچائے ایک زمانہ بیت گیا

میرے زخمی کندھوں سے اِمداد نہ مانگو ، رحم کرو
اِن پر اپنی لاش اٹھائے ایک زمانہ بیت گیا

قیسؔ کی باتیں سنتے جاؤ ، اِن میں معنی مت ڈھونڈو
اِس پاگل کو ہوش گنوائے ایک زمانہ بیت گیا

ہاتھ میں جام بھی تھا، سامنے محبوب بھی تھا
جب کھلی آنکھ تو یہ خواب بھی جھوٹا نکلا

عمر بھر جس کی خدائی مرا ایمان رہی
غور سے دیکھا تو اک خاک کا پُتلا نکلا

قیس سے پہلے بھی اِس کھیل کے ماہر تھے کئی
کوئی غالب ، کوئی مومن ، کوئی اِنشا نکلا

5

کوئی ہمراز نہ نکلا نہ شناسا نکلا
میں بھری بزم میں آ کر بھی اکیلا نکلا

وہی تپتا ہوا ماحول ، وہی گرد و غبار
اب کے ، اے دوست ، ترا شہر بھی صحرا نکلا

تجھ سے بھی دُور، زمانے کے تقاضوں سے بھی دُور
تیرا دیوانہ ، ذرا دیکھ ، کہاں جا نکلا؟

مدّتوں بعد کہیں جائے اماں پائی تھی
میں جہاں پہنچا ترا عشق وہیں آ نکلا

آج کچھ اور ہی انداز سے تُو یاد آیا
دل میں طوفان اٹھا ، آنکھ سے دریا نکلا

آسمانوں میں بھی اک ہُوک اٹھے گی جس سے
میرے سینے سے وہ نالہ ابھی نکلا ، نکلا

تھی جہاں شمع ، وہاں خاک ہے پروانے کی
کیا بھلا عشق جتانے کا نتیجہ نکلا؟

کبھی خُلوص و محبت، کبھی گُریز و فرار
بنا بنا کے مُقدّر مٹائے ہیں کیا کیا

کبھی تو دیکھ کہ میری تباہ حالی پر
حیات و موت نے آنسو بہائے ہیں کیا کیا

ہے آج خونِ تمنا تو کل امید کی موت
دلِ حزیں نے جنازے اٹھائے ہیں کیا کیا

نگاہِ قیسؔ، ترِی دسترس کو مان گئے
کہاں کہاں سے مضامیں چُرائے ہیں کیا کیا

4

نوائے دل نے کرشمے دِکھائے ہیں کیا کیا
مری اذاں نے نمازی جگائے ہیں کیا کیا

جمالِ یار تری آب و تاب کیا کہیے؟
نظر نظر کے قدم ڈگمگائے ہیں کیا کیا

ادائے ناز کو اندازِ دلبری سمجھے
فریب اہلِ محبت نے کھائے ہیں کیا کیا

زمیں زمیں نہ رہی اور فلک فلک نہ رہا
مقام و وقت بھی گردِش میں آئے ہیں کیا کیا

خِزاں کے جَور و سِتم کی تو کوئی بات نہیں
مگر بہار نے بھی گُل کِھلائے ہیں کیا کیا

کسے بتاؤں کہ تیرا خیال آتے ہی
حجاب میرے تصوّر کو آئے ہیں کیا کیا

وہ تیری شوخ نگاہی، وہ تیری خندہ لبی
دلِ غریب پہ چرکے لگائے ہیں کیا کیا

کبھی گھٹا، کبھی بجلی، کبھی شفق بن کر
زمیں کا شخص تھا پر آسماں پہ چھا ہی گیا

ہو ذکر اُس کا تو پڑھتے ہیں لوگ شعر مرے
مرا کلام زمانے کے کام آ ہی گیا

یہ قیسؔ جیسا بھی ہے، اس قدر بُرا تو نہیں
تمہاری بزم میں آیا، غزل سنا ہی گیا

3

کوئی امید نہ تھی، پھر بھی پاس آ ہی گیا
اگرچہ جھوٹا تھا وعدہ مگر نبھا ہی گیا

وہ التفات پہ آیا پر احتیاط کے ساتھ
نظر ملائی مگر حالِ دل چُھپا ہی گیا

دلِ تباہ کو زخموں سے مالا مال کیا
خزاں کا دَور تھا لیکن وہ گل کھلا ہی گیا

مرے قریب سے گزرا خیال کی صورت
سکُوتِ ناز مگر کچھ نہ کچھ سنا ہی گیا

نظر کی کاٹ کچھ ایسی کہ جان لے ہی گئی
بدن کا لوچ کچھ ایسا کہ دل ہلا ہی گیا

پھر آج ایک تبسّم پہ ہوش کھو بیٹھا
پھر آج عشق کو دیکھا، فریب کھا ہی گیا

مرا سکُون اُسے ناگوار تھا اتنا
مرے مزار پہ آیا، مجھے جگا ہی گیا

شگفتہ چہرہ، اور اس پر تپاں تپاں عارِض
کوئی انار چُھٹا ہے ، یقیں نہیں آتا

زہے نصیب کہ لو دے اٹھی ہے تاریکی
سکُوت بول پڑا ہے ، یقیں نہیں آتا

حریمِ ناز کو دیکھو کہ آج پہلی بار
درِ نیاز کُھلا ہے ، یقیں نہیں آتا

یہ قیس پچھلے دنوں چپ سی لگ گئی تھی جسے
پھر آج نغمہ سرا ہے ، یقیں نہیں آتا

دعا نے کام کِیا ہے ، یقیں نہیں آتا
وہ میرے پاس کھڑا ہے ، یقیں نہیں آتا

میں جس مقام پہ آ کر رُکا ہوں شام ڈھلے
وہیں پہ وہ بھی رُکا ہے ، یقیں نہیں آتا

وہ جس کی ایک جھلک کو ترس گئی تھی حیات
وہ آج جلوہ نما ہے ، یقیں نہیں آتا

وہ جس کی آنکھ میں دونوں جہاں دکھائی پڑیں
وہ مجھ کو دیکھ رہا ہے ، یقیں نہیں آتا

جسے صنم کبھی سمجھا، کبھی خدا جانا
وہ ایسا ہوش رُبا ہے ، یقیں نہیں آتا

جو سوز بن کے سمایا تھا میرے شعروں میں
وہ ساز بن کے اٹھا ہے ، یقیں نہیں آتا

زمیں سے تا بہ فلک گونجنے لگی ہے فضا
کچھ ایسا راگ چھڑا ہے ، یقیں نہیں آتا

کوئی آئے کہ مِرے گھر پہ ہو جنت کا گماں
کوئی آئے جو مجھے جینے پہ مجبور کرے

آج شائد وہی ساعت کہ مِرے کفر کا ایمان رہی ہے برسوں
بن کے مہمان چلی آئی ہے
اور اِس انجمنِ خلوت میں
میرا ہر تارِ نفس جھوم اٹھا ہے پھر سے
اور مِرے کان میں کہتا ہے کہ "اب،
عہدِ ماضی کے فسانے چھوڑو
حال کی بات کرو

یہ جو ساعت ہے، اِسے پاس بٹھا لو اپنے
اِس کی قربت کو غنیمت جانو
اِس کی ہر سانس کو اک عمر کا حاصل سمجھو
اِس کے اعزاز میں کچھ اور کرو یا نہ کرو
ایک چھوٹی سی غزل
ایک پیاری سی غزل کہہ ڈالو!"

غزل کا اِلقاء

دیدہ و دل کا تقاضا ہے، غزل ہو جائے
کوئی آیا ہے، غزل ہو جائے

گو کہ آیا ہے بڑی دیر کے بعد
گو کہ اس عرصۂ بے پایاں میں
چشمِ پُرآب چھلکتی ہی رہی
دلِ بےتاب تڑپتا ہی رہا
فکر و احساس ترستے ہی رہے
ایک ساعت کے لئے

ایسی ساعت کہ کوئی آئے مسیحا بن کر
اور مِری روح کی گرہیں کھولے
کوئی آئے کہ رگِ جاں میں نئی لہر چلے
اور مہک اُٹھے تخیّل کا دِماغ
کوئی آئے کہ مِرے دل کے سیہ خانے میں
آس کے دیپ جلیں
اور گھٹا ٹوپ اندھیرا چھٹ جائے

حرفِ تشکّر و انتساب

سچ پوچھیے تو اس کتاب کی اشاعت میرے بس کی بات نہیں تھی، البتہ کچھ دوستوں نے میری اس قدر حوصلہ افزائی کی اور مجھے اس قدر ترغیب دی کہ اس کتاب کو چھپنا ہی پڑا۔ اس ضمن میں سب سے پہلے تو میں اپنے عزیز امنگ بالی اور عزیزہ ثناء سیّد کا ممنون ہوں کہ انہوں نے اس کتاب کی اشاعت کے لئے مجھے آئے دن اُکسایا اور اس قدر اُکسایا کہ بالآخر میں نے یہی مناسب سمجھا کہ کسی صورت یہ کارِ خیر کر ہی ڈالوں۔ اب مسئلہ یہ تھا کہ میں اپنے کلام کو بغرضِ اشاعت کمپیوٹر پر چڑھاؤں اور وہ بھی اُردو اور ہندی دونوں میں۔ اس کام کو سرانجام دینے میں عزیزہ انمول پیش پیش رہیں۔ انہوں نے میرے کلام کو اُردو کا جامہ پہنایا اور عزیز شعیب تنویر نے اُسے ایڈٹ کیا۔ کلام کو ہندی میں ڈھالنے کا کام جناب پی۔ کے۔ سوامی نے اپنے سر لیا اور ایم۔ آر۔ پبلیکیشنز کی وساطت سے اسے بخوبی سرانجام دیا۔ علاوہ ازیں اُنہوں نے اس کتاب کی ترتیب و تشکیل کے سبھی مراحل میں میری رہنمائی کی اور اسے پایۂ تکمیل تک پہنچانے میں نمایاں حصہ لیا۔ میں اِن سبھی دوستوں کے احسانات کا مقروض ہوں اور تہہ دل سے اِن کا شکریہ ادا کرتا ہوں۔

یہاں مجھے یہ بتاتے ہوئے بے حد خوشی ہو رہی ہے کہ جناب ولی عالم شاہین صاحب، جو اُردو ادب میں ایک مسلّمہ مقام رکھتے ہیں اور کئی کتابوں کے مصنف ہیں، میری اس کتاب پر اپنے تاثرات رقم کرنے پر بخوشی آمادہ ہوئے اور 'صحرا صحرا' کو اپنے پیش لفظ 'باغبانیٔ صحرا' سے نوازا۔ ایک شاعر کے لئے اس سے بڑا اعزاز اور کیا ہو سکتا ہے کہ آپ جیسی ممتاز ہستی اُس کے کلام پر اپنی ناقدانہ رائے کا اظہار کرے۔ میں شاہین صاحب کی اس نوازش کے لیے اپنے دل کی گہرائیوں سے اُن کا ممنون ہوں۔

اس کام کے سلسلے میں مجھے ایک مہینے کے لئے دہلی رکنا پڑا اور میں نے حسبِ معمول اپنے محترم بھائی سنتوش کمار صاحب اور اُن کی بیگم پُشپ صاحبہ کے یہاں قیام کیا۔ انہوں نے مجھے اپنی بے پناہ خاطر تواضع سے نوازا اور اپنے مفید مشوروں سے بھی سرفراز کیا، جس کے لئے میں اُن کا بے حد شکر گزار ہوں۔ آخر میں، مجھے خود اپنی بیگم راج کماری صاحبہ کا شکریہ ادا کرنا ہے جنہوں نے ہمہ وقت میری شاعرانہ کاوشوں میں دلچسپی لی اور انہیں سراہا بھی۔ اب جبکہ میری برسوں کی محنت ایک کتاب کی شکل میں رونما ہو رہی ہے میں اُن کے صبر و تحمل کی داد دیتا ہوا اس کتاب کو، مندرجہ ذیل شعر کے حوالے سے، انہیں کے نام منسوب کرتا ہوں:

تو سب سے جدا، سب سے الگ، سب سے انوکھا
لگتا ہے مجھے میرؔ کے شعروں کی طرح تو!

راج کمار قیس

اُردو شاعری، اور خاص کر اُردو غزل، کوئی محدود ذریعۂ بیان تو ہے نہیں بلکہ یوں کہیئے کہ اس میں بے پناہ وسعتیں ہیں اور بے انتہا تجربوں کے امکانات ہیں۔ گویا شاعر کی طبع جس بھی طرزِ فکر کی حامل ہو اور جس بھی اندازِ بیان کی شائق ہو اُسے اپنا سکتی ہے۔ میں چونکہ فراقؔ گورکھپوری کے طرزِ تفکّر اور داغؔ دہلوی کے طرزِ بیان سے بطورِ خاص متاثر ہوا ہوں اس لئے میرا رجوع زیادہ تر رومانی شاعری کی جانب رہا ہے جیسا کہ میرے اس مقطع سے واضح ہے:

خونِ جگر سے بنتی نہیں قیسؔ کی غزل
تھوڑا سا اِس میں رنگِ حنا بھی ملاؤ تو

میں نے نظمیں کم کہی ہیں اور غزلیں زیادہ۔ ہاں کبھی کبھار قطعات بھی ہو گئے ہیں اور مجبوراً وہ بھی رومانی انداز کے ہیں، اُن قطعات میں سے کچھ اس مجموعے میں بھی شامل ہیں۔ اب میرے ان معروضات کی ادبی حیثیت کیا ہے یہ تو آپ قارئین ہی سمجھ سکتے ہیں۔

نیاز مند
راج کمار قیسؔ
سین ڈی ایگو، کیلیفورنیا

اب ایسے ماحول میں رہتے ہوئے یہ ایک فطری بات تھی کہ میں بھی کسی حد تک ایسی ہی راہ اختیار کرتا مگر ایسا نہ ہو سکا کیونکہ میرے مستقبل کو مدِ نظر رکھتے ہوئے میرے بڑے بوڑھوں نے یہی مناسب سمجھا کہ میں شعروشاعری سے باز رہوں اور سائنس کی طرف رجوع کروں۔

بڑوں کے حکم کی تعمیل کرتے ہوئے میں سائنس کی راہ پر چل دیا اور چند برسوں کی محنت کے بعد 1957 میں دہلی یونیورسٹی سے علمِ طبیعات میں پی۔ایچ۔ڈی کی ڈگری حاصل کی اور وہیں پہلے لیکچرر رہا اور بعد میں ریڈر ہوگیا۔اپنے چنیدہ مضمون کی تعلیم وتدریس اور تحقیق وتجسّس کے تقاضے جو میرے سر آپڑے تھے اُنہیں تو پورا کرنا ہی تھا مگر اُن کے ساتھ ساتھ جو لگن مجھے اُردو ادب کے ساتھ بچپن ہی سے ہوگئی تھی اُسے نبھانا بھی میرے لئے لازم تھا۔اس لئے 64-1954 کے دوران جب میں دہلی یونیورسٹی سے وابستہ تھا تو میں باقاعدہ اُردو زبان وادب کا مطالعہ کرتا رہا اور اردو کے مشاعرے جہاں کہیں بھی ہوتے اُن میں شریک ہوتا رہا۔بعد میں جب میں کناڈا چلا آیا تو وہ مشاعرے تو میری زد میں نہ رہے،البتہ اُردو ادب کا مطالعہ جاری وساری رہا۔کبھی کبھار شعر گوئی کی خلش ہوتی تو ایک آدھ غزل کہہ لیتا ورنہ زیادہ تر اپنے کام ہی سے کام رہا۔بہر حال 79-1976 کے مختصر سے عرصے میں مجھ سے کوئی پندرہ بیس غزلیں ہوئیں جن میں سے سات آٹھ دہلی کے ممتاز ماہنامہ 'بیسویں صدی' میں چھپیں۔ان میں سے بیشتر غزلیں اربابِ علم وفن کو قبول خاطر ہوئیں اور میری حوصلہ افزائی کا باعث بنیں۔میری پہلی غزل کا ایک شعر تھا:

کبھی تمنا جہان بھر کی، کبھی ہر اک شے سے بے نیازی
کبھی توجہ کی جستجو ہے، کبھی تغافل کو ڈھونڈتا ہوں

اُس مختصر سے زمانے کے بعد مدّتیں گزر گئیں مگر میں اپنے کام کاج میں جُٹا رہا اور شعروشاعری کی طرف مزید توجہ نہ دے پایا۔البتہ جب یونیورسٹی آف واٹرلو، کناڈا کی پروفیسر شپ سے ریٹائر ہونے کا وقت آپہنچا تو سوچا کہ خیر سے اب تو اچھی خاصی فرصت ہونے کو ہے تو پھر کیوں نہ گیسوئے غزل کے ساتھ جی کھول کر کھیلا جائے،اس طرح وقت بھی خوش طبعی کے ساتھ کٹ جائے گا اور لگے ہاتھوں درِدِرُوں کو بھی آہ وزاری کا موقع مل سکے گا۔نتیجہ یہ ہوا کہ 1993 میں مَیں نے ازسرِ نو طبع آزمائی شروع کی اور دیکھتے دیکھتے یہ طبع آزمائی میری زندگی کا حاصل وحصول بن گئی۔یہاں تک کہ آج میری شاعری کا پہلا مجموعہ بعنوان 'صحرا صحرا' آپ کے ہاتھ میں ہے اور آپ کی گراں قدر رائے کا منتظر ہے۔

کچھ اپنے بارے میں

وہ دن بھی تھے کہ زمانے میں دھوم تھی اپنی
یہ دن بھی ہیں کہ کوئی ہم کو کوستا بھی نہیں

میں، 1933 میں، پنجاب کے مشہور و معروف شہر امرتسر کے گرد و نواح میں پیدا ہوا اور اپنی ابتدائی تعلیم وہیں حاصل کی۔ میرا ذہن تو روزِ اوّل ہی سے علمِ ریاضی کی جانب مائل تھا مگر گھر کا ماحول اُردو ادب میں اس قدر رچا ہوا تھا کہ اُس کے اثرات سے بچ نکلنا آسان نہیں تھا۔ میرے بڑے بھائی پرشوتم لال ضیاء لاہور کے ایک کالج میں اُردو فارسی کے پروفیسر تھے اور اُنکی بدولت کئی عالم فاضل ہمارے گھر آیا جایا کرتے تھے۔ ضیاء صاحب شاعر بھی تھے اور نقاد بھی، اس لئے اُن کی اور اُن کے دوستوں کی باتیں سنتے سنتے اور گھر میں موجود کتابوں اور رسالوں کی ورق گردانی کرتے کرتے مجھے بچپن ہی میں اردو زبان وادب سے اچھی خاصی آگہی ہوگئی تھی، گو کہ شعر گوئی ابھی کوسوں دور تھی۔ اگر کبھی کبھار شعر کہنے کا خیال آتا بھی تو ذہن میں ضیاء صاحب کا یہ شعر گھومنے لگتا:

اصل میں وہ شدّتِ دردِ درُوں تھی، اے ضیاء
لوگ کہنے کو جسے زورِ قلم کہتے رہے

البتہ اُس اوائل عمری میں نہ تو مجھے دردِ درُوں کی شدّت محسوس ہوئی اور نہ ہی میرے قلم نے زور پکڑا۔

ضیاء صاحب کے بعد میرے ایک اور بھائی پرکاش ناتھ پرویز بھی اردو شاعری کے گرویدہ ہوکر رہ گئے تھے اور شعر گوئی میں خاصہ کمال رکھتے تھے۔ اُن کا تفکّر اور اُن کا طرزِ بیان دونوں ہی لائقِ صد تحسین تھے۔ فرماتے ہیں کہ

ہو اگر اجازت تو ساتھ ہو چلیں ہم بھی
زندگی کے صحرا میں جاؤ گے کہاں تنہا؟

محبوب کی سرشاری، ہجر و فراق کا درد، اور کہیں کہیں مجاز سے حقیقت کی طرف گریز ('بابر بہ عیش کوش کہ عالم دوبارہ نیست' اور پھر 'کتھے مہر علی کتھے تیری ثنا، ایہہ گستاخ انکھیاں کتھے جا لڑیاں') قیس کی شاعری میں یہ تمام رنگ بکھرے پڑے ہیں۔ اردو غزل کے حوالے سے یہ ایک جانا پہچانا منظرنامہ ہے۔ چند مثالوں سے اس بات کی وضاحت میں سہولت رہے گی:

پھر مرے سامنے اک چاند سا چہرہ چمکے — پھر مری آنکھ اُسے دیکھ کے حیراں ہو جائے

چاند چمکے گا رات بھر، لیکن — چاندنی رات پھر کہاں ہوگی

کبھی میکدے کے در پر کبھی تیری رہگزر میں — مری رات کٹ گئی ہے جہاں مل گیا ٹھکانہ

رویّے پرانے، بہانے نئے — کھلا دوستی کا بھرم، دوستو

تم چلے جاؤ گے ہو جائیں گی سانسیں بوجھل — کون جھیلے گا یہ آزار، ابھی رک جاؤ

شام ہو جائے گی بے حال غمِ فرقت میں — رات پڑ جائے گی بیمار، ابھی رک جاؤ

میں ایک اشک تھا لیکن کسی کی پلکوں نے — جہان بھر کی نظر سے چھپا لیا مجھ کو

کسی خوشی نے مجھے آج تک نہ پہچانا — تمہارے غم نے گلے سے لگا لیا مجھ کو

نہ پوچھیے کہ خزانے لٹائے ہیں کیا کیا — یہ دیکھیے کہ مرے پاس اب بچا کیا ہے

تاکنا جھانکنا ہر کسی کو — قیس میں تھی یہی اک برائی

موجود ہے مگر وہی عالم گریز کا — مستور ہے مگر وہی شانِ ظہور ہے

قیس نے خاصی تعداد میں قطعات بھی لکھے ہیں۔ اپنی غزل میں انہوں نے ہیئت اور اسلوب میں کسی قسم کے انحراف کو روا نہیں رکھا۔ لیکن قطعات میں انہوں نے ایک قابلِ ذکر تجربہ کیا ہے۔ مثلاً چار مصرعوں والے چھ قطعات میں ہر ایک کے تیسرے مصرعے میں ایک ہی مصرعے ('تو پرائی سہی مگر پھر بھی') کی تکرار ہے۔ بریں بنا ان قطعات میں ایک موضوعاتی ہم آہنگی اور رشتہ قائم ہو گیا ہے۔

قیس کی شاعری جذبات کی سرشاری کا مرقع ہے جس کے حدودِ اربعہ میں رہ کر ہی اس کے اسرار و رموز کھلتے ہیں۔

ولی عالم شاہین

آٹوا، کینیڈا

۱۴ر نومبر ۲۰۰۵ء

باغبانِ صحرا

ڈاکٹر راج کمار قیس شعر نہ بھی کہتے تو بھی شاعری انہیں مار رکھتی۔ نسیمِ صبح لونگ کے باغوں سے خوشبو اڑا کر لائے یا نہ لائے، قیس اپنے اندر کے رجنی گندھا کی بہار میں کسی اُمِ رباب کے قدموں کی چاپ سن لیتے ہیں۔ شعر گوئی ان کی ضرورت نہیں، ان کا مزاج ہے۔

قیس اپنی ذات کے صحرائے اعظم کے صحرانورد ہیں۔ وہ اپنے لختِ جگر سے رگِ ہر خار کو شاخِ گل کی شکل دیتے ہوئے باغبانِ صحرا میں مصروفِ کار رہنے کا ڈھنگ جانتے ہیں۔ قیس کا جس خانوادے سے تعلق ہے باغبانِ صحرا سے اُس کا رشتہ محکم ہے۔ ان کے دو بھائی پرشوتم لال ضیا اور پرکاش ناتھ پرویز اردو کے معروف شاعروں میں تھے۔ گھر میں ادب و شعر کا چرچا رہتا تھا۔ اردو فارسی کی عجمی روایات کے زیرِ اثر شاعروں اور ادیبوں کے ساتھ اٹھنا بیٹھنا اور تہذیبِ سخن کی پرورش کرنا پڑھے لکھے گھرانوں کا شعارِ خاص ہوتا تھا۔ قیس اسی تہذیب کے پروردہ اور دل دادہ ہیں۔

قیس (ڈاکٹر راج کمار پتھریا کے نام سے اور ایک ماہرِ طبیعات کی حیثیت سے) سائنس کی دنیا میں اہم مقام کے مالک ہیں۔ البرٹ آئن سٹائن کے نظریہء اضافت جیسے مشکل موضوع پر ان کی ایک کتاب بہت عرصہ پہلے چھپی تھی جسے ایک مشہور بین الاقوامی ناشر نے حال ہی میں دوبارہ اجرا کیا ہے۔ ان کے نامور شاگردوں اور جاننے ماننے والوں کی کمی نہیں۔ سائنس اور ادب میں کیا رشتہ ہے یہ موضوع ایک الگ مضمون کا متقاضی ہے لیکن ایک طائرانہ نظر بھی ڈالئے تو عمر خیام، شانتی سروپ بھٹناگر، اے پی جے عبدالکلام اور ایم جی وسّن جی سے لے کر راج کمار قیس تک شاہراہ کے دونوں کناروں پر چراغاں ہی چراغاں ہے۔ ''صحرا صحرا'' کے اوراق میں ایک سائنس دان شاعر کے دل کی دھڑکنوں کا والہانہ پن ہے۔

قیس کھلے دل سے اعتراف کرتے ہیں کہ وہ فراق گورکھپوری سے بطورِ خاص متاثر ہوئے ہیں۔ فراق نے بیسویں صدی میں اردو غزل کو ایک نیا موڑ دے کر نئے امکانات کی نشاندہی کی جس کے سبب اردو ادب کی تاریخ میں ان کی شناخت واضح اور مکمل ہے۔ لیکن میں نے قیس کی غزلوں کا جس حد تک مطالعہ کیا ہے اس کی روشنی میں ان کی شاعری مجھے داغ دہلوی، اختر شیرانی، عبدالحمید عدم اور نریش کمار شاد کے سلسلے کی توسیع نظر آتی ہے۔ راز و نیاز کے معاملات، عشوہ و ادا کی حکائتیں، وصلِ

70-	پھولوں نے، ستاروں نے، شفق نے نہ تجھی نے	118
71-	تجھ سے روٹھے تو کئی روز نہ خود سے بولے	120
72-	سنتے ہیں کہ صحرا میں پھر بادِ بہار آئی	122
73-	یہ کیا ہُوا کہ مہکنے لگی ہے تنہائی؟	123
74-	بن بن کے بگڑتی رہی تقدیر ہماری	124
75-	وہ شب جو تیرے خیال و خُمار میں گزری	126
76-	دیکھ ترے دیوانوں کی اب جان پہ کیا بن آئی ہے؟	128
77-	فکر کی توفیق ہے نہ طاقتِ گفتار ہے	130
78-	ایک مدّت سے تجھے دل میں بٹھا رکھا ہے	132
79-	دل میں عجب سا کیف، عجب سا سُرور ہے	133
80-	مِرا کلام جسے آئنہ دکھاتا ہے	134
81-	خود کو روکا بہت، پھر بھی ہم آ گئے	136
82-	اُن کے انداز دل کو سُہانے لگے	137
83-	آنکھوں میں بس گئے، مِرے دل میں سما گئے	138
84-	زندگی راہِ الفت پہ چلتی رہی	139
85-	میرے لب پر تری بات آئی	140
86-	کبھی رُخ سے، کبھی رُخساروں سے	141
87-	جھجکتے کیوں ہو، بتاؤ کہ فیصلہ کیا ہے؟	142
88-	اُن کو زیبائی بھی پھبتی ہے، خود آرائی بھی	143
89-	آج کی رات پھر کہاں ہوگی؟	144
90-	قطعات	146

45۔	دن بھر تو مہکتا رہا پھولوں کی طرح تُو	83
46۔	ہٹا لو یہ دَیر و حرم، دوستو	85
47۔	ترے حسن نے ہے بخشا یہ مزاجِ عاشقانہ	86
48۔	گزرتے جا رہے ہیں ماہ و سال آہستہ آہستہ	87
49۔	بات ہونٹوں پہ چلی آئی ہے	88
50۔	دل و نظر میں اگر رشکِ حور ہے کوئی	89
51۔	کسی کو لُوٹ گئیں دلربائیاں تیری	90
52۔	پاس آؤ تو کوئی بات بنے	91
53۔	جفا جو جی کو جلائے تو اُس کو کیا کہئے	92
54۔	مجھ سے رغبت ہے تو پھر مجھ سے چھپاتا کیا ہے	94
55۔	تم کو سینے سے لگا لوں گا، تم آؤ تو سہی	96
56۔	نہ جانے، کب سے چالیں چل رہی تھی دل لگی تیری	98
57۔	میرے جذبات کو سہلاؤ کہ کچھ رات کٹے	100
58۔	دینے لگے ہیں لوریاں دیوار و در مجھے	102
59۔	اب تجھ سے کسی بات کا شکوہ بھی نہیں ہے	104
60۔	زندگی بھر کی مُدارات کا ساماں ہو جائے	105
61۔	اب دل بھی اپنے بھید ہمیں سے چُھپائے ہے	107
62۔	اِظہارِ تمنّا نہ کیا ہے نہ کریں گے	108
63۔	طبع ہر حال میں مضموں کی روانی مانگے	109
64۔	بظاہر پھولتا پھلتا شجر ہے	111
65۔	ستم ایجاد کو مانُوسِ سوز و ساز کیا کرتے؟	112
66۔	کس نے یہ جلوہ نمائی کی ہے؟	113
67۔	پھر کسی بت سے لَو لگائیں گے	114
68۔	پھر مجھے بزم میں لے آئے ہیں، دیکھے کوئی	115
69۔	سزا ہو یا جزا ہو، کون جانے	117

20۔	کس سلیقے سے شبِ ہجراں سجا لیتے ہیں ہم	43
21۔	گھبرا گئے ہیں وُسعتِ کون و مکاں سے ہم	45
22۔	حصارِ ذات سے نکلوں تو تجھ سے بات کروں	47
23۔	نہ تفکّر ہے، نہ احساس، نہ توفیقِ سخن	49
24۔	اب وہ پہلے سے ماہ و سال نہیں	51
25۔	نہ جُز و کُل کا مُعامِلہ ہوں، نہ آفرینش کا مدّعا ہوں	52
26۔	جَور و ستم کے مارے ہُوؤں کی زباں ہوں میں	53
27۔	جب کبھی تلخیِ حالات سے گھبراتا ہوں	55
28۔	زمیں پہ سبزہ و گل آنکھ مَل کے دیکھتے ہیں	56
29۔	کس درجہ دل آویز تھی، اے دوست، تری شان	58
30۔	گلاب آنکھیں، شراب آنکھیں	60
31۔	اُس شوخ سے خِطاب کروں تو غزل کہوں	61
32۔	وہ جو نظریں جھکائے ہوئے ہیں	63
33۔	آئے ہو تو بیٹھو، نہ کرو جانے کی باتیں	64
34۔	خود اپنا حال کبھی آپ سے کہا بھی نہیں	66
35۔	کیا کہیں، وہ ہمیں کس وقت کہاں ملتے ہیں؟	68
36۔	عشق میں بے حجاب ہو جائیں	70
37۔	ہمارے دل میں تھی تو تھی تری ہی آرزو برسوں	71
38۔	ایسا بھی ہُوا ہے راتوں کو جب اٹھ اٹھ کر ہم روئے ہیں	73
39۔	تیری مانیں تو پارسا ہو جائیں	74
40۔	جس سے غزل مُراد ہے، اُس کو بُلاؤ تو	75
41۔	تھام لو دل مِرا، سینے سے لگا لو مجھ کو	77
42۔	دیدہ و دل کو ہے اِصرار، ابھی رک جاؤ	78
43۔	سنبھلے سے اِشارات ہوں، سنبھلی سی نظر ہو	80
44۔	نظر کا دے کے سہارا بچا لیا مجھ کو	82

فہرست

	باغبانِ صحرا .... ولی عالم شاہین	7
	کچھ اپنے بارے میں .... راج کمار قیس	9
	حرفِ تشکر و انتساب	12
1۔	غزل کا اِلقاء	13
2۔	دعا نے کام کِیا ہے، یقیں نہیں آتا	15
3۔	کوئی امید نہ تھی، پھر بھی پاس آ ہی گیا	17
4۔	نوائے دل نے کرشمے دِکھائے ہیں کیا کیا	19
5۔	کوئی ہمراز نہ نکلا نہ شناسا نکلا	21
6۔	چوری چھپکے جی بہلائے ایک زمانہ بیت گیا	23
7۔	سب لوگ پوچھتے ہیں، محبت میں کیا مِلا؟	24
8۔	نہ وہ دل رُبا تکلّم، نہ وہ دل نشیں اشارہ	25
9۔	میرا یہ حال کہ ہوں جان سے جانے والا	27
10۔	کاش کہ حسن بھی تنہا ہوتا	29
11۔	کسے سنائیں کہ ہے حرف ناتمام اپنا	30
12۔	برسوں کی دوستی کا صِلہ یاد آ گیا	31
13۔	اُن کی آنکھوں کا اِشارہ تو وہی ہے کہ جو تھا	33
14۔	کلی اِمید کی مرجھا گئی تو کیا ہوگا؟	34
15۔	دل کسی مہ جبیں پر فدا ہو گیا	36
16۔	اشتیاقِ خُم و سبُو نہ گیا	37
17۔	تری آنکھ اٹھی تو میں رک گیا، ترے لب ہلے تو میں کھو گیا	38
18۔	پہلے تو میری جرأتِ تدبیر دیکھنا	40
19۔	میری آنکھوں میں سمایا ہے تو بس ایک ہی شخص	41

©راج کمار قیس 2005-06

نام کتاب: صحرا صحرا
مصنف : راج کمار قیس
پتہ : 6695 ایڈمنٹن ایونیو، سین ڈی ایگو، کیلیفورنیا-92122، یو۔ایس۔اے

Sehraa Sehraa

By Raj Kumar Qais

Address: 6695 Edmonton Avenue
San Diego, California 92122
U.S.A.

Phone: (858) 638-1702

E-mail: rajkumarqais@hotmail.com

This reprint by professor toofaanii publishers

صحرا صحرا

راج کمار قیس